कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड

सागर रत्न

सितंबर 2024

सीएसएल को इनमैक्स एसएमएम इंडिया सम्मेलन के दौरान समुद्री उत्कृष्टता पुरस्कार से सम्मानित किया गया, जिसमें सतत समाधानों के प्रति कंपनी की प्रतिबद्धता और पोत निर्माण में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन के लिए **'वर्ष के पोत निर्माण कंपनी'** श्रेणी के तहत सम्मानित किया गया।

केरल प्रबंधन नेतृत्व पुरस्कार स्वीकार करते हुए
श्री मधु एस नायर, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड ।
यह पुरस्कार उनके अनुकरणीय नेतृत्व और प्रबंधन क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रदान किया गया है।

कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड
भारत सरकार का उद्यम
(एक मिनिरत्न अनुसूची 'ए' कंपनी)
पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय
पेरुमानूर पी.ओ., कोच्ची - 15

16 वाँ अंक

संपादक मंडल

संरक्षक
श्री मधु एस नायर
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संपादक
श्री सुबाष ए के
महाप्रबंधक
(मानव संसाधन एवं प्रशिक्षण)

संपादक सदस्य
श्रीमती सरिता जी
प्रबंधक (राजभाषा)

श्रीमती लिजा जी एस
सहायक प्रशासनिक अधिकारी
(हिंदी-वरिष्ठ ग्रेड)

श्रीमती आतिरा आर एस
हिंदी टंकक

सागर रत्न हिंदी गृह पत्रिका

सितंबर 2024

अनुक्रमणिका

1.	अध्यक्षीय संदेश	2
2.	संपादक की कलम से	3
3.	राजभाषा समाचार	4
4.	नौवहन शब्दावली	25
5.	कंपनी खबरें	26
6.	साहित्यिक रचनाएं	33
7.	बोलचाल की हिंदी	68
8.	चित्र रचनाएँ	70

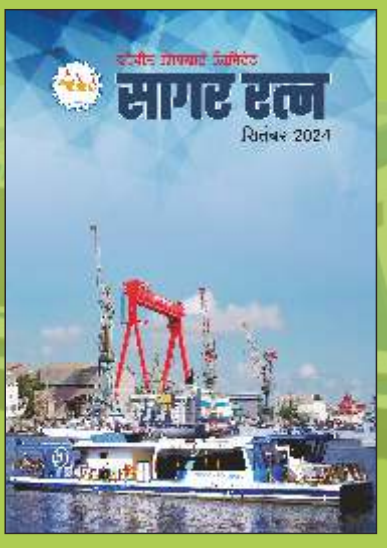

सागर रत्न हिंदी गृह पत्रिका

आवरण पृष्ठ:
भारत की पहली स्वदेशी हाइड्रोजन ईंधन सेल फेरी ।

अध्यक्षीय संदेश

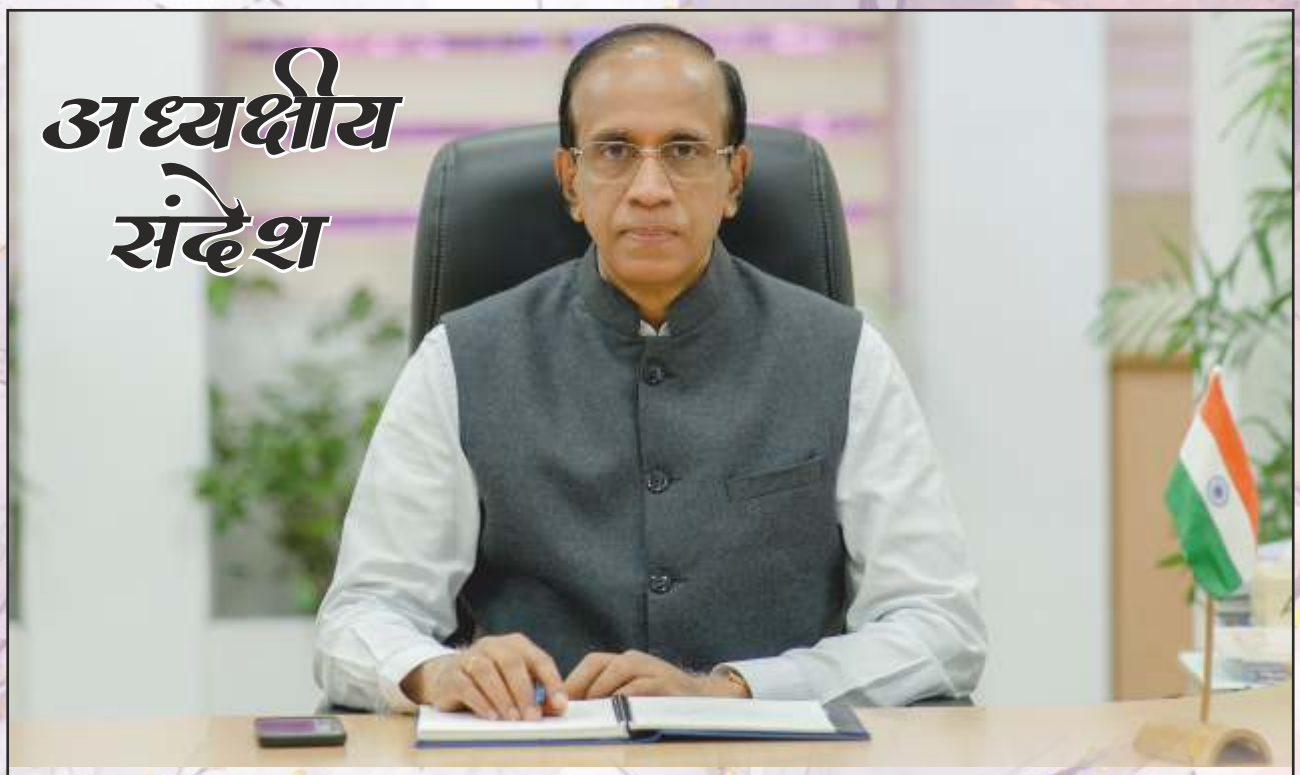

सागर रत्न के इस नवीनतम अंक के ज़रिए आपसे जुडते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रहा है। अपनी उत्कृष्ट सेवाओं, उन्नत तकनीकी कौशल और उच्च गुणवत्ता मानकों के साथ, कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक मज़बूत पहचान बनाई है । पर्यावरणीय स्थिरता और सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति कंपनी की वचनबद्धता इसे एक जिम्मेदार और भविष्य उन्मुख संगठन बनाती है । यह पत्रिका भी भारत सरकार के राजभाषा नीति के अनुपालन के प्रति कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड की प्रतिबद्धता को दर्शाती है ।

आज वैश्वीकरण के दौर में हिंदी विश्व स्तर पर एक प्रभावशाली भाषा बनकर उभरी है। कोचीन शिपयार्ड भी अपने कार्य क्षेत्रों में अधिक से अधिक राजभाषा हिंदी का प्रयोग करके, सही मायने में इसको सम्मान दे रहा है। अब पुराने प्रथाओं को छोडकर नवोन्मेषी उपायों एवं प्रौद्योगिकी के ज़रिए राजभाषा हिंदी को विकसित करके इसे सही ओहदे पर प्रतिष्ठित किया जा रहा है । हरेक कर्मचारी का नैतिक दायित्व है कि इस विकास की ओर अपनी भूमिका सही मायने में निभाएं ।

हमारी पत्रिका सागर रत्न का मुख्य उद्देश्य हमेशा से ही उच्च स्तरीय साहित्य और विचारों का प्रसार करना रहा है, साथ ही कंपनी की उपलब्धियों तथा राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी विशिष्ट कार्यों को इस पत्रिका के ज़रिए समाज के सामने उजागर करना भी है और इस अंक में भी हमने इस परंपरा को बनाए रखने का पूरा प्रयास किया है । सागर रत्न के प्रत्येक अंक हमारे समर्पित लेखकों और संपादकीय टीम की मेहनत का परिणाम है । उनकी निष्ठा और रचनात्मकता ने सागर रत्न को एक विशिष्ट पहचान दिलाई है । यह उनका अथक प्रयास है कि हम हर बार आपके सामने कुछ नया, प्रेरणादायक और विचारशील प्रस्तुत कर पाते हैं । मैं उनके सभी प्रयासों की सराहना करता हूँ ।

कोचीन शिपयार्ड को राजभाषा हिंदी के विकास एवं प्रचार-प्रसार हेतु कई वर्षों से राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय, कोच्ची नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति एवं गृह मंत्रालय, भारत सरकार से भी राजभाषा पुरस्कारों से सम्मानित किया जा रहा है । मैं, इस अवसर पर पूरे हिंदी टीम को साथ ही सभी वरिष्ठ अधिकारीगण एवं कर्मचारियों को बधाई देता हूँ, जिन्होंने इसके लिए अपनी एहम भूमिका निभाई है ।

मुझे पूरा विश्वास है कि हमारी यह पत्रिका न केवल आपके मनोरंजन का साधन बनेंगी, बल्कि पाठकों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने में भी सहायक होगी।

शुभकामनाओं के साथ .....

मधु एस नायर

मधु एस नायर

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संपादक की कलम से.....

प्रिय पाठकगण,

सप्रेम नमस्कार !

अपार हर्ष हो रहा है कि हम हमारे प्रिय पाठकों के समक्ष सागर रत्न का यह नया अंक प्रस्तुत कर रहे हैं । जीवन के विविध रंगों को संजोए हुए, हम आपके समक्ष उन कहानियों, कविताओं, और लेखों का संग्रह प्रस्तुत कर रहे हैं जो न केवल आपकी ज्ञानवृद्धि करेंगे, बल्कि आपके दिलों को भी छू जाएगा। हमारी टीम ने बड़ी मेहनत और लगन से ऐसे लेखों का चयन किया है जो आपको मनोरंजन के साथ-साथ विचारशील भी बनाएंगी जो आपके भीतर छिपी प्रेरणा को जागृत करेगा, साथ ही यह पत्रिका कंपनी की विशेष गतिविधियों को प्रेषक के सामने पेश करने का एक मंच भी है।

हमें गर्व है कि सागर रत्न सिर्फ एक पत्रिका नहीं, बल्कि एक ऐसा मंच है जहां हम सब तरह के विचारों, संस्कृतियों और भावनाओं का स्वागत करते हैं । हम आपके सुझावों और विचारों का सदैव स्वागत करते हैं। आपकी प्रतिक्रियाएँ हमें लगातार बेहतर बनने और आपके साथ इस यात्रा को और भी रोचक बनाने की प्रेरणा देती हैं। कृपया हमें अपने अनुभवों और सुझावों से अवगत कराएं ताकि हम आपकी अपेक्षाओं पर खरा उतर सकें।

हमें विश्वास है कि सागर रत्न का यह अंक सही मायने में दिल की गहराई में जाकर आपके मन में एक अमिट छाप छोड़ देगा ।

सुबाष ए के

महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं प्रशिक्षण)

हिंदी को राजभाषा घोषित-75 वर्षों का जश्न:

भारतीय भाषाई धरोहर का एक महत्वपूर्ण कदम

भारत, एक सांस्कृतिक विविधता और भाषाई अनेकता से भरपूर राष्ट्र, इस वर्ष एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल कर रहा है - हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्राप्त 75 वर्ष पूरा होने का। यह ऐतिहासिक निर्णय, लाखों भारतीयों की आशाओं और विविधता में एकता के अंतर्निहित महत्व को दर्शाता है और भारतीय पहचान और शासन को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

स्वतंत्रता के बाद, संविधान सभा ने एक सम्मिलित भाषा की आवश्यकता को महसूस किया, जो देश के विभिन्न क्षेत्रों में शासन और संवाद को सुविधाजनक बनाने में सहायक हो सके। इस प्रकार, हिंदी को दिनांक 14 सितंबर 1949 को अंग्रेज़ी के साथ भारतीय संघ की राजभाषा का दर्जा प्राप्त हुआ, जो भारतीय भाषाई इतिहास में एक महत्वपूर्ण पल को चिन्हित करता है।

राजभाषा हिंदी के विकास केलिए कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं को ध्यान में रखना अत्यंत आवश्यक है :

- नीतियों का पालन
- प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रम
- अनुवाद सेवाएं
- बहुभाषी पर्यावरण का समर्थन
- नई प्रौद्योगिकी का प्रयोग
- निगरानी और मूल्यांकन
- दस्तावेज़ों में प्रचार
- प्रोत्साहन और सम्मान
- प्रतिक्रिया प्रणाली
- कार्यालय में हिंदी सम्मेलन और कार्यक्रम
- हिंदी में सामाजिक मीडिया का प्रचार - प्रसार
- भाषा विशेषज्ञों के साथ सहयोग

संविधान की आठवीं अनुसूची में मान्यता प्राप्त अन्य सभी भाषाओं के साथ सम्मान और समरसता बनाए रखने के प्रति प्रयास जारी है, जिससे भारतीय भाषाओं के बीच भाईचारे को सुनिश्चित किया जा सके। भविष्य में, हिंदी को एक वैश्विक भाषा के रूप में और भी उन्नति प्राप्त करने केलिए सशक्त मौका हैं, जो लोगों को सीमाओं के पार एक साथ जोड़ने में मदद करता हैं।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति
संयुक्त हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह-2023

ऑवरॉल चैंपियनशिप – कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड

सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रति जागरूकता तथा उसके प्रयोग में गति लाने के उद्देश्य से हर वर्ष नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कोच्ची अपने अधीन के सभी 25 कार्यालयों के साथ संयुक्त हिंदी पखवाड़ा समारोह का आयोजन करता आ रहा है। इस अवसर पर पहली बार कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड को संयुक्त हिंदी

पखवाड़ा समारोह का समापन समारोह प्रायोजित करने का मौका मिला जो शिपयार्ड के लिए बहुत ही गौरव की बात है। दिनांक 13.03.2024 अपराह्न 3.00 बजे, कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड के डॉल्फिन क्लब में नराकास के संयुक्त हिंदी पखवाड़ा समारोह का समापन समारोह भव्य रूप से संपन्न किया गया। इस समारोह के अध्यक्ष श्री सुरेंद्रन वी, आईटीएस, प्रधान महाप्रबंधक, बीएसएनएल एवं अध्यक्ष नराकास (पीएसयू) और श्री मधु एस नायर, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक,

कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड, विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। समारोह के मुख्य अतिथि श्री मंजीत सिंह, समूह कमाण्डेंट, केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल, केंद्रीय भवन (गृह मंत्रालय), कोच्ची और श्री आर वी विश्वनाथ, मुख्य महाप्रबंधक एवं प्रधान, आईआरईएल इंडिया लिमिटेड भी उपस्थित थे। कार्यक्रम में विविध कार्यालयों से

प्रमुख/विभागाध्यक्ष तथा कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड के निदेशक (तकनीकी) और मुख्य महाप्रबंधक, महाप्रबंधक,

उप महाप्रबंधक और विविध कार्यालयों के राजभाषा से जुडे पदाधिकारियों ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढायी।

कार्यक्रम की शुरुआत श्रीमती कार्तिका एस नायर, सीएसएल द्वारा ईश्वर वंदना के साथ शुरू हुआ। तत्पश्चात सभी गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत श्रीमती शीला एम सी, सहायक निदेशक (राजभाषा) और सचिव, नराकास, कोच्ची द्वारा किया गया। कार्यक्रम के सभी गणमान्य व्यक्तियों के अभिभाषण के बाद श्रीमती मिनु एम, आईओसीएल का एक मधुरमय गीत पेश किया गया जिन्होंने सुगम संगीत (महिला) में प्रथम स्थान हासिल किया था। साथ ही बीएसएनएल से सुस्मिता जी का भी गीत पेश किया गया । तुरंत बाद पुरस्कार वितरण की ओर प्रवेश किया गया। सबसे पहले विभिन्न प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत 61 प्रतिभागियों को चारों गणमान्य अतिथियों ने अपने करकमलों से पुरस्कार प्रदान किया । साथ ही एफएसीटी द्वारा प्रायोजित ट्रॉफी भी प्रशासनिक शब्दावली, अनुवाद और प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान हासिल प्रतिभागियों को प्रदान किया गया । इसके पश्चात राजभाषा कार्यान्वयन पुरस्कार दिया गया जो चार वर्गों में विभाजित था : 200 से अधिक कर्मचारियों वाले कंपनियों में कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड, 100 से अधिक

उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन पुरस्कार

राजभाषा गृह पत्रिका पुरस्कार (द्वितीय)

कर्मचारियों वाले कंपनियों में कोचीन पत्तन प्राधिकरण, 100 से कम कर्मचारियों वाले कंपनियों में हिंदुस्तान ओर्गैनिक्स केमिकल्स लिमिटेड, और 50 से कम कर्मचारियों वाले कंपनियों में बीएसएनएल कोर नेटवर्क ट्रांसमिशन ने प्रथम स्थान हासिल किया। फिर बारी आई गृह पत्रिका की जिसमें एफएसीटी उद्योग मंडल ने अपने ''राष्ट्रवाणी'' नामक गृह पत्रिका के लिए प्रथम स्थान हासिल किया। उसके बाद हिंदी कर्मियों को अपने उत्कृष्ट योगदान हेतु प्रमाणपत्र भी अध्यक्ष, कोच्ची टॉलिक के करकमलों से प्रदान किया गया।

कार्यक्रम को जारी रखते हुए विभिन्न प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत विजेताओं के आधार पर सबसे ज़्यादा अंक प्राप्त किए कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड ने ओवरऑल ट्रॉफी जीता जो मुख्य अतिथि श्री मंजीत सिंह द्वारा श्री बिजोय भास्कर, निदेशक (तकनीकी) को प्रदान किया गया साथ ही न्यू इंडिया एश्योरेंस द्वारा प्रायोजक रॉलिंग ट्रॉफी भी प्रदान किया गया। इसको जारी रखते हुए कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड में विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर आयोजित हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में पुरस्कृत प्रतिभागियों को भी कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड के अध्यक्ष श्री मधु एस नायर द्वारा पुरस्कार प्रदान किया गया। इसके बाद कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड का समूह गान पेश किया गया।

कार्यक्रम में उपस्थित सभी गणमान्य व्यक्तियों को स्मृतिचिन्ह कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड के अध्यक्ष श्री मधु एस नायर द्वारा प्रदान किया गया और श्रीमती सरिता जी, प्रबंधक (राजभाषा), सीएसएल के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का भव्य संपन्न हुआ। यह कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड केलिए राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय कदम था।

पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय, भारत सरकार से राजभाषा निरीक्षण

दिनांक 10.01.2024 को पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय, भारत सरकार से श्रीमती निर्मला पाहवा, सहायक निदेशक (सेवानिवृत्त), परामर्शदाता ने कोचीन शिपयार्ड में राजभाषा से संबंधित गतिविधियों की समीक्षा की । एक पावर पॉइंट प्रस्तुतीकरण के ज़रिए कार्यालय के राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित विस्तृत रिपोर्ट प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा प्रस्तुत किया गया। मंत्रालय से आए राजभाषा पदाधिकारियों ने कार्यालय की राजभाषा गतिविधियों की यथोचित समीक्षा करके आगे बढने हेतु अभिप्रेरित किया। श्रीमती निर्मला पाहवा ने राजभाषा के संवर्धन हेतु कंपनी द्वारा किए गए सभी प्रयासों की सराहना की और प्रयास जारी रखने हेतु सलाह दी । यह वास्तव में कंपनी में राजभाषा को प्रगति पथ में खडा करने साथ ही अगले स्तर तक ले जाने में मददगार रहा ।

हिंदी पखवाड़ा समारोह

सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रति जागरूकता तथा उसके प्रयोग में गति लाने के उद्देश्य से हर वर्ष सितंबर महीने में कंपनी में हिंदी पखवाड़ा मनाया जाता है। दिनांक 14 सितंबर 2023 को पूणे में आयोजित तृतीय अखिल भारतीय सम्मेलन में हिंदी दिवस समारोह का उद्घाटन किया गया । तदवसर पर, कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड का प्रतिनिधित्व करते हुए हिंदी कर्मचारियों ने अपनी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की। इस दौरान कर्मचारियों, कार्यपालक प्रशिक्षार्थियों, प्रशिक्षार्थियों केलिए सभी कार्यक्रम समान रूप से किया गया। हिंदी टंकण, सुलेख, गद्यांश वाचन, स्मृति परीक्षा, निबंध लेखन, कविता रचना, प्रश्नोत्तरी, शब्द पहेली, प्रशासनिक शब्दावली और हिंदी फिल्म गीत (महिला और पुरुषों केलिए अलग – अलग) प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं।

समापन समारोह

हिंदी पखवाड़ा समारोह का समापन समारोह दिनांक 16 अक्तूबर 2023, अपराह्न 1430 बजे को समुद्री इंजीनियरी प्रशिक्षण संस्थान (मेटी) के सभा भवन में आयोजित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि हमारे अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक श्री मधु एस नायर, उनके साथ श्री जोस वी जे, निदेशक (वित्त) एवं श्री श्रीजित के नारायणन,

निदेशक (प्रचालन) उपस्थित थे। समारोह का शुभारंभ कुमारी अपर्णा मोहन और जिजिना के ईश्वर वंदना के साथ शुरु हुआ जो श्री संपत्त कुमार पी एन, सलाहकार (सीएसआर) के स्वागत भाषण के साथ जारी रहा। कार्यक्रम के दौरान माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी का संदेश श्रीमती सरिता जी, उप प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा पढ़ा गया।

कार्यक्रम को जारी रखते हुए कंपनी की गृह पत्रिका ''सागर रत्न'' के पंद्रहवें अंक का प्रकाशन श्री मधु एस नायर द्वारा श्री जोस वी जे, निदेशक (वित्त) को सौंपते हुए किया गया।

तत्पश्चात हमारे अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक श्री मधु एस नायर ने अपने अध्यक्षीय भाषण में हिंदी के बढ़ते आयामों का ज़िक्र करते हुए हिंदी भाषा जानने की आवश्यकता पर ज़ोर देने की बात को व्यक्त करते हुए बताया कि हिंदी एक ऐसी भाषा है जिसकी गति बहुत तेज़ी से बढ़ रही है। उनकी बातों में, हम सभी को हिंदी भाषा का अधिक से अधिक उपयोग करके, सही मायने में इसको सम्मान दिया जाना है। कई वर्षों से राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु कोच्ची टॉलिक से प्रथम

पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है, साथ ही गृह मंत्रालय, भारत सरकार से हिंदी सलाहकार समिति में प्रथम पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा रहा है। हिंदी पखवाड़ा समारोह के सिलसिले में कर्मचारियों केलिए और साथ ही साथ

कॉलेज छात्रों केलिए भी विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन सफल ढंग से किया गया जो कि एक सराहनीय कदम है। इस समारोह में पुरस्कृत कर्मचारियों और कॉलेज छात्रों को भी अध्यक्ष महोदय द्वारा सराहना दी गई। राजभाषा के कार्यान्वयन

के लिए राजभाषा अनुभाग द्वारा किए जा रहे सभी प्रयासों के लिए भी बधाई दी। हिंदी भाषा को अपने प्रेरणात्मक शब्दों के साथ बढ़ावा देते हुए उन्होंने अपना भाषण संपन्न किया। कार्यक्रम को एक छोटा-सा विराम देते हुए श्री प्रणेश ने अपने मधुर संगीत से वहाँ उपस्थित लोगों का मन बहलाया।

समापन समारोह के अवसर पर, सभी विजेता एवं बच्चों साथ ही प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में पुरस्कृत कॉलेजों को अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक के करकमलों से पुरस्कार प्रदान किया गया । हिंदी का उत्कृष्ट कार्यान्वयन पुरस्कार इस वर्ष वित्त विभाग के कार्यालय को प्रदान किया गया। इस पुरस्कार वितरण के तुरंत बाद एक और विराम लेते हुए हमारे कर्मचारियों के बच्चे जो फिल्मी गीत प्रतियोगिता में पुरस्कृत हुए थे उनका समूह गान प्रस्तुत किया गया जिसने सबके मन को मोह लिया। कार्यक्रम के अंत की ओर बढ़ते हुए हमारी उप प्रबंधक (राजभाषा) श्रीमती सरिता जी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के बाद राष्ट्रगान के साथ समापन समारोह का भव्य संपन्न हुआ। पूरे कार्यक्रम का संचालन हिंदी कक्ष द्वारा सफल रूप से किया गया।

उत्कृष्ट कार्यान्वयन पुरस्कार – वित्त विभाग

कर्मचारियों के बच्चों के लिए विविध पुरस्कार

कर्मचारियों के लिए पुरस्कार

कर्मचारियों के लिए पुरस्कार

कर्मचारियों के लिए पुरस्कार

अपने लक्ष्य में सफल होने के लिए आपको अपने
लक्ष्य के प्रति एकमात्र दृढ़ भक्ति होनी चाहिए।

कौशल संवर्धन संगोष्ठी

राजभाषा हिंदी की प्रगति की ओर अपनी प्रतिबद्धता के भाग के रूप में और छात्रों के बीच हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु साथ ही हिंदी पखवाडा समारोह के एक विशेष कार्यक्रम के रूप में कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड द्वारा दिनांक 27 सितंबर 2023 को डॉल्फिन कल्ब, कोच्ची में पूर्वाह्न 09:00 बजे से अपराह्न 04:30 बजे तक एर्णाकुलम जिले के हिंदी स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्रों केलिए एक कौशल संवर्धन संगोष्ठी एवं हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी का औपचारिक उद्घाटन श्री शिवकुमार ए, महाप्रबंधक (सामग्री), सीएसएल द्वारा किया गया । उद्घाटन समारोह में विशिष्ट अतिथिगण के रूप में पधारे श्रीमती शीला एम सी, सहायक निदेशक (राजभाषा) एवं सचिव, कोच्ची टॉलिक, बीएसएनएल भवन, कोच्ची और डॉ मधुशील आयिल्यत्त, प्रबंधक (राजभाषा), भारतीय रिज़र्व बैंक, कोच्ची ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढायी ।

श्रीमती एम सी शीला, सहायक निदेशक (राजभाषा) एवं सचिव, कोच्ची टॉलिक, बीएसएनएल भवन, कोच्ची और डॉ मधुशील आयिल्यत्त, प्रबंधक (राजभाषा), भारतीय रिज़र्व बैंक, कोच्ची ने एक साथ मिलकर दीप प्रज्ज्वलन करके कार्यक्रम का शुभारंभ किया ।

आगे, संगोष्ठी के मुख्य अतिथि के रूप में पधारे श्री शिवकुमार ए, महाप्रबंधक (सामग्री) ने अपने प्रेरणात्मक शब्दों से अध्यक्षीय भाषण पेश किया। उन्होंने

अनुरोध किया, ताकि हिंदी का सही मायने में विकास हो सके । उन्होंने हिंदी विभाग द्वारा राजभाषा हिंदी के विकास केलिए किए जा रहे सभी प्रयासों केलिए बधाई एवं शुभकामनाएं दी ।

संगोष्ठी का शुभारंभ महाराजास कॉलेज, एर्णाकुलम की कुमारी भावना एवं रेश्मा की ईश्वर वंदना के साथ हुआ। बाद में, श्रीमती लिजा जी, सहायक प्रशासनिक अधिकारी (हिंदी) द्वारा सभा में उपस्थित सभी विशिष्ट अतिथिगण का हार्दिक स्वागत किया। तत्पश्चात सीएसएल के महाप्रबंधक (सामग्री),

अध्यक्षीय भाषण में एक राजभाषा, राष्ट्रभाषा एवं संपर्क भाषा के रूप में हिंदी की महत्ता पर ज़ोर दिया । उन्होंने बताया कि, राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं हिंदी को जनमानस तक पहुंचाना, हमारा नैतिक दायित्व है । इसी परिप्रेक्ष्य में कोचीन शिपयार्ड द्वारा इस तरह के कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है । उन्होंने सभा में उपस्थित सभी छात्रों एवं शिक्षकों से हिंदी को उन्नति की राह में खडा करने में और एक अगले स्तर तक ले जाने में अपने-अपने क्षेत्र में एहम भूमिका निभाने हेतु साथ ही सरल एवं सुगम हिंदी का प्रयोग करने हेतु

अगला श्रीमती शीला एम सी, सहायक निदेशक (राजभाषा) एवं सचिव, कोच्ची टॉलिक, बीएसएनएल भवन, कोच्ची को अपने अनुभव के तहत आशीर्वचनों के लिए आमंत्रित किया गया। उन्होंने हिंदी के प्रचार - प्रसार की आवश्यकता और एहमियत को दर्शाया और

कोचीन शिपयार्ड के हिंदी कर्मियों द्वारा किए जा रहे प्रयासों की प्रशंसा की साथ ही कार्यक्रम की सफलता केलिए शुभकामनाएं भी दी। आगे डॉ मधुशील आयिल्यत्त, प्रबंधक (राजभाषा), भारतीय रिज़र्व बैंक, कोच्ची ने भी अपने आशीर्वचनों से सभा में उपस्थित सभी को अभिप्रेरित किया। इसके बाद उद्घाटन सत्र संपन्न हुआ ।

श्रीमती शीला एम सी, सचिव कोच्ची टॉलिक एवं सहायक निदेशक, बीएसएनएल से छात्रों केलिए कैरियर संवर्धन संबंधी सुझाव/ विचारों के साथ संगोष्ठी का प्रथम सत्र का आरंभ हुआ । उन्होंने अपने अनुभवों के साथ अपनी अपनी जिंदगी में कैसे उन्नति को हासिल करना है, कैसे लक्ष्य तक पहुंचना है, इस संबंध में विस्तृत रूप से छात्रों के साथ बातचीत की। उन्होंने हिंदी भाषा के साथ अपने को आगे बढने हेतु छात्रों के मन में एक सकारात्मक मनोभाव सृजित करने का प्रयास किया । यह सत्र वास्तव में छात्रों के लिए बहुत ही प्रेरणादायक था ।

द्वितीय सत्र का संचालन डॉ मधुशील आयिल्यत्त, प्रबंधक (राजभाषा), भारतीय रिज़र्व बैंक, कोच्ची द्वारा कौशल संवर्धन पर आयोजित किया गया । उन्होंने हिंदी भाषा पढनेवाले एक छात्र केलिए उनके सामने आनेवाले विविध रोज़गार संबंधी अवसरों पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला। साथ ही, उन्होंने भारत सरकार की राजभाषा संबंधी नीतियों, अधिनियम, नियम, वार्षिक कार्यक्रम, एक केंद्र सरकारी कार्यालय में हिंदी अधिकारियों की भूमिका, उत्तरदायित्व आदि पर उन्होंने विस्तृत रूप से बातचीत की। यह बहुत ही ज्ञानवर्धक था और छात्रों केलिए एक नया अनुभव प्रदान किया ।

दोनों सत्रों के बाद, महाराजास कॉलेज, एर्णाकुलम की कुमारी भावना आर ने "**विश्व भाषा के रूप में हिंदी**" विषय पर और कुमारी सनिका राज, कुसाट, कोच्ची ने "**वर्तमान समय में हिंदी की दशा और दिशा**" विषय पर पर्ची प्रस्तुतीकरण पेश किया जो छात्रों केलिए बहुत ही सूचनाप्रद था। तत्पश्चात, संकाय के रूप में उपस्थित डॉ मधुशील आयिल्यत्त, प्रबंधक (राजभाषा), भारतीय रिज़र्व बैंक, कोच्ची द्वारा इन दोनों पर्चियों की समीक्षा करके विचार-विमर्श किया गया ।

दोपहर के बाद छात्रों केलिए **हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता** का आयोजन किया गया। यह प्रतियोगिता एर्णाकुलम जिले के हिंदी स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्रों केलिए मुख्य रूप से आयोजित किया गया था। एर्णाकुलम जिले से कुल 8 कॉलेज ने प्रतियोगिता में सक्रिय रूप से भाग लिया। डॉ मधुशील आयिल्यत्त, प्रबंधक (राजभाषा), भारतीय रिज़र्व बैंक, कोच्ची ने प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का संचालन बहुत ही रोचक एवं ज्ञानवर्धक तरीके से किया। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में क्रमश: कुसाट, कोच्ची, श्री शंकराचार्य विश्वविद्यालय, कालडी और श्री शंकरा कॉलेज, कालडी के छात्र विजयी हुए । प्रतियोगिता में सभी छात्रों ने बहुत ही सक्रिय रूप से अपनी उपस्थिति दर्ज की ।

हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

कार्यक्रम के अंत में प्रबंधक श्रीमती सरिता जी द्वारा कार्यक्रम की सफलता हेतु, मुख्य अतिथि, संकायों एवं छात्रों और शिक्षकों को कोचीन शिपयार्ड की ओर से कृतज्ञता ज्ञापन किया गया। धन्यवाद ज्ञापन के बाद राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का भव्य संपन्न हुआ।

यह कार्यक्रम संपूर्ण रूप से कोचीन शिपयार्ड के हिंदी अनुभाग केलिए एक महत्वपूर्ण कदम था और यह कार्यक्रम विशेष रूप से छात्रों एवं शिक्षकों केलिए बहुत ही लाभदायक भी था, जो आगे के उनके कार्यक्षेत्र में कैरियर संवर्धन हेतु वाकई में मददगार सिद्ध होगा ।

विश्व हिंदी दिवस समारोह

अंतर-विभागीय हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

विश्व हिंदी दिवस के सिलसिले में सीएसएल के भीतर एक अंतर विभागीय हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। हिंदी भाषा के महत्व को उजागर करने और सभी कर्मचारियों के बीच हिंदी भाषा को अवगत कराने के लक्ष्य से इस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। शिपयार्ड के हर एक विभाग के हर एक व्यक्ति के पास व्यक्तिगत रूप में जाकर हिंदी विभाग के कर्मियों ने यह प्रतियोगिता आयोजित की। इस कारण कर्मचारियों को हिंदी विभाग के कर्मियों से हिंदी की एहमियत जानने और आपस में आशय – विनिमय करने का भी अवसर प्राप्त हुआ। प्रश्नोत्तरी 5 मिनट की अवधि के 20 वस्तुनिष्ठ प्रकार के प्रश्नों का था। दूसरे स्थान के लिए कर्मचारियों के बीच टाई होने के कारण फिर से दो स्तरों में प्रतियोगिताएं आयोजित करनी पड़ी। अंत में तीन विजेताओं का चयन किया गया। जिन्हें प्रथम पुरस्कार 2000/- रुपए, द्वितीय पुरस्कार 1500/- रुपए और तृतीय पुरस्कार 1000/- रुपए था। 560 से अधिक कर्मचारियों ने इसमें सक्रिय रूप से भाग लिया।

सीएसएल में विश्व हिंदी दिवस के सिलसिले में पहली बार आयोजित इस अंतर विभागीय हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता प्रतिभागियों की सक्रिय भागीदारी से कार्यक्रम शत-प्रतिशत सफल रहा।

सीएसएल के अन्य यूनिटों एवं सहायक कंपनियों में राजभाषा कार्यान्वयन

हिंदी पखवाड़ा समारोह का आयोजन

सीएसएल के अन्य यूनिट सीकेएसआरयू, सीएएनएसआरयू, सीएमएसआरयू और सहायक कंपनियों में हिंदी पखवाड़ा समारोह दिनांक 14 सितंबर 2024 से शुरू करते हुए दिनांक 28 सितंबर 2024 तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताएं : निबंध लेखन, सुलेख, कविता रचना, शब्द पहेली, फिल्मी गीत, प्रशासनिक शब्दावली आदि आयोजित की गई। सभी यूनिट के कर्मचारियों ने पूरे जोश और होश के साथ भाग लिया और कार्यक्रम को सफल बनाया।

उडुपी कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड

सीएसएल मुंबई पोत मरम्मत यूनिट

सीएसएल कोलकाता पोत मरम्मत यूनिट

सीएसएल अंडमान व निकोबार पोत मरम्मत यूनिट

हुगली कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड

उडुपी कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड में राजभाषा निरीक्षण एवं राजभाषा प्रबंधन कार्यक्रम

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक के निदेशानुसार, सहायक प्रशासनिक अधिकारी (हिंदी), सीएसएल, कोच्ची द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन के शुभारंभ हेतु उडुपी कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड में राजभाषा निरीक्षण किया गया। वहां के सभी वरिष्ठ अधिकारियों को राजभाषा प्रबंधन कार्यक्रम के ज़रिए कार्यान्वयन संबंधी दिशानिर्देश एवं मार्गदर्शन प्रदान किया गया।

कोलकाता पोत मरम्मत यूनिट में राजभाषा निरीक्षण एवं प्रबंधन कार्यक्रम

प्रबंधक (राजभाषा), सीएसएल, कोच्ची द्वारा राजभाषा के सुचारू कार्यान्वयन हेतु हुगली कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड, कोलकाता में राजभाषा निरीक्षण किया गया। वहां के सभी वरिष्ठ अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा प्रबंधन कार्यक्रम के ज़रिए कार्यान्वयन संबंधी दिशानिर्देश एवं मार्गदर्शन प्रदान किया गया साथ ही यूनीकोड पर भी जानकारी प्रदान की गई।

मुंबई पोत मरम्मत यूनिट में राजभाषा निरीक्षण एवं राजभाषा प्रबंधन कार्यक्रम

राजभाषा कार्यान्वयन के सुचारू कार्यान्वयन सुनिश्चित करने हेतु प्रबंधक (राजभाषा), सीएसएल, कोच्ची द्वारा मुंबई पोत मरम्मत यूनिट में राजभाषा निरीक्षण किया गया। वहां के सभी वरिष्ठ अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा प्रबंधन कार्यक्रम के ज़रिए कार्यान्वयन संबंधी दिशानिर्देश एवं मार्गदर्शन प्रदान किया गया साथ ही यूनीकोड पर भी जानकारी प्रदान की गई।

राजभाषा कार्यशाला - एक अवबोध कार्यक्रम

● अप्रैल - जून तिमाही की एक दिवसीय कार्यशाला दिनांक 12.06.2023 को आयोजित की गई। श्रीमती आशा के सी, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, तटरक्षक, फोर्टकोच्ची कार्यशाला की संकाय थी। यह कार्यशाला मुख्य रूप से सीएसएल के पर्यवेक्षकों के लिए आयोजित की गई थी।

● जुलाई - सितंबर तिमाही की एक दिवसीय कार्यशाला दिनांक 29.09.2023 को आयोजित की गई। सुश्री सौम्या आई वी, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, इंडियन ऑयल, केरल राज्य कार्यालय, कोच्ची कार्यशाला की संकाय थी।

● अक्तूबर - दिसंबर तिमाही की एक दिवसीय कार्यशाला दिनांक 27.11.2023 को ऑनलाइन तरीके से आयोजित की गई। श्रीमती लिजा जी एस कार्यशाला की संकाय थी। यह कार्यशाला मुख्य रूप से सीएसएल के अन्य यूनिट के नव नियुक्त कर्मचारियों के लिए आयोजित की गई।

● जनवरी - मार्च तिमाही की एक दिवसीय कार्यशाला दिनांक 02.02.2024 को मेटी प्रशिक्षण हॉल में आयोजित की गई। श्रीमती लिजा जी एस कार्यशाला की संकाय थी। यह कार्यशाला मुख्य रूप से सीएसएल में नव नियुक्त कार्यपालकों के लिए आयोजित की गई।

कार्यशालाओं के ज़रिए सभी कर्मचारियों को राजभाषा नीति का परिचय, वार्षिक कार्यक्रम की जानकारी, टिप्पण- प्रारूपण एवं पत्राचार से संबंधित लक्ष्य, यूनीकोड आदि के संबंध में समुचित मार्गदर्शन प्रदान किया गया । राजभाषा कार्यान्वयन में अपनी-अपनी भूमिका साथ ही उत्तरदायित्वों पर संकाय सदस्यों ने विशेष रूप से हरेक कर्मचारियों को अवबोध कराया। यह कर्मचारियों के बीच राजभाषा हिंदी को बढावा देने में एक ठोस कदम था।

टिप्पण व आलेखन प्रशिक्षण

दिनांक 07 जून 2023 को लिपिक स्तर के कर्मचारियों केलिए टिप्पण व आलेखन में प्रशिक्षण की दूसरे बैच की शुरुआत की गई थी। कक्षाएं पूरे दो महीने केलिए हफ्ते में दो दिन एक घंटे केलिए आयोजित की गई थी । सितंबर 2023 महीने में कक्षाओं को सफल रूप में संपन्न किया गया। कुल 12 कर्मचारियों ने इसमें सक्रिय रूप से अपनी भागीदारी सुनिश्चित की ।

नकद पुरस्कार योजना

- कार्यालयीन काम हिंदी में करने हेतु वर्ष के दौरान नकद पुरस्कार योजना में कुल 87 कर्मचारियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया ।
- दसवीं कक्षा में हिंदी में उच्च अंक प्राप्त करने से संबंधित नकद पुरस्कार योजना में कुल 28 कर्मचारियों के बच्चों ने सक्रिय रूप से भाग लिया ।

इंटर्नशिप कार्यक्रम

छात्रों को कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के महत्व और प्रमुखता को समझने हेतु एक विशेष कदम के रूप में, कार्यालय में दिसंबर महीने में राजभाषा हिंदी में इंटर्नशिप कार्यक्रम की शुरुआत की गई। अब तक कुसाट, कलमश्शेरी से 2 छात्र, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, एर्णाकुलम से 8 छात्रों और महाराजास, कॉलेज, एर्णाकुलम से 10 छात्रों ने शिपयार्ड में हिंदी में इंटर्नशिप कार्य सफल रूप से पूरा किया ।

प्राज्ञ पाठ्यक्रम

हिंदी शिक्षण योजना के अधीन हिंदी प्राज्ञ पाठ्यक्रम (जनवरी–मई 2023) में सेवाकालीन प्रशिक्षण जनवरी, 2023 में ऑनलाइन शुरू किया गया। पाठ्यक्रम पूरे 5 महीने केलिए आयोजित किया गया। कार्यालय से कुल 20 कर्मचारियों ने पाठ्यक्रम सफल रूप में पूरा करके दिनांक 16 मई 2023 को परीक्षा में भाग लिया और उत्तीर्ण हुए।

तृतीय राजभाषा सम्मेलन - पूणे - भागीदारी

गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा हिंदी दिवस समारोह के उद्घाटन समारोह के सिलसिले में दो–दिवसीय तृतीय राजभाषा सम्मेलन पूणे में आयोजित किया गया । कोचीन शिपयार्ड का प्रतिनिधित्व करते हुए हिंदी कर्मचारीगण सम्मेलन में सक्रिय रूप से अपनी भागीदारी सुनिश्चित की ।

राजभाषा तकनीकी संगोष्ठी

बीपीसीएसएल द्वारा 15.12.2023 को कोच्ची टॉलिक के सभी हिंदी कर्मचारियों केलिए एक राजभाषा तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। सत्र में राजभाषा के संवर्धन हेतु नई प्रौद्योगिकियों पर विशेष रूप से प्रकाश डाला गया। कोचीन शिपयार्ड की ओर से हिंदी कर्मचारीगण संगोष्ठी में उपस्थित हुए ।

बोलचाल की हिंदी कक्षाएं

सीएसएल के कर्मचारियों केलिए नवंबर 2023 से बोलचाल की हिंदी में प्रशिक्षण कक्षाओं की शुरूआत की गई। कक्षाएं हफ्ते में दो दिन एक घंटे केलिए आयोजित की गई । कुल 36 कर्मचारियों ने प्रशिक्षण सत्र में भाग लिया ।

विद्यालयों में हिंदी पुस्तकों का योगदान

एक सामाजिक प्रतिबद्धता के रूप में, स्कूली छात्रों को हिंदी भाषा की ओर अधिक आकर्षित करने केलिए, सरकारी स्कूलों/संस्थानों में हिंदी पुस्तकें प्रदान करने के कार्य की शुरुआत की गई। रिपोर्टाधीन वर्ष में आलंगाड केंद्रीय हिंदी महाविद्यालयम, एर्णाकुलम में 5000 रुपए की हिंदी पुस्तकें प्रदान की गई।

कोच्ची टॉलिक - अर्ध वार्षिक बैठक

कोच्ची टॉलिक की अर्धवार्षिक बैठक 30.10.2023 को ऑनलाइन तरीके से आयोजित की गई । बैठक के दौरान सदस्य सचिव ने सभी कार्यालयों की राजभाषा कार्यान्वयन प्रगति की समीक्षा की । कोचीन शिपयार्ड द्वारा किए गए सभी प्रयासों केलिए सराहना मिली । बैठक में कोचीन शिपयार्ड की ओर से श्री मधु एस नायर, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक और श्री सुबाष ए के, महाप्रबंधक एवं हिंदी कर्मचारियों ने भाग लिया ।

विभिन्न गतिविधियाँ

(क) दिनांक 16.11.2023 को पंजाब नेशनल बैंक, कोच्ची में राष्ट्रीयकृत बैंकों के कर्मचारियों केलिए आयोजित रोचक वृत्तांत वर्णन प्रतियोगिता में श्रीमती लिजा जी एस, सहायक प्रशासनिक अधिकारी (हिंदी–व.ग्रे.) ने निर्णायक की भूमिका निभाई।

(ख) कोच्ची टॉलिक के संयुक्त हिंदी पखवाडा समारोह, 2023 के सिलसिले में एचपीसीएल में दिनांक 11.12.2023 को आयोजित राजभाषा प्रबंधन कार्यक्रम में कोचीन शिपयार्ड की ओर से श्रीमती जिलिन जोसफ, उप प्रबंधक एवं कल्याण अधिकारी, कार्मिक एवं प्रशासन विभाग और श्रीमती अनिता जोसफ, उप प्रबंधक, वित्त विभाग ने अपनी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की।

(ग) प्रशासनिक अनुभागों में राजभाषा के सुचारू कार्यान्वयन सुनिश्चित करने हेतु, राजभाषा समन्वयकों को नियुक्त किया गया।

(घ) कोच्ची टॉलिक के संयुक्त हिंदी पखवाडा समारोह, 2023 के सिलसिले में आईओसीएल में दिनांक 09.10.2023 को आयोजित राजभाषा तकनीकी संगोष्ठी में कोचीन शिपयार्ड की ओर से हिंदी कर्मचारीगण ने अपनी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की। संगोष्ठी में नई प्रौद्योगिकियों के ज़रिए राजभाषा के विकास पर मुख्य रूप से प्रकाश डाला गया।

(ड़) एफएसीटी द्वारा दिनांक 23.01.2024 को आयोजित राजभाषा संगोष्ठी ('भारत सरकार की राजभाषा नीति : चुनौतियां और समाधान') में कोचीन शिपयार्ड की ओर से हिंदी कर्मियों ने अपनी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की।

नौवहन शब्दावली

मूल्यानुसार भाड़ा	Advalorem Freight
नौकार्य, जहाज़ी काम	Afloat Job
नावों का वातायान	Airation of Boats
लंगर/ स्थिरक	Anchor
नीरम टंकी	Ballast Tank
घाट	Berth
नौका कार्मिक दल	Boat Crew
पोत का अग्रभाग	Bow
थोक माल	Bulk Cargo
यान मार्ग	Carriage Way
वर्गीकरण समिति	Classification Society
पोत प्रस्थान अनुमति	Clearance of Ship
तटीय नौचालन	Coast Navigation
अवरोध क्षतिपूर्ति	Damage of Detention
सीमा रेखा	Deadline
सुपुर्दगी आदेश	Delivery Order

कंपनी खबरें

भारत के माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड के नए ड्राई डॉक और अंतर्राष्ट्रीय पोत मरम्मत सुविधा का उद्घाटन

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 4,000 करोड़ रुपये से अधिक की तीन प्रमुख अवसंरचना परियोजनाओं का उद्घाटन किया। दि. 28/02/2024 को उद्घाटन की गई परियोजनाओं में कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड (सीएसएल) में न्यू ड्राई डॉक, अंतर्राष्ट्रीय पोत मरम्मत सुविधा (आईएसआरएफ) शामिल हैं। ये प्रमुख अवसंरचना परियोजनाएं भारत के पत्तनों, पोत परिवहन और जलमार्ग क्षेत्र को बदलने तथा इसमें क्षमता सृजन और आत्मनिर्भरता के लिए प्रधानमंत्री के आत्मनिर्भर भारत दृष्टिकोण के अनुरूप है ।

ड्राई डॉक एक उच्च श्रेणी की रणनीतिक संपत्ति है जो आपात स्थिति में महत्वपूर्ण नौसैनिक संपत्तियों और वाणिज्यिक पोतों को संभाल सकती है। 1,799 करोड़ रुपये के बहुउद्देश्य वाले ड्राई डॉक का उपयोग पोत निर्माण के साथ-साथ पोत की मरम्मत के लिए भी किया जा सकता है। इसमें बड़े एलएनजी वाहक, कैपेसाइज और स्वेजमैक्स पोत, तेल रिग और सेमी-सब और अन्य बड़े पोत रखे जा सकते हैं। कोच्ची के विलिंगडन द्वीप में कोचीन पत्तन प्राधिकरण के 42 एकड़ पट्टे के परिसर में स्थापित आईएसआरएफ सीएसएल की वर्तमान पोत मरम्मत क्षमताओं का आधुनिकीकरण और विस्तार करेगा तथा इसे एक वैश्विक पोत मरम्मत केंद्र के रूप में परिवर्तित करेगा और भारत में पोत मरम्मत क्लस्टर बनाने और वैश्विक समुद्री क्षेत्र में भारत को अग्रणी बनाने के प्रधानमंत्री के दृष्टिकोण के साथ जोड़ेगा।

भारत के माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड द्वारा निर्मित भारत की पहली स्वदेशी हाइड्रोजन जलयान का अनावरण

भारतीय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने कोच्ची शहर में भारत की पहली

स्वदेशी रूप से विकसित और निर्मित हाइड्रोजन ईंधन सेल फेरी को हरी झंडी दिखाई गई। जलयान 24 मीटर का कैटामरैन है जो पूरी तरह से वातानुकूलित यात्री स्थान के साथ 50 यात्रियों को ले जा सकता है। माननीय प्रधानमंत्री ने तमिलनाडु में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान इस जलयान का जलावतरण किया । माननीय प्रधानमंत्री ने तमिलनाडु के तूत्तुकुडी क्षेत्र में 17,300 करोड़ रुपये से अधिक की कई विकास परियोजनाओं की आधारशिला रखी और राष्ट्र को समर्पित किया। नरेंद्र मोदी जी ने पोत निर्माण में सतत और हरित समाधान जो भारत की समुद्री शक्ति में योगदान दे रहा है, उसके सम्मुख सीएसएल के प्रयासों और उत्कृष्टता केलिए सराहना दी ।

कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड द्वारा भारतीय नौसेना के लिए तीन पनडुब्बी रोधी युद्ध शैलो वाटरक्राफ्ट का समवर्ती जलावतरण

भारतीय नौसेना केलिए कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड (सीएसएल) में निर्माणाधीन आठ पनडुब्बी रोधी युद्ध शैलो वाटरक्राफ्ट की श्रृंखला में पहले तीन (3) वाटरक्राफ्टों को सीएसएल के कोच्ची यार्ड में जलावतरण किया गया । औपचारिक पूजा के बाद, पहला वाटरक्राफ्ट श्रीमती अंजली बहल द्वारा जलावतरण किया गया, दूसरा वाटरक्राफ्ट श्रीमती कंगना बेरी द्वारा जलावतरण किया गया, और तीसरा वाटरक्राफ्ट श्रीमती ज़रीन लॉर्ड सिंह द्वारा जलावतरण किया गया । तीन वाटरक्राफ्टों का जलावतरण भारतीय नौसेना के मुख्य अतिथि, वाइस एडमिरल संजय जे सिंह, एवीएसएम, एनएम, नौसेना स्टाफ के उप प्रमुख, वाइस एडमिरल सूरज बेरी, एवीएसएम, एनएम, वीएसएम, कमांडर-इन-चीफ और वाइस एडमिरल पुनीत बहल, एवीएसएम, वीएसएम, कमांडेंट आईएनएस की गरिमामयी उपस्थिति में की गई । इस अवसर पर सीएसएल के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक, सीएसएल के निदेशक, भारतीय नौसेना और सीएसएल के वरिष्ठ अधिकारी, वर्गीकरण सोसाइटी के प्रतिनिधिगण ने अपनी महत्त उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

इस श्रृंखला के पहले तीन पोत, सीएसएल यार्ड संख्या बीवाई 523, बीवाई 524 और बीवाई 525 को भारतीय नौसेना में शामिल होने पर 'आईएनएस माहे, आईएनएस मालवन, आईएनएस मांग्रोल' नाम दिया गया।

जलयान 78.0 मीटर लंबा, 11.36 मीटर चौड़ा और लगभग 2.7 मीटर का खिंचाव है। विस्थापन लगभग 896 टन है, अधिकतम गति 25 समुद्री मील और स्थिरता 1800 समुद्री मील है। जलयानों को पानी के नीचे निगरानी हेतु स्वदेशी रूप से विकसित, अत्याधुनिक सोनार लगाने के लिए डिज़ाइन किया गया है। तीन (3) पोतों का समवर्ती प्रक्षेपण कोचीन शिपयार्ड के लिए एक और अनमोल उपलब्धि है। परियोजना का पहला पोत नवंबर 2024 तक सुपुर्दगी के लिए तैयार होने की योजना है।

उडुपी कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड द्वारा अदानी ग्रूप के लिए 62 टन का बोलार्ड पुल टग की सुपुर्दगी

कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड (सीएसएल) की पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी उडुपी – कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड (यूसीएसएल) ने अदानी ग्रूप की कंपनी ओशन स्पार्कल लिमिटेड के लिए पहला 62 टन बोलार्ड पुल टग की सुपुर्दगी की । अदानी हार्बर सर्विज़ेस लिमिटेड और ओशन स्पार्कल लिमिटेड के पास लगभग 100 टग हैं और वे भारत में सबसे बड़े टग मालिक और प्रचालक हैं।

यह भारत में पोत निर्माण उद्योग को बढ़ावा देने के साथ–साथ भारतीय पत्तनों के टग को मानकीकृत करने हेतु भारत सरकार के पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय (एमओपीएसडब्ल्यू) द्वारा प्रख्यापित स्वीकृत मानक टग डिज़ाइन और विशिष्टताओं (एएसटीडीएस) के तहत भारत में निर्मित पहला टग है। यह भारत सरकार की आत्मनिर्भर भारत पहल के तहत एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

कोचीन शिपयार्ड केलिए 'ग्रीनको गोल्ड'

कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड ने प्रतिष्ठित 'ग्रीन कंपनी' गोल्ड रेटिंग प्राप्त करते हुए पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय के तहत पहला सार्वजनिक उपक्रम बनकर एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की। सीएसएल को सतत कार्यों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि करते हुए मेसर्स सीआईआई द्वारा ''ग्रीनको गोल्ड'' से सम्मानित किया गया था।

सीएसएल-कोलकाता पोत मरम्मत यूनिट (सीकेएसआरयू) द्वारा फ्लोटिंग होटल, पोलो फ्लोटेल की ड्राई डॉकिंग और मरम्मत की सफल पूर्ति

कोलकाता में कोचीन शिपयार्ड की पोत मरम्मत यूनिट सीएसएल – कोलकाता पोत मरम्मत यूनिट (सीकेएसआरयू) ने कोलकाता में हुगली नदी के सुदंर किनारों पर संचालित होनेवाले एक उत्कृष्ट फ्लोटिंग होटल पोलो फ्लोटेल की ड्राई डॉकिंग और मरम्मत को सफलतापूर्वक पूरा कर लिया है। यह एक उल्लेखनीय उपलब्धि है। पोत की संरचनात्मक समग्रता को बनाए रखते हुए व्यापार मरम्मत में पूरे निचले पतवार सहित का नवीनीकरण शामिल था 100 टन से अधिक स्टील स्थितियों सहित अभूतपूर्व । प्रतिकूल स्थलीय मौसम सटीक योजना और चुनौतियों के बावजूद, माध्यम से सीकेएसआरयू प्रभावी परियोजना प्रबंधन के पहले पूरा किया गया। द्वारा परियोजना को समय से को भारत के पूर्वी तट यह परियोजना सीकेएसआरयू यूनिट के रूप में मज़बूती पर एक प्रमुख पोत मरम्मत से खडा करता है।

केरल औद्योगिक सुरक्षा पुरस्कार -2023

सीएसएल ने बहुत बडे कारखानों (इंजीनियरिंग) के क्षेत्र में सुरक्षा में उत्कृष्टता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि करते हुए प्रतिष्ठित केरल औद्योगिक सुरक्षा पुरस्कार – 2023 हासिल किया। दिनांक 04 मार्च 2024 को एर्णाकुलम टाउन हॉल में आयोजित एक भव्य समारोह के दौरान सीएसएल को यह सम्मान प्रदान किया गया, जहां माननीय सामान्य शिक्षा और श्रम मंत्री श्री वी शिवनकुट्टी, केरल सरकार ने डॉ हरिकृष्णन एस, मुख्य महाप्रबंधक एवं दखलकार, श्री संतोष फिलिप, महाप्रबंधक एवं कारखाना प्रबंधक और सीएसएल का प्रतिनिधित्व करनेवाली समर्पित टीम को पुरस्कार प्रदान किया गया।

गौरव को बढाते हुए, श्री तंकराज सी आर, मुख्य कल्याण अधिकारी, श्री अब्दुल मनाफ ए, सहायक महाप्रबंधक – सुरक्षा को वैधानिक अधिकारियों के रूप में उनके उत्कृष्ट योगदान केलिए व्यक्तिगत पुरस्कार की श्रेणी में राज्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया । यह मान्यता औद्योगिक परिदृश्य में सुरक्षा और उत्कृष्टता के प्रतीक के रूप में सीएसएल की पहचान को और मज़बूत करती है ।

कोचीन शिपयार्ड द्वारा कोच्ची जल मेट्रो केलिए इलेक्ट्रिक हाइब्रिड जल मेट्रो फेरी बीवाई 137 की सुपुर्दगी

भारत की प्रमुख पोत निर्माण और पोत मरम्मत कंपनी कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड (सीएसएल) ने कोच्ची जल मेट्रो को 13वीं इलेक्ट्रिक हाइब्रिड 100 यात्री जल मेट्रो फेरी बीवाई 137 की सुपुर्दगी की । इस अवसर पर केएमआरएल और सीएसएल के निदेशकों के साथ-साथ केएमआरएल, सीएसएल, डीएनवी और आईआरएस के वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में सीएसएल में सुपुर्दगी प्रोटोकॉल हस्ताक्षर कार्यक्रम आयोजित किया गया ।

इलेक्ट्रिक हाइब्रिड 100 यात्री जल मेट्रो फेरी बीवाई 137 एक अत्याधुनिक जलयान है जिसे कोच्ची के निवासियों और आगंतुकों केलिए कुशल, पर्यावरण-अनुकूल और सुविधाजनक परिवहन विकल्प प्रदान करने केलिए डिज़ाइन किया गया है । स्थिरता और पर्यावरणीय जिम्मेदारी पर ध्यान देने के साथ, यह नौका इलेक्ट्रिक हाइब्रिड प्रौद्योगिकी से सुसज्जित है, जो कम उत्सर्जन और न्यूनतम पर्यावरणीय प्रभाव सुनिश्चित करती है ।

महत्वपूर्ण उपलब्धि की प्राप्ति : कोचीन शिपयार्ड में पेलाजिक विंड सर्विस लिमिटेड, साइप्रस केलिए सीएसओवी हेतु स्टील कट्टिंग समारोह

एक महत्वपूर्ण घटना में जो नवाचार, सतत प्रौद्योगिकी और वैश्विक सहयोग को जोडता है, भारत के प्रमुख पोत निर्माण और पोत मरम्मत संगठन, कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड (सीएसएल) ने प्रतिष्ठित यूरोपीय ग्राहक मे. पेलाजिक विंड सर्विस लिमिटेड, साइप्रस केलिए दो अत्याधुनिक कमीशनिंग और सर्विस ऑपरेटिंग जलयान (सीएसओवी) केलिए स्टील कटिंग समारोह के साथ एक महत्वपूर्ण उपलब्धि चिह्नित किया। श्री श्रीपद नाइक, माननीय पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग एवं पर्यटन राज्य मंत्री अपनी गरिमामयी परोक्ष उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढायी और इस अवसर पर अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, सीएसएल, श्री मधु एस नायर, सीएसएल के वरिष्ठ अधिकारीगण और मेसर्स पेलाजिक विंड सर्विस लिमिटेड, साइप्रस के प्रतिष्ठित मालिकों ने भी अपनी गरिमामायी उपस्थिति सुनिश्चित की । यह आयोजन भारत के पोत निर्माण उत्कृष्टता में एक महत्वपूर्ण कदम है ।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

सीएसएल ने सत्यनिष्ठा और पारदर्शिता पर ज़ोर देते हुए सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया। अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, सीएसएल ने वरिष्ठ अधिकारियों, कार्यपालकों और कर्मचारियों की उपस्थिति में 'भ्रष्टाचार को ना कहें: राष्ट्र केलिए प्रतिबद्ध' नारे के साथ सतर्कता जागरूकता सप्ताह को मनाने की शपथ दिलाई।

रातें भी अच्छी होंगी, मंजर भी अच्छा होगा,
आगे बढ़ने की हिम्मत तो कर, सब कुछ अच्छा होगा।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

सीएसएल ने 'महिलाओं में समावेशन / निवेश को प्रेरित करें : प्रगतिशील बनें' विषय के साथ अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस बनाया । लिसिमोल जे, सहायक कृषि निदेशक, केरल सरकार, मुख्य अतिथि थी । सीएसएल के निदेशक श्री बिजोय भास्कर ने समारोह की अध्यक्षता की, सीएसएल के वरिष्ठ अधिकारियों ने समारोह में भाग लिया । कोचीन शिपयार्ड से 400 से अधिक महिला कर्मचारियों ने कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया ।

तकनीकी लेख

"स्काई"

अश्विन विजित
हष्ना पी एम का सुपुत्र

जब समय आया तो मानवता नष्ट हो गई। उन्होंने परिणामों के बारे में सोचे बिना ही विध्वंसक को बना दिया।

वर्ष 2105, जीएक्स7 (कोड आईडी ''द ग्रेट प्रोग्राम डिजास्टर'' के कारण खोजने की यात्रा पर है। वह चीन के शेन्ज़ेन में एक परित्यक्त कारखाने में था। उन्होंने पत्थरों के अवशेष के अंदर खोज की, 12 घंटों में शिलालेखों के साथ धातु के टुकड़ों के छोटे टुकड़े मिले, उन्हें 30 टुकड़े मिले। सभी टुकड़ों को एक क्रम में व्यवस्थित किया जिसमें ''तोपें'' लिखा था । वह जानता था कि दुनिया का एकमात्र तोपखाना कारखाना रूस में है, इसलिए वह अपने वाहन में बैठा और रूस के लिए रवाना हो गया। रूस पहुंचने में केवल 21 घंटे लगे। रूसी तोपखाने कारखाने में, उन्होंने एक सेंट्रीगण के बॉडी पर ''मेड विद एआई'' देखा। उसने मन ही मन सोचा ''कैसे यह सृष्टि इस पृथ्वी को बंजर बना सकती है।'' अचानक उसने एक बटन देखा जो चमक रहा था, जब उसने उसे दबाया तो एक क्रायो पॉड निकला और उसने क्रायो पॉड के अंदर एक युवक को देखा। वह उसे खोलने में सक्षम नहीं था । इसलिए, उसने कारखाने में किसी भारी चीज की तलाश की और उसे एक स्लेड़जहैमर दिखाई दिया, उसने पॉड के ढक्कन पर झपट्टा मारा और पॉड को दो टुकड़ों में तोड़ दिया, युवक खांसते हुए पानी से निकला। (लोग अपने चयापचय को धीमा करने के लिए ठंडे पानी में सोते हैं)। सबसे पहले उस व्यक्ति ने पूछा, ''इस कारखाने को क्या हुआ!'' जीएक्स7 ने कहा कि यह फ़ैक्टरी शायद ''ए आई द्वारा नष्ट कर दी गई थी'' तब उस आदमी ने पूछा, ''अन्य फ़ैक्टरियों के बारे में क्या?'' तब जीएक्स7 ने कहा कि दुनिया खंडहर हो गई है, सभी फैक्टरियाँ नष्ट हो गई होंगी। तब उस युवक ने कहा कि वहाँ है एक स्थान जिसके बारे में कोई नहीं जानता। यह इतना छिपा हुआ

है कि मेरे पास छिपे हुए कारखाने का एक नक्शा है। आपको कारखाने के अंदर जाना होगा और मेनफ्रेम को नष्ट करना होगा। कुछ समय के बाद जीएक्स7 ने पूछा ''क्या मुख्य कंप्यूटर का नियंत्रण सभी अश्र रोबोट और अख रचनाओं में हे''? तब युवक ने कहा ''हॉ, मेनफ्रेम अख के साथ प्रबंधित सभी रचनाओं को नियंत्रित करता है। यह अख ड्रोन और ह्यूमनॉइड रोबोट द्वारा भी संरक्षित है जो एक परेशानी है।'' और ''स्काई'' नामक युवक ने कहा ''एक ईएमपी, अख ड्रोन, तोपखाने और ट्रैकर्स कंप्यूटर के नियंत्रण को बाधित कर सकता है क्योंकि वे वायरलेस तरीके से सूचना प्रसारित करते हैं, लेकिन ह्यूमनॉइड रोबोट परेशानी पैदा कर सकते हैं क्योंकि वे केबल से जुड़े हुए हैं और हथियारों का उपयोग कर सकते हैं। तो, आपको एक ढाल की आवश्यकता हो सकती है जो आप पर चलाई जाने वाली गोलियों से बचा सके। फिर जीएक्स7 ने ''स्काई'' से पूछा कि ''क्या वह यात्रा पर आना चाहता है?'' लेकिन उसने यह कहकर इनकार कर दिया कि उसे अपने खोए हुए परिवार के सदस्यों को ढूँढना है। ईएमपी बनाने के लिए आवश्यक सामग्री केवल भारत में उपलब्ध थी, इसलिए, जीएक्स7 न्यूयॉर्क से 10 घंटे के भीतर भारत पहुँच गए।

भारत पहुँचने के बाद, उन्होंने ईएमपी बनाने के लिए कैपेसिटर, ट्रांसफार्मर, ट्रिगर और तांबे के तार के कॉइल आदि जैसी वस्तुओं को इकट्ठा करना शुरू कर दिया।

ईएमपी को खोजने और असेंबल करने में एक महीना लग गया। ईएमपी के विशाल आकार और वज़न के कारण, वह इसे हिला नहीं सकते थे इसलिए उन्होंने इसे अलग कर दिया और 5 वर्षों तक ईएमपी हो गया, घटकों पर शोध किया और इसे छोटा और हल्का बनाने में सफल हो गया। फिर वह टूटे हुए संसद भवन के अंदर अपने छिपे हुए शस्त्रागार की ओर गए। उसने अपने पास मौजूद सभी टुकड़ों को एक ढाल में ढालना शुरू कर दिया, जिससे यह लगभग अटूट हो गया। उन्होंने अपनी सबसे मजबूत बंदूकों से उस ढाल पर गोली चलाकर उस चीज़ की पुष्टि की। इसने सभी हमलों का प्रतिरोध किया और कोई खरोंच का निशान नहीं पाया। वह तैयार था। लेकिन वह भूल गया कि उसे हमला करने के लिए एक हथियार चाहिए था इसलिए उसने 2 साल और बिताए, स्क्रैप इकट्ठा किया और उन्हें भारी बंदूकें, जलती तलवारें, प्लाज्मा शुटर आदि जैसे अधिक मजबूत और उपयोगी प्रकार के उपकरण बनाने में बिताया.... आखिरकार, 8 साल की तैयारी के बाद, वह तैयार था। वह छिपे हुए कारखाने तक मानचित्र का अनुसरण करते हुए पहुंचा। यह जीएक्स7 के लिए बहुत बड़ा काम था क्योंकि वह आपदा के बाद युद्ध में नहीं गया था। वह खुद को ढकने के लिए अपनी ढाल का उपयोग करते हुए कारखाने के अंदर गया, और ज़मीनी बलों पर विस्फोटक फेंककर उन्हें एक पल में नष्ट कर दिया। उसने ह्यूमनॉइड्स के साथ लड़ाई की और 5 घंटे के भीषण युद्ध के बाद, वह ह्यूमनॉइड्स को हराने में सफल हो गया और ''स्काई'' के निर्देशानुसार मेनफ्रेम कंप्यूटर को नष्ट कर दिया। कुछ देर आराम करने के बाद, वह लैब/फैक्टरी के चारों ओर घूमा। सभी कृतियों को देखा और उन्होंने वहाँ ''प्रो. स्काई, 2006-2098'' नाम देखा। जब जीएक्स7 ने वह नाम देखा तो उसके होश उड़ गए कि एक युवक ने यह सब बनाया है। लेकिन फिर उन्हें याद आया कि कभी-कभी ''स्काई'' का शरीर कुछ सेकंड के लिए विकृत हो जाता हुआ था, और तभी उन्हें एहसास हुआ ''स्काई'' कि मूल निर्माता की मृत्यु बुढ़ापे के कारण हुई होगी। युवा ''स्काई'' सिर्फ एक होलोग्राम था।

कहानी

एक रात बाढ़ की

मेघा मनोहरन
सुजित एन पी की सुपत्नी

एक गाँव में एक छोटी सी प्यारी सी लड़की थी और उसका नाम था ''पल्लवी''। पल्लवी छह साल की थी। वो शहर के एक विद्यालय में दूसरी कक्षा में पढ़ रही थी। चारों तरफ पेड़-पौधे और हरियाली से हरा-भरा सा खेत और उसी के बीच में था पल्लवी का सुंदर सा घर। ''पल्लवी'' के घर में उसके माँ-बाप, दादा-दादी और उसकी छोटी सी बहन थी जिसकी उम्र तो केवल तीन महीने थी। ''पल्लवी'' के पापा शहर में काम करते थे। पल्लवी स्कूल से आने के बाद अपनी माँ के साथ छोटी बहन का ख्याल रखती थी और वो मन ही मन चाहती थी कि उसकी बहन जल्दी से बड़ी हो जाए ताकि वह उसके साथ खेल सकें। ''पल्लवी'' बहुत अच्छे से चित्र खींचती थी। उसकी ज़िन्दगी तो बहुत ही खुशी से बीत रही थी। तभी वो दिन आ गया जिसे वो कभी भी भूल नही सकती थी। पल्लवी रोज़ की तरह स्कूल जाने के लिए तैयार हो गयी दो-तीन दिन से लगातार बारिश हो रही थी उसे देखकर ऐसा लगा जैसे बारिश को जाने का मन ही नहीं है। उसी दिन सुबह पल्लवी के पापा को काम के लिए जाना था। वो तो हफ्ते में एक ही दिन घर पर आते थे। जाते समय माँ ने पापा से पूछा भी था कि ''बारिश कुछ ज़्यादा ही है क्या आज आपको जाना ज़रूरी है'' लेकिन पल्लवी के पापा को तो जाना ज़रूरी था। शाम का समय हो गया था पल्लवी आज बारिश के कारण जल्दी स्कूल से वापस आ गई थी। इतनी जोर की बारिश थी कि चारों तरफ पानी भरने लगा था। पल्लवी के घर के चारों तरफ खेत होने के कारण वहाँ जल्दी ही पानी भर गया था।

पल्लवी पानी को देखकर इतनी खुश हो गई थी कि उसे उसमें खेलने का मन हो रहा था। और उसी समय उसने अपने दादा-दादी से पूछा कि ''दादा क्या पानी हमारे घर के अंदर आएगा'' तब दादा जी ने मुस्कुराते हुए कहा ''नहीं बिटिया पानी तो बस हमारे सड़क तक आएगा और उसी तरह चला भी जाएगा।'' पानी तो बढ़ता ही जा रहा था सभी लोग परेशान होने लगे थे। पल्लवी के दादा-दादी भी अपनी ज़िन्दगी में पहली बार ऐसे पानी को बढ़ते हुए देखा था। आसपास के सभी लोग वहाँ से चले गए थे वहाँ और कोई भी नहीं था रात होने लगी थी ऐसे में अचानक से पल्लवी की आवाज़

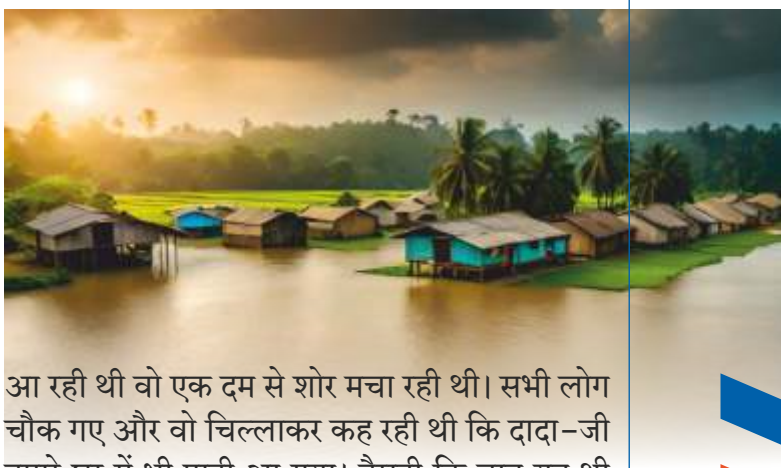

आ रही थी वो एक दम से शोर मचा रही थी। सभी लोग चौक गए और वो चिल्लाकर कह रही थी कि दादा-जी हमारे घर में भी पानी आ गया। हैरानी कि बात यह थी कि पूरे घर के अंदर पानी आ रहा था। इतने में पूरे गाँव का बिजली भी चला गया। आस-पास में ओर कोई नहीं था सब वहाँ से चले गए थे। पूरे कमरे में, रसोई घर में, सब जगह पानी भर गया था और पूरा का पूरा सामान भी पानी में डूबने लगा था। इतने में दादी ने कहा कि पानी तो बढ़ता आ रहा है बच्चों को लेकर छत पर चले जाओ छत पर तो केवल एक छोटा-सा कमरा था और वहाँ दादा-दादी, माँ, पल्लवी और उसकी छोटी बहन को लेकर बैठ गई। आगे क्या होगा इसका कुछ अंदाज़ा नहीं था इतनी तेज़ तूफान भी चल रही थी कि मानो पूरे घर को उड़ाकर ले जाएगा इतने में पूरा घर पानी से डूबता जा रहा था। पल्लवी तो डर के कारण रो रही थी खाने के लिए भी कुछ भी नहीं था सब कुछ पानी में डूब गया था। पल्लवी की माँ ने जल्दी पापा को फोन किया तब पता चला कि फोन में चार्ज नहीं था। अंधकारवाले उस दिन को पल्लवी कभी भी अपनी ज़िन्दगी में भूल नहीं पाएगी दूसरी तरफ तो पल्लवी के पापा को खबर मिल गई थी कि पूरा गाँव पानी में डूब गया है और घर के आस-पास कोई भी नहीं है। पल्लवी की माँ के मन में अजीब सा डर आने लगा, इतने में दूर से कुछ आवाज़ सुनाई देने लगी तभी पल्लवी चिल्लाकर कहने लगी कि ''मेरे पापा आ गए मेरे पापा आ गए'' सबको विश्वास ही नहीं हो रहा था लेकिन बात तो सच थी पल्लवी के पापा एक बडे से नौके में आ रहे थे। पल्लवी के पापा ने तो उसे अपने बाहों में ले लिया और सभी को वहाँ से बचाकर ले गए। अभी भी पल्लवी के मन में उसके पापा का चित्र एक हीरो की तरह बसा हुआ है।

लेख

एक अविस्मरणीय दिन

बबीता भास्कर
अनीष वी आर की सुपत्नी

''अम्मा, मुझे लगता है कि आपको यह करना चाहिए!'' मुझे अभी भी याद है कि मेरे पति ने मेरी माँ को एक वरिष्ठ महिला क्लब का विवरण दिखाया था, जिसमें 60 वर्ष से अधिक उम्र की महिलाओं के लिए यादगार अनुभव का वादा किया गया था। हालाँकि वह शुरू में झिझक रही थी, लेकिन मेरे द्वारा प्रोत्साहित किए जाने पर उसने इसे आज़माने का फैसला किया क्योंकि वह ऐसा कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं कर रही थी। सप्ताहांत और इस शर्त के साथ कि मुझे उसके साथ जाना होगा। मैं अपनी एक शर्त पर सहमत हुआ – कि मैं केवल एक साथी और एक फोटोग्राफर बनूंगा; उसे यात्रा ऐसे करनी होगी मानो वह अकेली यात्री हो। हमें सुबह 9:00 बजे उठाया गया और युवा टूर समन्वयक ने गर्मजोशी से स्वागत किया, जिन्होंने पुष्टि की कि हमें शाम 7 बजे तक घर वापस छोड़ दिया जाएगा।

आठ ऊर्जावान महिलाओं के हमारे समूह पर दिन उज्ज्वल और धूप से चमक रहा था, जो सब्जी के खेत में एक दिन की सैर पर निकले थे। जब हम 40 मिनट के ड्राइव के बाद फार्म के प्रवेश द्वार पर एकत्र हुए, तो हमारा उत्साह स्पष्ट था, ताज़ी उपज की दुनिया में डूबने के लिए तैयार थे।

फार्म ने खुली बांहों से हमारा स्वागत किया, इसके हरे-भरे खेत मुख्य भवन के पीछे फैले हुए थे जिसमें एक डाइनिंग हॉल और तीन शयनकक्ष थे। हवा में ही अलग गंध आ रही थी। जब हमने जैविक खेती के प्रति अपने जुनून को साझा करने वाले जानकार किसानों के नेतृत्व में अपना निर्देशित दौरा शुरू किया तो हमारी आंखें जिज्ञासा और प्रत्याशा से चमक उठीं।

हम सबसे पहले ग्रीनहाउस में रुके, जहाँ हमने टमाटर के पौधे, खीरे की लताएँ और रंग-बिरंगी बेल मिर्च देखीं। हमने ध्यान से सुना जब किसानों ने मिट्टी के स्वास्थ्य, फसल चक्र और प्राकृतिक कीट नियंत्रण विधियों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए जैविक खेती के सिद्धांतों को समझाया।

थोड़े से प्रोत्साहन के साथ, मेरी माँ ने अपने हाथों को गंदा करने का फैसला किया और विभिन्न कृषि गतिविधियों में शामिल होने के लिए दस्ताने और टोपियाँ पहन लीं। मैंने सब्जियों की क्यारियों में कुछ

पौधे रोपने में भी मदद की, ध्यान से उन्हें पोषक तत्वों से भरपूर मिट्टी में रोपा। अन्य लोग तुलसी, पुदीना और मेहंदी की सुगंधित सुगंध का आनंद लेते हुए, जड़ी-बूटियों के बगीचे की ओर रुक जाते थे।

जैसे-जैसे महिलाएँ साथ-साथ काम करती गईं और धीरे-धीरे वातावरण में सौहार्द की भावना भर गई और पूरे फार्म में विभिन्न प्रकार की हँसी गूंजने लगी। उन्होंने अपने स्वयं के बागवानी अनुभवों की कहानियों की अदला-बदली की, स्वस्थ पौधों के पोषण और अधिकतम पैदावार के लिए युक्तियों और युक्तियों का आदान-प्रदान किया गया। सुबह की व्यावहारिक खेती की गतिविधियों के बाद, अब खेत से टेबल पर दोपहर के भोजन का समय था।

हम एक बड़े आम के पेड़ के नीचे रखी एक लकड़ी की मेज़ के चारों ओर बैठे थे, जहाँ ताज़ी कटी हुई सब्जियों की दावत हमारा इंतजार कर रही थी। कुरकुरा सलाद, चेरी टमाटर, कुरकुरे खीरे, और जीवंत साग को घर की बनी ड्रेसिंग और कारीगर ब्रेड द्वारा पूरक किया गया था। फार्म के शेफ ने स्वादिष्ट व्यंजनों में मौसमी सब्जियों को शामिल करने के रचनात्मक तरीकों का प्रदर्शन किया, जिसमें भुनी हुई जड़ वाली सब्जियों की मेडली से लेकर स्वादिष्ट भरवां मिर्च तक शामिल हैं। हमने सभी व्यंजन आज़माए, इस विश्वास के साथ कि ये कीटनाशक-मुक्त वातावरण में उगाए गए थे।

संतुष्ट भूख और नई ऊर्जा के साथ, हम प्रकृति के दृश्यों और ध्वनियों का आनंद लेते हुए, खेत के चारों ओर इत्मीनान से टहलने निकल पड़े। हमने धूप में चूमते चावल के खेतों की प्रशंसा की, खिलते फूलों के बीच मधुमक्खियों को भिनभिनाते हुए देखा, और एक पत्ते पर आराम कर रही तितली की सरल सुंदरता की सराहना करने के लिए रुक गए। जैसे-जैसे दिन ढ़लने लगा, हम घर के मुख्य हॉल में चिंतन सत्र के लिए एकत्र हुए, प्रकृति से जुड़ने और एक-दूसरे के साथ कुछ सार्थक क्षण साझा करने के अवसर के लिए आभार व्यक्त किया। खेत में हमारे एक दिन की सैर एक यादगार अनुभव था, ऊपर से ताज़ा भोजन और स्वच्छ हवा भी थी। यह एक अच्छा दिन था और मेरी माँ ने कहा कि घर वापस आने की यात्रा एक बार के लिए बहुत छोटी लग रही थी।

अनमोल वचन

कबीर के दोहे

दोहा: काल करे सो आज कर, आज करे सो अब। पल में परलय होएगी, बहुरि करेगा कब ।।

अर्थ: कबीर कहते हैं कि जो काम कल करना है, उसे आज ही कर लो और जो आज करना है, उसे अभी कर लो। पल भर में प्रलय (विनाश) हो सकता है, फिर तुम कब करोगे? यह दोहा समय की महत्ता और समय का सदुपयोग करने पर बल देता है।

दोहा: बडा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर। पंछी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर ।।

अर्थ: कबीर कहते हैं कि बड़े होने का कोई महत्व नहीं है, जैसे खजूर का पेड़ बडा तो होता है लेकिन उसकी छाया पंछियों को नहीं मिलती और उसके फल भी दूर होते हैं। इसका अर्थ है कि केवल बडा होना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि दूसरों के लिए उपयोगी होना भी महत्वपूर्ण है।

कहानी

जुहो-बोल जाला!

संपत कुमार पी एन
सलाहकार (सीएसआर)

हिमालय की घाटियों में एक चिड़िया निरंतर रट लगाती है ..जुहो, जुहो, जुहो।

अगर तुम हिमालय गए हो तो तुमने इस चिड़िया को सुना होगा। इस दर्द भरी पुकार से हिमालय के सारे यात्री परिचित है।

घने जंगलों में, पहाड़ी झरनों के पास, गहरी घाटियों में, निरंतर सुनाई पड़ता है जुहो, जुहो, जुहो, और एक रिश्ता दर्द का जो पीछे छूट जाता है।

इस पक्षी के संबंध में एक मार्मिक लोककथा है। किसी ज़माने में एक अत्यंत रूपवती पहाड़ी कन्या थी। जो वर्ड्सवर्थ की लूसी की भांति झरनों के संगीत, वृक्ष के मर्मर और घाटियों की प्रतिध्वनियों पर पली थी। लेकिन उसके पिता गरीब थे और लाचारी में उसने अपनी कन्या को मैदानों में ब्याह दिया।

वो मैदान जहाँ सूरज आग की तरह तपता है और झरनों और जंगलों का जहाँ कोई नाम और निशान नहीं।

प्रीतम के स्नेह की आढ़ में वर्षा और सर्दी के दिन तो किसी तरह बीत गए और फिर आए सूरज के तपते हुए दिन। उसने पीहर जाने की प्रार्थना की पर सास ने इंकार कर दिया। ऐसी आग उसने कभी जानी न थी। पहाड़ों के झरनों के पास पली थी। उस शीतलता में पड़ी थी। हिमायल उस के रोम रोम में बसा था।

वो धूप में तपे गुलाब की तरह गुम्लाने लगी। श्रृंगार छूटा वेश विन्यास छूटा, खाना पीना भी छूट गया। अंत में सास ने कहा .. ''अच्छा कल तुम्हें भेज देंगे।

सुबह हुई, उसने आकुलता से पूछा ''जुहो''.जाऊं.? पहाड़ी भाषा में अर्थ रखता है जाऊं ? उसके सास ने कहा ''बोल जाला''.. कल सुबह जाना।

वो और भी मुरझा गई। एक दिन और किसी तरह कट गया।

दूसरे दिन उसने पूछा, जुहो.. सास ने कहा बोल जाला।

रोज़ वो अपना सामान समारती, रोज़ प्रीतम से विदा लेती, रोज़ सुबह उठती, पूछती जुहो और रोज़ सुनने को मिलता बोल जाला।

एक दिन जेठ महीने का तपतपा लग गया। धरती धूप में चटक गई, वृक्षों पर चिड़िया लू खाकर गिरने लगे.. । उसने अंतिम बार सूखे कंठ से पूछा जुहो, उसकी सास ने बोला; बोल जाला।

फिर वह कुछ भी न बोली !

शाम को एक वृक्ष के ऊपर वो प्राणहीन मृत पाई गई। गर्मी से काली पड़ गई थी।

वृक्ष की डाली पर एक चिड़िया बैठी थी जो गर्दन हिला के बोली .. जुहो और उत्तर की प्रतीक्षा के बिना अपने नन्हे पंख फैलाकर हिमाछादित हिम शिखरों की तरफ उड़ गई।

तब से आज तक ये चिड़िया पूछती है जुहो, जुहो और एक कर्कश स्वर पक्षी उत्तर देता है बोल जाला और वो चिड़िया चुप हो जाती।

ऐसी पुकार हम सबके मन में है। न मालूम किस शांत हरियाली घाटी से हम आए। न मालूम किस और दूसरी दुनिया के हम वासी है।

और एक निरंतर प्यास भीतर है। अपने घर लौट जाने की और हिमाच्छाद शिखरों को छूने की।

ओशो द्वारा कथित एक सुंदर कहानी .....

यात्रावृत

इमरान भाई का कश्मीर

राकेश एन
प्रबंधक

हमने केरल से पूर्वानुमान सुना था कि 29 और 30 मार्च को कश्मीर में बारिश होगी। वह दिन था शुक्रवार, 29 मार्च जब हमने कोच्चि से दिल्ली होते हुए कश्मीर तक की यात्रा शुरू की। जब हम कश्मीर हवाई अड्डे पर उतरे तो ऐसा लगता था मानो वायु सेना नियंत्रित हवाई अड्डे में गर्मी को प्रवेश करने की अनुमति नहीं है। ठंड की गंभीरता को तब समझा जा सकता है जब विमान का पिछला दरवाज़ा खुला होने के बावजूद कोई भी यात्री उस दरवाज़े से नहीं जा रहे थे। आमतौर पर भारत में लोग दरवाजा खुलने से पहले ही फ्लाइट से उतरने की कोशिश करते हैं। हर कोई एयरोब्रिज के सामने के दरवाजे से जुड़ने का इंतजार कर रहे थे क्योंकि तब वे सीधा वातानुकूलित टर्मिनल में जा सकते हैं। जब तक हम टर्मिनल पर पहुंचे, मेरे फोन की घंटी बजी। दूसरी तरफ से हिंदी में ''मैं, इमरान बोल रहा हूँ''। ट्रैवल एजेंट ने हमें पहले ही सूचित कर दिया है कि इमरान हमारे टेम्पो ट्रैवलर के ड्राइवर का नाम है । मैंने उसे जवाब दिया ''ठीक है इमरान भाई हम सामान लेकर बाहर आ रहे हैं''। हम सब भारतवासी भाई-बहन हैं जो हमने भारत की प्रतिज्ञा से सीखा है। यह बिल्कुल अद्भुत है कि हजारों मील दूर रहने वाले लोग एक-दूसरे को भाई कह सकते हैं।

श्रीनगर एयरपोर्ट और पार्किंग ग्राउंड पूरी तरह से भीग गया । जब उनसे पूछा गया कि क्या कल भी बारिश होगी, तो हमारे टेम्पो ट्रैवलर ड्राइवर इमरान भाई ने एक वाक्य में सार्वभौमिक सत्य बताकर सुपरस्टार बन गए, ''बॉम्बे में फैशन और कश्मीर में प्रकृति हमेशा बदलती रहती है''। पहले से ही इमरान भाई का रूप और वेशभूषा बिल्कुल सुपरस्टार जैसा है। डायलॉग बोलने में ही नहीं, देखने में भी सुपरस्टार जैसे हैं इमरान भाई। कश्मीर में कौन दिखने में सुपरस्टार जैसा नहीं है? खूबसूरत लोगों से भरी खूबसूरत जगह। 20 मिनट की यात्रा के बाद हम श्रीनगर शहर में अपने होटल पहुँच चुके थे।

दूसरे दिन सुबह हम दूधपथरी गए। यात्रा कार्यक्रम के अनुसार, दूसरा दिन श्रीनगर के अंदर के स्थानों के लिए निर्धारित किया गया था। लेकिन हमारे इमरान भाई ने बताया कि चूँकि आज श्रीनगर में बारिश हो सकती है, इसलिए दूधपथरी जैसी ऊँचाई वाली जगह पर जाना बेहतर होगा। जब कम ऊंचाई वाले इलाके में बारिश होती है, तब ऊंचाई वाले इलाकों में बारिश की जगह बर्फबारी होगी। क्या खेलने के लिए बर्फ उपलब्ध होगी? हमारा एकमात्र प्रश्न वह था। केरल से कश्मीर जाने का प्राथमिक उद्देश्य बर्फ से खेलना है। इमरान भाई

ने बताया कि दूधपथरी में हमारे टेम्पो ट्रैवेलर को केवल पार्किंग ग्राउंड तक जाने की अनुमति थी। उसके बाद हमें सभी इलाकों के वाहन किराये पर लेना पड़ेगा। अन्य उपलब्ध विकल्प घुड़सवारी है। 3 से 4 किलोमीटर की छोटी सी यात्रा करके हम पूरी बर्फ से ढकी एक जलधारा के पास पहुँचे। बर्फ से ढकी भूमि को देखना सपना सच होने जैसा क्षण था। जब हम जलधारा के पास समय बिता रहे थे तो हमने देखा कि कुछ वाहनों को जलधारा तक जाने की अनुमति है। हम अपना वाहन जलधारा तक क्यों नहीं ले जा सके? कश्मीर पर्यटन पर अत्याधिक निर्भर है और उन्होंने पर्यटकों का शोषण करने का तरीके और साधन बनाए हैं। यदि टेम्पो ट्रैवलर पर्यटक स्थल के मध्य तक जाता है तो इन सभी इलाकों के वाहन संचालकों और एजेंटों को कोई अवसर नहीं मिलेगा। सब कुछ उनकी आजीविका के लिए है। और इमरान भाई भी जानबूझकर इसका समर्थन कर रहे हैं। हो सकता है कि उसे इन एजेंटों से हिस्सा मिल रहा हो। सत्य कौन जानता है। दोपहर तक हम दूधपथरी से वापस श्रीनगर पहुँच गए। फिर हमने इंदिरा गांधी ट्यूलिप फूल उद्यान का दौरा किया। ट्यूलिप गार्डन को जनता के लिए खोले हुए अभी चार दिन ही हुए थे। हमने इस आइटम को अपनी बकेट लिस्ट से हटाकर खुद को भाग्यशाली माना।

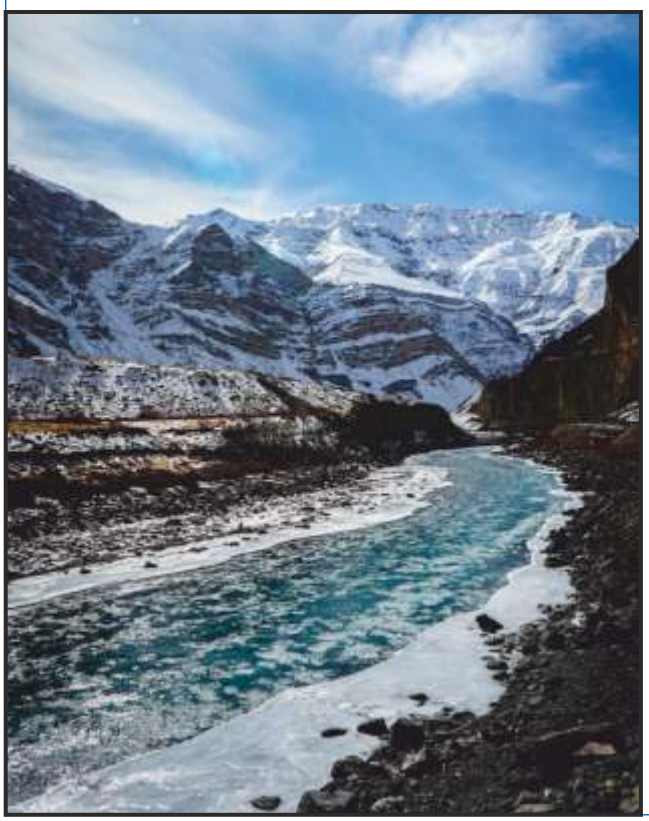

तीसरे दिन हमने सोनमार्ग जाने की कोशिश की थी। लेकिन बर्फबारी के कारण रास्ता बंद हो गया था। इसलिए डेढ़ घंटे की यात्रा के बाद आधे रास्ते से हमें वापस श्रीनगर लौटना पड़ा। श्रीनगर वापसी के रास्ते में हम बरवाला झरना जैसी कुछ दिलचस्प जगहों पर गए थे। बरवाला झरना सबसे सुंदर है और यह कश्मीर के सबसे बड़े मानव निर्मित झरनों में से एक है । सबसे दिलचस्प बात यह है कि इस झरने में कश्मीर के अन्य पर्यटन स्थलों की तरह भीड़भाड़ नहीं होती है। दोपहर तक श्रीनगर पहुँचकर हमने मुगल गार्डन और शंकराचार्य मंदिर देखा। हमने शाम के समय डल झील में शिकारा नाव की सवारी की। डल झील घाट नंबर 9 पर एक प्रसिद्ध फ्रेंच बेकरी है। शाम को होटल लौटते समय हमने उस बेकरी से कुछ प्रसिद्ध मिठाइयाँ खरीदीं।

चौथे दिन हमने श्रीनगर शहर में अपने होटल की जाँच की और पहलगाम की ओर अपनी यात्रा शुरू की। रास्ते में इमरान भाई ने हमें एक ड्राई फ्रूट की दुकान पर छोड़ा, जहाँ हमने ''प्रामाणिक कहवा'' का एक गिलास लिया। अन्य सभी चीजों की तरह, कहवा, सूखे मेवे भी बहुत अधिक व्यावसायीकरण और अत्याधिक महंगा हैं। रास्ते में अगला गंतव्य सेब के जूस की दुकान थी। अप्रैल वह महीना है जब सेब के पौधों पर फूल आते हैं। और फल सितंबर तक पक जाते हैं। यदि किसी को कश्मीर से ताजा सेब चाहिए, तो उन्हें सितंबर में अपनी यात्रा की योजना बनानी होगी। फिर सवाल यह आता है कि इन जूस की दुकानों को सेब का जूस बनाने के लिए सेब कहां से मिलता है? वे ठंडे कमरों में संरक्षित सेबों का उपयोग कर रहे हैं। हम जम्मू से कश्मीर राष्ट्रीय राजमार्ग पर हर 200 मीटर की दूरी पर सशस्त्र बलों और जम्मू कश्मीर पुलिस की उपस्थिति देख सकते हैं। वे सभी भारी हथियारों से लैस हैं। किसी भी अवांछित स्थिति से निपटने के लिए उनके बख्तरबंद वाहन पास में ही पार्क किए जाते हैं। पहलगाम में हमने अरु घाटी, चंदनवाड़ी और बेताब घाटी का दौरा किया था।

पांचवें दिन हमारी सबसे लंबी यात्रा थी। यानी पहलगाम से गुलमार्ग तक। एक बार में यह 140 किलोमीटर की दूरी थी। जब हम तनमार्ग (गुलमार्ग से पहले एक जगह) पहुंचने वाले थे, तो हमारे ड्राइवर इमरान भाई ने सड़क के किनारे टेम्पो ट्रैवलर रोक दिया

और हमें टैक्सी पकड़ने और उस टैक्सी कार में अपनी यात्रा जारी रखने के लिए कहा। इमरान भाई यात्रा कार्यक्रम के अनुसार कह रहे थे, गुलमार्ग का दर्शन यात्रियों द्वारा बुक की गई टैक्सी से करना है। हमने बताया कि हमने किस तरह से बुकिंग की थी और हमारी यात्रा कार्यक्रम ऐसा नहीं था। हमारी यात्रा कार्यक्रम के अनुसार, पूरा गुलमार्ग शामिल है। तब तक टैक्सी ड्राइवर भी अपनी टैक्सी कार के साथ आ गया। हम पहली बार इमरान भाई की बात मानने को तैयार नहीं थे। लगभग 45 मिनट की चर्चा के बाद इमरान भाई भी इस बात पर सहमत हुए कि यात्रियों को सड़क किनारे छोड़ना उचित नहीं है। हालाँकि उसकी ट्रैवल एजेंसी ने उसे कुछ और ही बताया था, फिर भी वह हमें हमारे गुलमार्ग होटल के पास ले गया। गुलमार्ग में हमारा होटल अफरवाट पहाड़ी की तल में बर्फ के मैदान पर था। दूसरे दिन हमने इमरान भाई से जो सवाल पूछा वह यह था कि क्या खेलने के लिए बर्फ उपलब्ध होगी? आज हमें पूरा मैदान बर्फ से भरा हुआ मिला। और समय बिताने के लिए पूरी दोपहर। कोई जल्दी नहीं कोई टेंशन नहीं, हमारा रात्रि विश्राम भी उसी बर्फीले मैदान पर स्थित होटल में है। पूरी दोपहर बर्फ के मैदान में बीती।

छठे दिन हमने दोपहर से पहले होटल खाली कर दिया और श्रीनगर के लिए निकल पड़े। दोपहर के भोजन के समय तक हम श्रीनगर के होटल में चेक इन कर चुके थे। शाम तक हम श्रीनगर की प्रसिद्ध शॉपिंग स्ट्रीट पर गए और विंडो शॉपिंग की। शॉपिंग स्ट्रीट ऐसी नहीं लग रही थी मानो वे भारत में हों। खरीदी गई एकमात्र वस्तु मिश्रित-पशमीना शॉल थी। लगभग सभी लोग लंबी यात्रा से थक गए थे और होटल में आराम कर रहे थे।

सातवें दिन हमारे पास यात्रा कार्यक्रम के अनुसार कोई कार्यक्रम नहीं था। हमने दोपहर तक आराम किया और फिर होटल से चेकआउट किया। सीधे हवाई अड्डे गए और अपने इमरान भाई को अलविदा कहा। इमरान भाई ने हमसे कभी नहीं पूछा 'मज़ा आया?' कश्मीर में 'मज़ा आया?' एक कोड शब्द है जो यह संकेत देता है कि वे हमसे टिप (पैसा) चाहते हैं। लेकिन फिर भी हमने ख़ुशी से इमरान भाई को कुछ पैसे दिए। हमने कश्मीर में जो कुछ भी देखा, अच्छा या बुरा, वह इमरान भाई ने हमें दिखाया है। इसलिए इस यात्रा वृतांत का नाम यह रखा जा रहा है ''इमरान भाई का कश्मीर'' ।

लेख

माँ से पुनर्मिलन

प्रिया ए आर
वाणिज्यिक सहायक

उस समय मैं शायद दूसरी या तीसरी कक्षा में पढ़ रही थी। मन के अंदर एक गहरे घाव के रूप में बस जाने के कारण आज भी वो सब याद है। मेरी मां का घर इडुकी जिले के तोप्रांकुडी नामक जगह पर था। मैं और मेरी मां उस दिन मां के घर जा रहे थे। मेरे घर से लगभग 5 घंटे का सफर था वहां तक। दो तीन बस पकड़कर वहां तक जाना था। चेरुतोणी से तोप्रांकुडी तक अलग बस पर चढना था। दोपहर का समय था इसलिए मैंने और मां ने होटल से खाना खाया। बिल देते समय बस स्टॉप में एक बस आकर खड़ी हो गई। मां ने मुझसे कहा कि जाओ जल्दी जाकर पूछों कि वो बस क्या तोप्रांकुडी को जाएगी ? मेरे छोटे दिमाग में वो सब समझ नहीं आया। मेरे मन में उस समय यह विचार आया कि दौड़ कर बस पर चढ़कर मां के लिए भी एक सीट पकड़ लूं। भाग कर मैं बस पर चढ़ गई। बस में कुछ ज़्यादा भीड़ थी। सीट नहीं था। लोगों के चढ़ने के बाद बस चल पड़ी। मां नहीं आई, चढ़ी भी नहीं। मेरा मन घबराने लगा। बस जाने लगी। मेरी मां बस पर नहीं चढ़ी यह किसी को बताने के लिए मेरे नन्हे से मन को पता नहीं था। दरवाज़े के पास ही एक खंभे में पकड़कर मैं खड़ी रही। मन सिसक रहा था। अब मैं क्या करूं। इस बस के आखिरी स्टॉप पर उतरना पड़ेगा। भीख मांगकर जीना पड़ेगा, ये सारे विचार मन में आ रहे थे। छोटी सी बच्ची डर से घबराती देख बस में बैठे दीदियाँ बुला रही थी और कह रही थी कि बेटी यहां आकर बैठो। लेकिन सब के लिए ना ही मेरा उत्तर था। बस आगे जाता रहा और मेरा तडपता मन भी। लेकिन कुछ दूर जाकर अचानक से बस रुक गई। एक ओटो से दोनों बाहें फैलाकर रोते हुए दौड़ती हुई मेरी मां को मैंने देखा। वो पल एक ऐसा पल था जिसे बयान करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं है। दरवाज़ा खुलते ही मैं मां की बाहों में रोती हुई कूद पड़ी। मां भी फूट-फूटकर रोने लगी। कुछ देर हम दोनों गले लगकर रोते हुए खड़े रहें। सच में हमें जाने का बस नहीं था वो। किसी दूसरी जगह जाने का था। मां होटल का बिल देकर बस के पास भागती हुई आई तो उसने मुझे वहां नहीं देखा। मां को पता चल गया कि मैं बस में चढ़ चुकी थी । मां को समझ में नहीं आ रहा था कि वो क्या करें। वह एकदम से बौखला गई थी। फिर उसने वहां खड़े कुछ दयालु भाई लोगों से अपनी समस्या बताई। उन लोगों ने ओटो पकड़कर मां के साथ बस का पीछा किया और बस के सामने रोक दिया।

मां ने सभी से हमारा प्यार और कृतज्ञता व्यक्त की। तोप्रांकुडी के बस के लिए पास के बस स्टॉप में जाकर खड़े हो गए।

मां को वापस पाने का वो पल, इतने सालों के बीत जाने के बाद भी वह यादें आज भी ताज़ा हैं।

''नुकसान हमें कीमत का एहसास दिलाता है''।

यात्रावृत

मून्नार की यात्रा

क्रिसल बिनु
बिनु कुरियाकोस की सुपुत्री

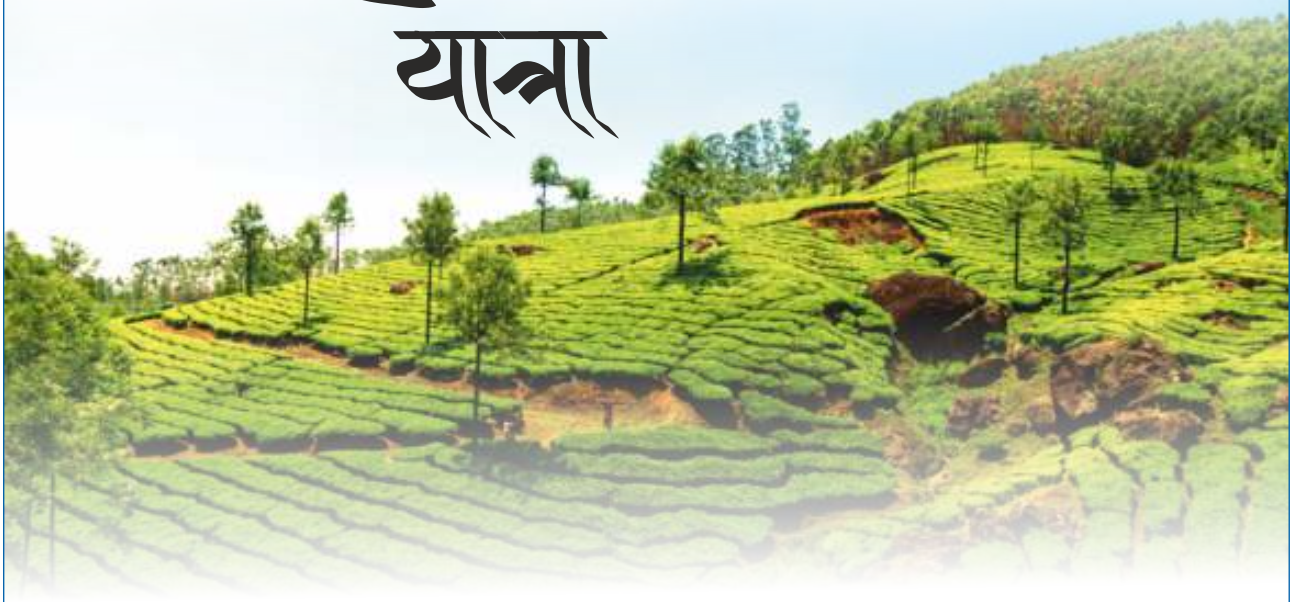

तपती धूप से बचने केलिए हम मून्नार की ओर रवाना हुए। यात्रा की शुरुआत मून्नार की चोटियों के बीच से गुज़रते हुए खूबसूरत सूर्योदय के साथ हुई। हमने एक रिसॉर्ट बुक किया जहां आराम और आनंद दोनों लिया जा सके। चेक-इन के बाद उन्होंने हमें एक स्वागत पेय दिया और फिर हम रिसॉर्ट में टहलने निकले। मुझे यह सुनकर बहुत खुशी हुई कि वहाँ बहुत सारे मनोरंजन के साधन थे और एक पूल भी था। लगभग 11 बजे का समय था। वहां न धूप, न गर्मी सिर्फ ठंड ही ठंड थी। फिर हमने वहां देखने योग्य स्थानों की खोजबीन शुरू की। पहली चीज़ जो मैंने देखी वह एक सुंदर चाय का बागान था । हर जगह हरियाली थी। प्रकृति की शांति और सुंदरता का तो जवाब ही नहीं था।

हमने कुछ फोटो पॉइंट्स में तस्वीरें लीं। दोपहर के भोजन के बाद हम फिर से घूमने निकले। हम जीप ट्रेकिंग लेकर एक एडवेंचर स्पॉट पर पहुंचे। हम रस्सियों के सहारे चढ़े और हवाई साइकिलिंग की और हमने कई तस्वीरें भी खींची। अगला था मेरा सबसे पसंदीदा रेन शॉवर। इसमें भी हमने खूब मज़े किए। मुझे वापस रिसॉर्ट जाने का मन ही नहीं लग रहा था लेकिन पूल का समय हो गया था। हम रिसॉर्ट लौटे और फिर पूल में गए और वहां दो घंटे से अधिक समय बिताया। रात हो चुकी थी। कैंप फायर और डीजे शुरू हुआ। मैंने दिल खोलकर मौज किया और यह वास्तव में कुछ ऐसा अनुभव था जो हमारे दैनिक जीवन में नहीं होता है। एक राहत और पूरी तरह से शांत और तनाव मुक्त मन । हमने रात के 12 बजे मां का जन्मदिन मनाया। हमने उन्हें केक लाकर सरप्राइज़ किया और मुन्नार की ठंडी रात में जश्न मनाया। मेरा तो सोने का भी मन नहीं हो रहा था। मैं काफी देर तक वहां बैठकर कोहरा, ठंडी जलवायु का आनंद लेती रही और पूरी तरह से ठंडे दिमाग के साथ सो गई। अगले दिन हमने नाश्ता किया और चेकआउट किया। इतनी खूबसूरत जगह को छोड़ना वाकई में बहुत कठिन था। मेरे जीवन का एक दिन बहुत अच्छा गुजरा। बहुत सारी खूबसूरत यादें लेकर हम घर लौटे जो हम कभी भी भूल नहीं सकते। यह एक सुखद यात्रा का अंत है।

कविता

औरत

टिन्टु जोसी
सहायक

लोग अक्सर ये कहते रहते है
कि औरत के दिल में क्या है
ये कोई नही समझ सकता
यहां तक की भगवान भी नहीं।

पता नहीं ऐसी टिप्पणियां क्यों करते है
ऐसी भी क्या बात है और राज़ है,
जो भगवान भी नहीं समझ सकता ,
अरे वो तो भगवान है,
सब समझते है।

लोग कहते है कि औरत मर्दों से
कंधा मिला कर चल रही अब
पर कहा मर्द उनसे कंधा मिला पा रहे है।

सुबह सबसे पहले जागे औरत
करती है सब काम, खिलाती है सबको भरपूर
पर खुद ही खाना भूल जाती है
फिर वही सब दफ्तर से आने के बाद
शाम को दोहराती है
पर फिर भी लोग कहते है
औरत मर्द से कंधा मिलाकर चल रही है।

बच्चों से करती है प्यार ये
ममता इसकी है अपार,
दुनिया के किसी कोने में ऐसे कोई
ना मिले प्यार करने वाला उतना
प्यार औरत को अपनी औलाद से है
चिकित्सक बन जाती है,
विदूषक बन जाती है,
दुनिया से लड़ जाती है
फिर भी लोग अक्सर कहते रहते है
कि औरत को समझना मुश्किल है।
औरत को जानना और समझना
कोई कठिन काम नहीं होता
बस उसे थोडा समय दे दो
उसके काम में हाथ बटा दो,
उसके चेहरे की ख़ुशी से ही
उसके दिल को समझ लो
औरत को समझना है आसान
सिर्फ उसे कुछ समय और प्यार दे दो।

यात्रावृत

दुबई की यात्रा

डॉन सारा बिनु
बिनु कुरियाकोस की सुपुत्री

दुबई एक स्वर्ग है जो कभी शब्दों में ख़त्म नहीं होता। दुबई का मुख्य आकर्षण दुनिया की सबसे ऊंची इमारत बुर्ज खलीफा के शीर्ष में खड़े होकर दिखने वाला सुंदर दृश्य है। बुर्ज खलीफा के पास एक सबसे बड़ा मॉल है दुबई मॉल। यदि आप किसी देश का दौरा करने की योजना बना रहे हैं तो मैं निश्चित रूप से संयुक्त अरब अमीरात का दौरा करने का सुझाव दूंगी। अगर हम एक बार वहां जाएं तो वापस आने का मन नहीं करेगा।

सबसे पहले हमने खूबसूरत बगीचों का दौरा किया जो मिरेकल गार्डन और बटरफ्लाई गार्डन हैं। मिरेकल गार्डन में सब कुछ सुंदर फूलों से सजाया गया है। हम इसे किसी बगीचे की तरह नहीं, बल्कि एक काल्पनिक दुनिया के रूप में ही महसूस करते हैं। तितलियों के बगीचे में बहुत सारी तितलियाँ हैं जो हमें महसूस कराती हैं कि हम कहीं और जी रहे हैं।

स्काई डाइव सबसे अच्छा मनोरंजन था, ओह, मैं तो इसे अपने शब्दों में बयान नहीं कर सकती, यह एक ऐसा अनुभव है जिसे हमें दुबई जाने पर आज़माना चाहिए। हम स्काई डाइव से पाम जुमेराह की सुंदरता का अनुभव कर सकते हैं। पाम जुमेराह, हवा से, द्वीप समूह एक वृत्त के भीतर एक शैलीबद्ध ताड़ के पेड़ जैसा दिखता है। पाम जुमेराह से हम दुबई फ्रेम गए। दुबई फ्रेम को दुनिया का सबसे बड़े फ्रेम का रिकॉर्ड प्राप्त है। यह

स्टेनलेस स्टील से लेपित है, जो सोने के पैटर्न से ढका हुआ है, जो रेगिस्तानी सूरज में चमक रहा है। शीर्ष पर, फर्श पारदर्शी है यानी फर्श कांच का है जिससे देखकर कुछ लोगों को चक्कर आ जाता है।

असल में मेरी बकेट लिस्ट में एक सपना था जिस पर मैंने वापस आने के बाद टिक लगाया, वह था दुनिया की सबसे ऊंची इमारत में प्रवेश करना जिसके बारे में मैंने शुरुआत में बताया था, बुर्ज खलीफा । जिस दिन मुझे पता चला कि मैं बुर्ज खलीफा जा रही हूं तो मेरा मन खुशी से झूम उठा। जब हम वहां पहुंचे तो मैंने इतनी बड़ी इमारत देखकर मेरी आंखे चकाचौंध हो गई। हम दुबई मॉल से बुर्ज खलीफा में प्रवेश कर रहे थे। रात में हमने इसके सामने से जीवंत पानी का फव्वारा देखा। शीर्ष पर जाने के रास्ते में, सबसे अच्छी बात वहां की लिफ्ट थी। वह पूरी तरह से स्क्रीन से ढकी हुई थी और बहुत तेज़ थी। जब शीर्ष पर यानी बुर्ज खलीफा के शीर्ष में पहुंचे वहां से जो दृश्य हमने देखा वह तो देखने लायक ही था। जो हम अपने जीवन में कभी भी भूल नहीं सकते। यदि आप वहां जा रहे हैं तो बुर्ज खलीफा में प्रवेश करने का मौका न गवाएं। हम फिर से फव्वारा देखने गए, वह एक अलग नज़ारा था। थोडे दिनों के बाद हम बहुत सारी यादें लेकर वापस घर आ गए। यह अविस्मरणीय यादें हम जीवन भर नहीं भूल पाएंगे।

यात्रावृत

एक विनोद यात्रा

रितुन आर
आउटफिट सहायक

वो एक क्रिसमस की छुट्टी थी। मेरे पिताजी एक साल बाद घर आए हुए थे। मेरे पिताजी विदेश में काम करते थे। वो छुट्टी के समय घर वापस आए थे। उनका एक दोस्त था ''जाफर''। तीन दिन बाद उन्होंने पिताजी को बुलाया। बातें करते-करते उन्होंने पूछा ''क्यूँ न हम अपने पुराने दोस्त की बेटी की शादी में जाए''। शादी ''पालक्काड'' में थी। मैं, मेरे माता-पिता, मेरी बहन, दोस्त जाफर, उनकी पत्नी और दो बेटों के साथ जाने का फैसला किया । दोस्त जाफर ने कहा हम अपनी गाडी पर जाएंगे। उस गाडी का इंधन गैस था। अगले दिन हम सब तैयार हुए । दोस्त जाफर गाडी लेकर आए और हम उनकी गाडी में निकल पडे । कुछ दूर जाने के बाद एक होटल से नाश्ता किया और अपना सफर जारी किया। कुछ दूर चलने के बाद गाड़ी अचानक से रुक गई। दोस्त जाफर ने बताया की इंधन खत्म हो गया। आस-पास इंधन भरने की जगह नहीं थी । समय बीता जा रहा था । शादी का शुभ समय बारह बजे का था । हम सब मिल कर गाडी को धक्का देना शुरु किया । कुछ दूर पर इंधन भरने की जगह मिल गई । वहाँ पहूंचते-पहूंचते हमारे तो बारह ही बज गए। इंधन भरा गया और चल पडे।

कुछ देर बाद एक और समस्या सामने आई । गाडी का टयर पंक्चर हो गया । फिर सबने मिल कर गाडी को धक्का देकर टयर रिपेयर शॉप में ले गये । टायर रिपेयर के बाद फिर हर आगे निकले । करीब एक घंटा देर से पहूँचे। शादी की शुभ घड़ी बीत चुकी थी। हम वहाँ सबसे मिले। दूल्हा-दूल्हन को आशीर्वाद दिया। भोजन किया और वहाँ से लौट गए ।

लौटते समय दोस्त जाफर ने कहाँ ''वैसे हम पालक्काड पहुँच गए हैं, यहीं पास में मलमपुषा बांध हैं । क्यूँ न हम वहाँ जाएं''? पिताजी की अनुमति लेकर हम मलमपुषा बांध की और बढ़े। करीब पच्चास किलोमीटर बाद हम मलमपुषा पहुँचे। वो जगह बहुत सुन्दर थी । मलमपुषा बांध केरल का दूसरा सबसे बडा बांध और जलाशय माना जाता है। मलमपषा बांध का उद्यान देखने लायक था। यहाँ मछली के आकार का एक्वेरियम, पक्षी गार्डन, पक्षी प्रतिमा, केबल कार की सवारी, बच्चों के लिए खिलोना ट्रेन, फेंटसी पार्क भी है। केबल कार की सवारी बहुत रोमांचक थी । घबराहट के मारे गले से आवाज नहीं आ रही थी ।

वहाँ का पुष्प उद्यान बहुत सुन्दर था। वह जगह इतनी सुन्दर थी की मानो सुबह की थकान मिट गई। भोजन करने के बाद वापस घर की और रवाना हुए । करीब दो बजे हम घर पहुँचे । दोस्त जाफर ने पूछां आपके मायके जाए। पिताजी ने कहा ''फिर कभी''। हमें घर पर छोड कर दोस्त जाफर अपने घर चले गए । जाते - जाते दोस्त जाफर ने कहाँ ''यह यात्रा बहुत अविस्मरणीय थी अगली बार हम फिर कहीं और जाएंगे''।

लेख

संघर्ष ही ज़िंदगी

रिनिता पीटर
जोसफ सोल के जी
की सुपत्नी

जीवन एक संघर्ष हैं प्रकृति के साथ परिस्थितियों के साथ, स्वयं के साथ, विविध तरह के संघर्षों का सामना हम सबको करना पड़ता हैं। जो इन संघर्षों का सामना करने से डरते हैं, वे जीवन में भी हार जाते है, जिंदगी भी उनका साथ नहीं देती। हर सफल इंसान के जीवन में एक संघर्ष की कहानी जरूर होगी। तो संघर्ष से न डरें। अगर आप संघर्ष कर रहें हैं तो समझ लीजिये आपकी सफलता दूर नहीं।

एक पुरानी कहानी हैं, इस कहानी में एक किसान की फसल बार-बार खराब हो रही थी। कभी तेज़ बारिश की वजह से, कभी तेज़ धूप की वजह से, कभी ठंड की वजह से उसकी फसल पनप नहीं पा रही थी ।

एक दिन इससे दुखी होकर किसान भगवान पर नाराज हो गया। वह भगवान को लगातार कोस रहा था । तभी वहाँ भगवान प्रकट हुए। किसान ने भगवान से कहा कि भगवान आपको खेती की बिल्कुल भी जानकारी नहीं हैं, आप गलत समय पर बारिश देते हो, कभी तेज़ धूप और ठंड बढ़ा देते हो । इससे हर बार मेरी फसल खराब हो जाती है। आप मेरी अगली फसल तक मेरे अनुसार मौसम कर दीजिए । जैसा मैं चाहूँ वैसा ही मौसम रहे। ये बातें सुनकर भगवान ने कहा कि ठीक हैं अब से ऐसा ही होगा । ये बोलकर वे गायब हो गए।

अगले दिन से किसान ने फिर से गेहूं की खेती शुरू कर दी । अब जब वह बारिश चाहता था, तब बारिश होती, फसल के लिए जब उसे धूप की जरूरत होती, तब धूप निकलती । इस तरह उसकी इच्छा के अनुसार मौसम चल रहा था । धीरे-धीरे उसकी फसल तैयार हो गई । हरे-भरे खेत को देखकर किसान बहुत खुश था।

जब फसल कटाई का समय आया तो उसने देखा कि फसल की बालियों में गेहूं थे ही नहीं, सब के सब खोखली बालियाँ थी। ये देखकर उसने फिर से भगवान को याद किया। भगवान प्रकट हुए और बुलाने की वजह पूछी।

भगवान के कहा कि तुम्हारी फसल ने बिल्कुल भी संघर्ष नहीं किया हैं, इसी वजह से वे खोखली हो गई हैं। जब फसलें तेज़ बारिश में, तेज़ हवा में खुद को बचाए रखने के लिए संघर्ष करती हैं, तेज़ धूप से लड़ती है, तभी उस में दाने बनने की प्रक्रिया शुरूहोती हैं। जिस तरह सोने को चमकने के लिए आग में तपना पडता है, ठीक उसी तरह फसलों के लिए भी संघर्ष जरूरी होती है। ये बात किसान को समझ आ गई और उसे अपनी भूल का एहसास हो गया ।

संघर्ष हमे मजबूत और काबिल बनाने के लिए है, इससे घबराये नहीं... संघर्ष के साथ ही हम आगे बढेंगें और जीतेंगे भी । इसलिए जीवन में संघर्ष अनिवार्य हैं ।

लेख

माया

श्यामकुमार एस
कनिष्ठ तकनीकी सहायक

अगर मैं 200 मीटर और चल लूं तो मुझे इतने दिनों की महेनत का फल मिल जाएगा। लेकिन जब मुझे एहसास हुआ कि अगली कुछ दुरियाँ 8000 मीटर चलने मे अधिक कठिन थी, तो उस विचार ने मेरी कमज़ोरी को थोडा और मजबूत कर दिया। अचानक मेरे दिमाग में एक सवाल आया। यह कभी कभी पृथ्वी पर गिरने वाले उल्कापिंडों से भी तेज था ।

कुछ समय पहले मैंने जो उड़ने वाले बडे जानवर को देखा जिसे किसी और ने नहीं देखा है ?

देखा मैंने देखा था ऐसे मैंने सोचा। नीचे समुद्र तल से देखने पर 2 गुणा अधिक दिखने वाला सूरज साक्षी है।

क्या मैंने इसे देखा था मैंने इसे महसूस किया? सूर्य देव, आप केवल पुराणों में सिर्फ बात करते है यदि नहीं, तो मैं आपसे पूछ सकता था।

जो मेरे पीछे चल रहे थे, वो लोग मुझसे बहुत आगे निकल चुके है । अत्यधिक ठंड मेरी आगे की यात्रा को पीछे खींच रही है । आगे खडी चढ़ाई है और मुझे जितनी जल्दी हो सके अपनी मंजिल तक पहुंचना था मैंने आगे बढने के अपने पहले कदम मैं किसी चीज केनीचे कदम रखा। ये क्या है ये जानने के लिए मैं उसकी तरफ बढ़ा अचानक एक आवाज़ ने मुझे उससे अलग कर दिया। समय बर्बाद मत करो। आप यहाँ जो समय बर्बाद करते हैं, कभी कभी आपकी ज़िंदगी की कींमत चुकानी पडती है। मैने देखा तो वह एक अंग्रेज औरत थी। वो मुझसे मेरी भाषा में बात कर रही थी। मुझे आश्चर्य हुआ।

आप मेरी भाषा कैसे जानते है। मै जानती हूँ, अब बिना समय बर्बाद किए आगे बढ़ते है, देखो तुम्हारे पास बहुत कम ऑक्सिजन है । तभी मैंने इसके बारे में सोचा ।

अभी दूसरों की मदद करने का समय नहीं है। चलो जल्दी चलो । तो आप मेरी मदद क्यों कर रहे है ? वो हँसी और आगे चल पड़ी । वो खड़ी और खतरनाक चढाई चढने में उसने मेरी मदद की । जैसे कोई पहले भी कई बार आ चुका है। उसने मुझे वो स्थान बताए जहाँ खतरा छिपा है। अंत मे अखिर मैं उसकी मदद सें मेरे लक्ष्य में पहुँचा । पृथ्वी के सबसे उँचे स्थान पर मैंने उन ऊंचाइयों से नीचे देखा। कितना सुंदर दृश्य है। इस खुबसुरत नजारे को देखने के लिए निकल पड़े कितने लोग उद्देश्य पूरा किऐ बिना इसी बर्फ के नीचे मौत के हवाले हो गए। उनकी लाशों के लिए फिर भी कोई क्षति नहीं हुई, यह आश्चर्य की बात है । एक और व्यक्ति को सुरक्षित पहुँचाने की खुशी उसकी आँखों में नजर आई । ज्यादा देर रूक ने के खतरे को उसने मुझे समझाया और नीचे जाने की सलाह दी ।

मैंने उसके चेहरे पर भाव देखा कि कहीं किसी के साथ कोई दुर्घटना न हो जाय ।

मैं नीचे गया और कुछ दूर जाने के बाद पीछे मुड़कर देखा। नहीं देखा । मेरी आँखे चारों और घूम गई, नहीं। वो नहीं, थी। कभी-कभी वो मुझसे भी आगे निकल जाती हैं। अब मैं वहीं पहूँच गया जहाँ मैंने उसे देखा था। अचानक मेरा मन, पहले जिस चीज़ पर कदम रखा यह जानने के लिए बेताब हुआ। मैंने बर्फ के टुकडे धीरे धीरे निकाले । मेरी खोज की गति बढ़ गई ।

किसी चीज़ ने मेरा हाथ रोक दिया। मेंने बर्फ हटा कर देखा। मैं डर गया और पीछे हट गया। मुझे अपनी आँखो पर विश्वास नहीं हो रहा था। इतनी देर तक जो मेरे साथ चल रहा था, बातें की, वहीं लड़की मौत के हवाले बर्फ के नीचे लेटी हुई थी। मेरे साथ एक लड़की थी। क्या यह मेरी भावना थी? मैंने जो ऊपर जा रहे है और जो नीचे आ रहे है उनसे उसके बारे में पूछा । उसे किसी ने नहीं देखा। नहीं, मैने उसे देखा और उससे बात की, यह उसके जैसा कोई और हैं । क्योंकि हर चीज़ का एक गवाह होता है। मैं सूरज की और देखते हुआ चला।

तकनीकी लेख

एंटीमैटर–पदार्थ का प्रतिबिंब

देवना के चलना
किरण टी राज की सुपुत्री

एक ऐसी दुनिया की कल्पना करें जहां हम जो कुछ भी जानते हैं वह उल्टा है। बायां दायां है, ऊपर नीचे है, और पॉज़िटीव चार्जस नेगेटीव है, और यहीं है एंटीमैटर की दुनिया । कुछ लोगों ने डैन ब्राउन द्वारा लिखित प्रसिद्ध पुस्तक 'एंजेल्स एंड डिमंस' में ''एंटीमैटर'' शब्द सुना होगा।

एंटीमैटर एंटीपार्टिकल्स से बना होता है जो पदार्थ बनाने वाले कणों के विपरीत होते हैं। यानी, एंटीमैटर

पॉज़िट्रॉन, इलेक्ट्रॉन के एंटीपार्टिकल और एंटी–प्रोटॉन, प्रोटॉन के एंटीपार्टिकल से बना होता है। पॉज़िट्रॉन का द्रव्यमान इलेक्ट्रॉन के समान होता है लेकिन उस में पॉज़िटीव चार्ज होता है। दिलचस्प बात यह है कि एंटीमैटर बहुत लंबे समय तक पदार्थ के साथ सह – अस्तित्व में नहीं रह सकता है। जब वे टकराते हैं, तो वे एक – दूसरे को नष्ट कर देते हैं जिसके परिणामस्वरूप भारी ऊर्जा निकलती है। इस प्रक्रिया को परिशून्यन के नाम से जाना जाता है।

लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हम एंटीमैटर नहीं बना सकते। एंजेल्स एंड डिमेंस उपन्यास की तरह, स्विटज़रलैंड में सीईआरएन नामक एक शोध संगठन है, जिसने एंटीमैटर का उत्पादन करने हेतु अपनी सुविधाएं स्थापित की हैं। सीईआरएन के कण त्वरक ने छोटी मात्रा में एंटीमैटर बनाया है जिसका उपयोग ब्रहमांड के

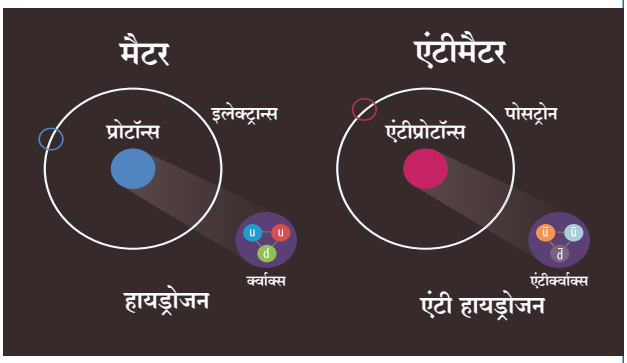

बारे में सिद्धांतों की भविष्यवाणियों की जांच करने हेतु किया जा सकता है। सीईआरएन के लार्ज हार्डन कोलाइडर (एलएचसी) दुनिया का सबसे बड़ा और सबसे शक्तिशाली कण त्वरक है।

एंटीमैटर इतना दुर्लभ है क्योंकि अगर यह प्रकृति में भी होता है, तो अपने चारों ओर मौजूद पदार्थ के कारण जल्द ही नष्ट हो जाता है। अपुष्ट होते हुए भी, कुछ सिद्धांत ब्रह्मांड के अस्तित्व का प्रस्ताव करते हैं जो पूरी तरह से एंटीमैटर से बना है। यदि यह सिद्ध हो जाता है, तो वह ब्रह्मांड एक विशाल ब्रह्मांडीय दर्पण की तरह दिखेगा, और ब्रह्मांड की उत्पत्ति और संरचना के बारे में संकेत भी देगा।

एंटीमैटर किसी एक व्यक्ति से नहीं बल्कि दुनिया भर के भौतिकविदों की सैद्धांतिक भविष्यवाणियों से उत्पन्न हुआ है। 1928 में, पॉल डिराक नामक भौतिक विज्ञानी ने डिराक समीकरण विकसित किया जिसने प्रत्येक प्रकार के कण के लिए एंटीपार्टिकल के अस्तित्व की भविष्यवाणी की। इस समीकरण ने एंटीमैटर की सैद्धांतिक नींव डाली। 1932 में, कार्ल

ऐंडर्सन नामक भौतिक वैज्ञानिक ने एक प्रयोग में इलेक्ट्रॉन के प्रतिकण पॉज़िट्रॉन के अस्तित्व की पुष्टि की। यह एंटीमैटर का पहला ठोस सबूत है। तब से, कई भौतिकविदों और शोधकर्ताओं ने सैद्धांतिक कार्यों प्रयोगों और तकनीकी प्रगति के ज़रिए एंटीमैटर के ज्ञान में योगदान दिया है।

एंटीमैटर से जुड़े रहस्य भी हैं :

- पदार्थ – एंटीमैटर विषमता : बिग बैंग को समान मात्रा में पदार्थ और एंटीमैटर बनाना चाहिए था। लेकिन हमारा ब्रह्मांड अधिकतर पदार्थ से बना है। तो सारा एंटीमैटर कहां गया? यह भौतिकी के सबसे बड़े अनसुलझे रहस्यों में से एक है।
- अन्य उपयोग के लिए एंटीमैटर : परिशून्यन से ज़बरदस्त ऊर्जा निकलती है। इससे अंतरिक्ष यान चलाने या ऊर्जा उत्पादन के लिए ईंधन के रूप मे इसका उपयोग करने की परिकल्पना शुरू हो गई हैं। हालांकि, एंटीमैटर बनाना और संग्रहीत करना वर्तमान में कठिन और बहुत मंहगा है।

- क्या ब्रह्मांड में एंटीमैटर मौजूद है?
- क्या गुरुत्वाकर्षण एंटीमैटर को उसी तरह प्रभावित करता है जैसे वह पदार्थ को प्रभावित करता है।

जबकि रोज़मर्रा के उपयोग के लिए एंटीमैटर ऊर्जा का उपयोग करना हमारी पहुंच के बाहर है, इसके रहस्यों को उजागर करने के लिए अनुसंधान जारी है। एंटीमैटर का अध्ययन ब्रह्मांड के बारे में हमारी समझ को गहरा करता है, विज्ञान की सीमाओं को आगे बढ़ाता है और संभावित रूप से भविष्य में अभूतपूर्व खोजों की ओर ले जाता है ।

कविता

काल

विजित के के
वरिष्ठ फिट्टर

बिना अक्षरों का किताब,
बिना शरीर वाली आत्मा,
समय से परे ये काल[1]
जहाँ काल[2] ही न हो।[1]

लोग हँसना भूल गए
खून का रंग भी लाल न हो,
सिर्फ खून खौलना ही बचा है[1]
काल[3] को भी झाँसे में लाया इक काल[4]।

भूखे को अन्न का दाना नहीं,
जो न भूखा हो उसके लिए अन्न दान,
स्वच्छता और सफाई केवल मलिनता के लिए
पचाना न भूले भुलक्कड़ इक समय।

यदि किसी की सहायता करो तो गलत,
ना करो तो भी गलत,
किसी को दान दो तो गलत
ना दो तो भी गलत।

(काल[1]= समय)
(काल[2]= महाकाल)

(काल[3]= महाकाल)
(काल[4]= समय)

काल[5], कैसा है ये काल,[6] (काल [5/6]= समय)
कभी समझ में न आती,
समय को बदला नहीं जा सकता
लेकिन..... समय बदल रहा है।।

कहानी

भगवान का दरबार

चलना के एस
किरण टी राज की सुपत्नी

चलिए ! आज मैं एक कहानी सुनाता हूँ

दृश्य : भगवान का दरबार । यह करीब सौ साल पहले वाला एक मुकदमा है। ये सोच कर आया हूँ कि कम से कम आज तो फैसला हो ही जाएगा। जिन पर मुकदमा चलाया जाना है वे अत्याधिक प्रभावशाली होने के कारण कई बार इस मामले पर बहस हुई और बार-बार स्थगित किया गया। ये तो भगवान केलिए भी अजीब सा एक सिरदर्द है। 1914-1918 के युग के सभी प्रतिष्ठित लोगों को भी बुलाया गया है । उन सभी को (संबद्ध राष्ट्रों एवं केंद्रीय शक्तियों) सामने बिठाया गया है जिन्होंने इस सुंदर पृथ्वी को नष्ट करने में सहयोग दिया था ।

जब उन्होंने कहा कि चलो मुकदमा शुरू करते है, तो वूड्रो विल्सन ने अपना कोट समेटा और संबद्ध राष्ट्रों की जीत की खुशी में या वे महान व्यक्ति है यह समझकर बोलने के लिए तैयार हो गए। तुम क्या बोलने जा रहे हो ? मैंने तो तुमसे कुछ पूछा ही नहीं, भगवान ने टोका। तुम पृथ्वी पर महान होंगे यहाँ मैं तय करूँगा कि किसे बोलना है किसे नहीं। विल्सन लज्जित हो गए।

भगवान ने ब्रिटेन के जॉर्ज पांचवी से पूछा

''तुमने इस युद्ध में क्यों भाग लिया ?''

''हे भगवान, जब यह कहा गया कि जर्मनी, रूस और फ्रांस पर आक्रमण करेगा।''

''तो इसमें''.....

''ऐसे ही उनके मदद करने के लिए''.....

''भाड में जाए ! क्या उन्होंने उनकी मदद करने के लिए कहा था ?''

''नहीं''...

''वहाँ के राजा मेरे चचेरे भाई है इसलिए''.... जॉर्ज पांचवी ने सिर खुजलाते हुए कहा ।

''तो जर्मनी के विलियम द्वितीय तुम्हारा चचेरा भाई नही है ?''

''है..... लेकिन.....''

''इसका मतलब यह हुआ कि जर्मनी तुमसे आगे निकल जाएगा इस डर से उन्हें एक झटका देने केलिए तुम दूसरों के साथ मिल गए, है ना ? अब तुम बिलकुल चुप रहो।''

जापान की ओर इशारा करते हुए भगवान ने पूछा,

''तुम्हारा सम्राट शोवा कहाँ है ?''

''माफ करना, वे प्रथम विश्व युद्ध के समय बच्चे थे। द्वितीय विश्व युद्ध के समय में वे अधिक शामिल हुए थे। और... उस समय तो वे पाला पलटकर दूसरे तरफ हो गए थे ... दोनों मुकदमों में उपस्थित होने में संकोच के कारण..... राजा उपस्थित न होकर बदले में मैं जो उस समय का प्रधान मंत्री था, उपस्थित हूँ।''

''तुम एशिया में रहकर क्या खाक लेने के लिए यूरोप गए थे ?'' भगवान ने पूछा।

''वो तो ब्रिटेन हमारा अपना है .....वो तो विश्व शक्ति हैं ? उनका जागिरदार कहना तो गर्व की बात है.... इसलिए जब अपनों को ज़रूरत पड़ती है तो हमें मदद करना ही चाहिए । बस इतना ही।.....''

''अरे इतना प्यार ! कुछ विवादित क्षेत्र का हिस्सा जर्मनी में और कुछ चीन के हिस्से में पड़ा है न, उस पर नज़र रखकर तुम्हारा प्यार उमड़ रहा है, क्यों ?'' भगवान गुस्सा हुए। ''अब बाकी लोगों से कुछ नहीं पूछूंगा, पूछूंगा तो ऐसा ही कुछ सुनने को मिलेगा।... अब विल्सन तुम्हारी बारी तुम्हें क्या कहना है। अपना घमंड छोड़कर कुछ कहना है तो कहो'', भगवान ने आदेश दिया ।

विल्सन ने अपना कोट सीधा करके बोलना शुरू किया। ''1917 में ब्रिटन के पास के अटलांटिक महासागर से जो भी मालवाहक जहाज या यात्री जहाज गुज़रता था उन पर ये जर्मन लोग हमला करते थे। ये कितनी नाइंसाफी है।''

''हमने तो तुम पर हमला नहीं किया था कैसर विल्यम द्वितीय ने कहा। भगवान ने कहा, ''तुमसे और

तुम्हारे लोगों से पूछने पर बोलना।'' कैसर विल्यम चुप हो गए।

''हां और आगे बोलो'' भगवान ने विल्सन से कहा।

विल्सन ने आगे कहा, ''जब ऐसा डींग मारते है कि दुनिया हमारी धुन पर चलती है तो यह हमारे देश वासियों को भी पता होना चाहिए ना, श्रीमान। इसलिए सोचा कि थोड़ा मार-काट हो जाए।''

''और क्या है कारण?'', भगवान ने पूछा।

''और कुछ नहीं भगवान।''

भगवान ने फटकारते हुए बोला। ''जर्मनी के विदेशी सचिव ज़िम्मरमैन ने मेक्सिको को एक गुप्त टेलिग्राम भेजा था जो अंग्रेज़ों को प्राप्त हुआ जिसे संयुक्त राष्ट्र अमरिका को पता चल गया यह भी एक कारण नहीं है क्या?

विल्सन चुप रहा।

''वो क्या है महाराज?'' भगवान के क्लर्क ने पूछताछ की।

''वो तो... अगर अमरिका जर्मनी के खिलाफ युद्ध करता है तो जर्मनी ने मेक्सिको के साथ एक समझौता किया था कि मेक्सिको को जर्मनी के साथ खड़ा होने पर मेक्सिको को टेकसास, एरिज़ोना, न्यू मेक्सिको आदि जगहों को वापस हासिल करके देगा। यदि वे सभी हमारे विरुद्ध हो जाए तो क्या होगा यह सोचकर जो जर्मनी के विरुद्ध खड़े थे उनके साथ पहले ही अपना हाथ बढा दिया था ना विल्सन?'' विल्सन चुप रहा ।

''और तो मेक्सिको के बारे में क्या श्रीमान?'' - क्लर्क ने पूछा।

''मेक्सिको में तो आतंरिक समस्याओं का समय था। और उनके नेता इतने बेवकूफ नहीं थे कि ऐसे ही कुछ कर दिया जाए। इसलिए उन्होंने कुछ भी नहीं किया।'' इतना कहकर भगवान चुप हो गए।

''अगली बारी केंद्रीय शक्तियों की थी। भगवान ने चश्मा ठीक किया और बैठ गए। फिर उन्होंने फ्रांसिस फोर्डिनेंट के हत्यारे गैवरिलो प्रिंसिप को बुलाया। वहीं है उनमें से एक साधारण व्यक्ति। उपस्थित बाकी के सारे लोग ज़हरीले सांप थे। भगवान ने समवेदना के साथ पूछा, ''बेटा तेरा तो अभी बचपना भी नहीं गया... तो फिर तुमने क्यों फ्रांसिस और उनकी पत्नी को मारा?''

उसने कुछ देर तक कुछ नहीं कहा। फिर बोला, ''मुझसे यह सब करवाया गया था, भगवान। सेरबिया के लोगों को ऑस्ट्रिया की गुलामी से छुड़ाने के लिए मुझसे करवाया गया था।'' किसने, इस के जवाब में नज़रे रूस और ब्रिटन पर टिक गई। तब भगवान को समझ में आ गया कि यह युवक तो सिर्फ एक पुतली है।

भगवान फिर बोले, ''अंत में कैसर, आपको कुछ बोलना है?'' कैसर को यह सवाल बिलकुल अच्छा नहीं लगा, लेकिन क्या करें भगवान है ना, अपने गुस्से को काबू में रखते हुए कहा, ''फ्रांसिस मेरा संबंधी था उसे मारा गया तो मुझसे रहा नहीं गया। तब मैंने ही सेरबिया के लोगों को तसल्ली दी थी, कि तुम यह मत सोचना कि तुम्हारा अब कोई नहीं है, मैं ऑस्ट्रिया के खिलाफ लड़ने में तुम्हारे आगे रहूंगा।'' बात को टोकते हुए भगवान ने पूछा, ''तो तुम्हारे और उसके बीच क्या कोई खून का रिश्ता था?''

कैसर ने बड़बड़ाते हुए कहा, ''सेरबिया के राजा भी मेरा चचेरा भाई है।''

क्रोधित होकर भगवान एक ही छलांग में सबके सामने आए और यूरोप के प्रभुओं को ज़ोर से चांटा मारा। उस चांटे की आवाज़ से वहां बैठे सभी लोग एक पल के लिए डर के कारण हैरान हो गए। मार पड़ने वाले सब का हाल बेहाल हो गया।

भगवान फिर बोले, ''ब्रिटन राष्ट्र का शासन देखकर, मुझसे क्यों नहीं हो सकता, यहीं सोचकर तुमने यह सब शुरू किया था ना।'' अपनी ज्वालामयी आंखों से जर्मन राजा कैसर द्वितीय की ओर इशारा करते हुए भगवान ने पूछा, ''एक ही खून के महारानी विक्टोरिया के परपोते और चचेरे भाई जिनको एक साथ बैठकर अपने घर की बात को सुलझाना चाहिए था, उसे बेवजह इतना बड़ा हंगामा करके कुछ मूर्ख लोगों के दिमाग में डालकर दो भागों में बांटकर मेरे करोड़ों बच्चों को भी मारकर, मेरे द्वारा रचित इस सुंदर भूमि का भी सत्यानाश कर मेरे ही पांव में कुल्हाड़ी मारना चाहता था। तुम लोगों को तो सज़ा, मैं भूमि का दौरा करके आने के बाद दूंगा।''

फिर क्लर्क की ओर मुड़कर कहा, ''जब मैं वापस आऊंगा तो ये लोग मुझे नज़र नहीं आना चाहिए। एक बात ओर..... अगले दिन ही दूसरा विश्व युद्ध का मुकदमा भी बुला लो। फिर जापान के तेरौची मासाटेक को देखकर कहा, ''तेरे राजा को तो मैं देख लूंगा, उनसे कह देना। पता है ना किस लिए..... पहले विश्व युद्ध से दूसरे विश्व युद्ध तक पहुंचने पर पासा पलटने के लिए। यह भी कह देना कि दलबदली कानून के तहत एक ओर मुकदमा बना दिया है।'' और फिर एक पागल की तरह भगवान पृथ्वी की ओर चले गए।.....

कहानी

प्रिया ए बी
इंस्ट्रुमेंट मेकानिक

दैत्य

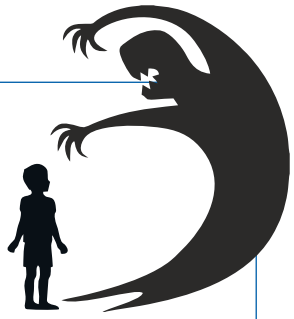

एक बार की बात है, घने जंगलों से घिरे एक छोटे से गाँव में रामू नाम का एक लड़का रहता था। रामू के पास जिज्ञासु मन था और वह खोजबीन करना पसंद करता था, तब भी जब हर कोई उसे ऐसा न करने के लिए कहता था। उसके दोस्त हमेशा उसे दैत्य की कहानियों के बारे में चेतावनी देते थे, जो पेड़ों पर रहने वाला एक विशालकाय जीव था, जो सिगार पीता था और जो भी उसके करीब आता था उसे छीनने की ताक में रहता था।

एक शाम, रामू के दोस्त फिर से दैत्य के बारे में बात कर रहे थे। ''रात में जंगल के पास मत जाओ, उनमें से एक ने कहा। ''दैत्य तुम्हें पकड़ लेंगे!'' लेकिन रामू बस हंस पड़ा। ''दैत्य जैसी कोई चीज नहीं है,'' उसने हिम्मत दिखाते हुए कहा। ''यह हमें डराने के लिए बस एक कहानी है।''

उसके दोस्तों ने उससे न जाने की विनती की, लेकिन रामू ने उन्हें गलत साबित करने की ठानी। उस रात जब सभी सो गए, रामू ने एक टॉर्च पकड़ी और अपने घर से चुपके से बाहर निकल गया। वह जंगल में चला गया, पेड़ों ने उसके चारों ओर काली छाया डाल दी। हवा में मिट्टी और पत्तियों की गंध थी, और हर आवाज़ से उसका दिल तेज़ी से धड़कने लगा।

वह जंगल में और अंदर चला गया, उसके कदम सूखी पत्तियों पर चटक रहे थे। जैसे–जैसे वह आगे बढ़ा, उसने सिगार के धुएँ की हल्की गंध महसूस की। हर कदम के साथ यह गंध और भी तेज़ होती गई, और उसे एक धीमी, गड़गड़ाहट वाली आवाज़ सुनाई देने लगी। रामू की हिम्मत कम होने लगी, लेकिन वह अभी भी पीछे मुड़ना नहीं चाहता था। वह चलता रहा, इस

उम्मीद में कि उसे कोई सबूत मिल जाए कि डरने की कोई बात नहीं है। फिर, उसने उसे देखा। पेड़ों की ऊँचाई पर, चमकती हुई लाल आँखों की एक जोड़ी उसे घूर रही थी। आँखें झपक रही थीं, और एक गहरी, गड़गड़ाहट वाली आवाज़ बोली, ''मेरे जंगल में घुसने की हिम्मत कौन करता है?''

रामू के पैर जम गए। वह भागना चाहता था, लेकिन वह हिल नहीं पा रहा था। दैत्य जल्द से नीचे उतरा, उसका विशाल आकार चाँदनी को रोक रहा था। वह लंबा था, उसकी त्वचा काली, चमड़े जैसी थी और उसके दाँतों के बीच एक मोटा सिगार दबा हुआ था। दैत्य की आँखें और भी चमक उठीं जब उसने रामू को पकड़ने के लिए पेड़ की टहनी के आकार का हाथ बढ़ाया।

उस पल में रामू को अपनी दादी द्वारा बचपन में कही गई बात याद आई: ''दैत्य कैलामेंसी पौधा से डरते हैं,'' उन्होंने कहा था। ''जब भी आप जंगल के पास हों, तो हमेशा अपने साथ एक कैलामेंसी पौधा रखें।'' रामू ने जल्दी से अपनी जेब में हाथ डाला और एक छोटा कैलामेंसी फल पाया जो उसकी दादी ने उसे दिया था। उसने उसे निचोड़ा, और उसका रस और निकला दैत्य के हाथ पर छिड़का।

दैत्य दर्द से चिल्लाया, सिगार गिरा दिया और खट्टे रस से पीछे हट गया। रामू ने एक सेकेंड भी बर्बाद नहीं किया। वह मुड़ा और जितनी तेजी से भाग सकता था, भाग गया, कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। दैत्य की दहाड़ जंगल में गूंज रही थी, लेकिन रामू तब तक भागता रहा जब तक वह सुरक्षित रूप से गाँव में वापस नहीं आ गया।

उस रात के बाद से, रामू ने फिर कभी जंगल में जाने की हिम्मत नहीं की। उसने अपने दोस्तों की बातें सुनी और दैत्य की कहानियों से दूर रहा। और वह हमेशा अपनी जेब में एक कैलामेंसी रखता था, बस किसी भी स्थिति के लिए।

जंगल अंधेरा और डरावना बना रहा, लेकिन रामू जानता था कि वहाँ से बच निकलने वाला भाग्यशाली था। वह अपनी दादी की सलाह को कभी नहीं भूला और उस रात की कहानी बताने के लिए जीवित रहा जब वह दैत्य से मिला था। उस जीव की भयावह निगाह की याद हमेशा उसके साथ रहेगी, जो उस अंधेरे की याद दिलाती है जो छाया में छिपा है।

लेख

हमेशा खुश रहना

हृष्ना पी एम
एफईटीओ-4

उत्तर भारतीय विवाह एक भव्य उत्सव है, जिसमें रंगों, ध्वनियों और उत्सवों की भरमार होती है जो कई सप्ताह तक चलता है। घर पर तैयारियां आमतौर पर शादी से कम से कम एक सप्ताह पहले शुरू हो जाती है, जिसमें हर कोई मेहमानों के लिए एक अच्छा शो बनाने की कोशिश करता है। क्योंकि मेरी शादी एक अमीर व्यवसायी से हो रही है, इसलिए मेरे परिवार ने इसे एक अविस्मरणीय समारोह बनाने के लिए हर संभव प्रयास किया है, जिसमें कोई भी खर्च नहीं बचा है। भारतीय शादियाँ त्योहारों से अलग नहीं होती हैं, और हमारे घर को अनगिनत रोशनी से सजाया जाता है, जिससे एक मंत्रमुग्ध कर देने वाला माहौल बनता है। फिर भी, जब मैं चारों ओर देखती हूँ, तो मैं खुद को इन सबसे अलग पाती हूँ। मैं इसे 'घर कहे बिना नहीं रह सकती, क्योंकि यह कभी भी मेरा नहीं लगा। मुझे पता है कि यह दिन खास है, कम से कम मेरे लिए, लेकिन मैं यह नहीं कह सकती कि मैं खुश हूँ या दुखी। अंदर से, मुझे लगता है कि मेरी ज़िंदगी एक नया मोड़ लेने वाली है, और मुझे उम्मीद है कि यह बेहतर होगा। आखिरकार, मैं 21 सालों से अपने परिवार के लिए बोझ रही हूँ, और अब, आखिरकार, मैं उस बोझ से मुक्त हो जाऊँगी।

पीछे मुड़कर देखती हूँ, तो मुझे एहसास होता है कि मेरे जीवन की सबसे गलती इस समाज में पैदा होना था। जिस दिन मैं पैदा हुई, उस दिन खुशियाँ मनाने के बजाय, मेरे आस-पास के लोग उदास और निराश महसूस कर रहे थे। मैं तब इतनी छोटी थी कि समझ नहीं पा रही थी कि क्या हो रहा है, लेकिन मुझे याद है कि मेरे पिता मेरी माँ को डाँट रहे थे और पूछ रहे थे कि उन्होंने एक लड़की को क्यों जन्म दिया। वे अकसर परिवार के लिए बोझ और कलंक समझते थे। मुझे आज भी वह दिन अच्छी तरह याद है जब उन्होंने मुझे इतनी ज़ोर से थप्पड़ मारा था कि मैं कुछ मिनटों के लिए बेहोश हो गई थी। जब मैं उठी, तो मैंने उम्मीद की कि वे मुझे अपनी बाँहों में लेंगे और मुझे शांत करेंगे, लेकिन इसके बजाय, मैंने उन्हें मेरी माँ से यह कहते हुए सुना कि उन्हें मुझे उसी दिन मार देना चाहिए था जिस दिन मैं पैदा हुई थी। मैं तब केवल तीन साल की थी। मेरी क्या गलती थी?

लेकिन चलिए वर्तमान में लौटते हैं। मैं सड़क के दूर छोर से ढोल और संगीत की आवाजें सुन सकती हूँ। यह दूल्हे का परिवार, रिश्तेदार और दोस्त हैं, जो बारात लेकर हमारे घर आ रहे हैं। वे सभी शानदार पारंपरिक पोशाक पहने हुए हैं और बॉलीवुड गानों की धुनों पर नाच रहे हैं। मैं दूल्हे आदित्य वर्मा को देख सकती हूँ, जो सेहरा से चेहरा ढके हुए घोड़े पर सवार है। आदित्य हमारे शहर में एक शीर्ष श्रेणी के व्यवसायी हैं, जिनके पास कुछ कारखाने और रियल एस्टेट में निवेश है। वे अपना पारिवारिक व्यवसाय चलाते हैं और अपने पिता की मृत्यु के बाद से इसे हमारे राज्य की शीर्ष कंपनियों में से एक बना दिया है। मैं उनके बारे में बस इतना ही जानती हूँ, क्योंकि हमारी शादी प्रेम विवाह नहीं है, बल्कि एक आम अरेंज मैरिज है। मेरे परिवार ने बिना पूछे ही उन्हें मेरे लिए चुना मैं उन्हें पसंद करती हूँ – या नहीं पूछा तक नहीं आखिरकार, मैं सिर्फ एक बोझ थी जिससे वे छुटकारा पाना चाहते थे। सगाई होने के बावजूद, आदित्य और मैं एक-दूसरे को मुश्किल से जानते थे। हम अपने परिवार की मौजूदगी में सिर्फ कुछ बार मिले हैं और फ़ोन पर भी मुश्किल से ही बात की है। वह हमेशा अपने व्यवसाय को संभालने में व्यस्त रहते हैं, और मैं हमेशा अपने परिवार के लिए बोझ की तरह महसूस करती हूँ। फिर भी, किसी तरह, हमने एक रिश्ता बनाया है, इतना कि हम शादी के बंधन में बंध सकें, या

ऐसा मुझे उम्मीद है। आदित्य जैसे अमीर, सुंदर कुंवारे से कौन शादी नहीं करना चाहेगा? मुझे यकीन नहीं है कि मैं उससे प्यार करती हूँ या नहीं, लेकिन मुझे उम्मीद है कि एक दिन ऐसा होगा। वहां सब कुछ है जो एक लड़की चाहती है, और मैं हमारी शादी को कामयाब बनाने की पूरी कोशिश करूँगी। मैं उसका ख्याल रखूँगी, जब भी उसे मेरी ज़रूरत होगी, मैं उसके लिए मौजूद रहूँगी, और उम्मीद है कि हम आखिरकार प्यार में पड़ जाएंगे। सच कहूँ तो, मैं स्वार्थी हो रही हूँ, आदित्य को एक विकल्प कह रही हूँ, लेकिन मुझे ऐसा ही लगता है। मैं हमेशा दूर जाना चाहती थी।

मेरी माँ की आवाज़ मेरे विचारों को तोड़ती हुई आई और उन्होंने फिर से मेरा नाम पुकारा, मुझे याद दिलाया कि बारात आ गई है। मैंने एक गहरी साँस ली और जवाब दिया, उन्हें उत्तर दिया कि मैं बस कुछ ही मिनटों में तैयार हो जाऊँगी। मैंने जल्दी से अपनी डायरी अपने बिस्तर पर, तकिए के नीचे छिपा दी, और खुद से वादा किया कि मैं अपनी कहानी लिखना जारी रखने के लिए जल्द ही वापस आऊँगी।

ऐसी बहुत सी चीजें हैं जो मुझे अपनी डायरी में साझा करना हैं, बहुत सी यादें हैं जिन्हें मैं संजो कर रखना चाहती हूँ। मैं अपनी डायरी में उस दिन के बारे में बताना चाहती हूँ जब मैं पैदा हुई थी और कैसे मेरे माता-पिता मुझे इस दुनिया में स्वागत करके बहुत खुश हुए थे। मैं पहली बार विवान से मिलने के बारे में लिखना चाहती हूँ, जो मेरा पहला क्रश था और कैसे हर बार जब वह मेरे पास होता था तो मेरा दिल धड़कता था। लेकिन दुख की बात है कि हमारी प्रेम कहानी अल्पकालिक थी और हमें एक-दूसरे के लिए अपनी भावनाओं को तलाशने का कभी मौका नहीं मिला। जब मैंने अपनी आँखों में काजल लगाया, तो मैं उन कई दुखों को महसूस करने से खुद को रोक नहीं पाई जो मेरी आँखों ने वर्षों से देखे थे। दर्द और पीड़ा के बावजूद, मेरी आँखें अभी भी उम्मीद और लचीलेपन से चमक रही थीं, जो सतह के नीचे छिपी सभी यादों को छिपा रही थी ।आईने में एक आखिरी नज़र, और मुझे पता था कि सब कुछ ठीक होने वाला है। आज, मैं आदित्य से शादी करूँगी और हम हमेशा खुशी-खुशी रहेंगे। अपने जीवन के इस नए अध्याय को शुरू करने की तैयारी करते हुए मुझे अपने भीतर उत्साह और प्रत्याशा की भावना महसूस हुई। जैसे ही मैं अपने कमरे से बाहर निकली, मेरा स्वागत बारात की जीवंत ध्वनि और मेरे परिवार और दोस्तों के नाचने और जश्न मनाने के दृश्य से हुआ। मैं अपने चारों ओर मिले प्यार और समर्थन से अभिभूत हुए बिना नहीं रह सकी।

मंडप की ओर बढ़ते हुए, मैं अपने आगे आने वाले सभी रोमांचों के बारे में सोचने से खुद को रोक नहीं पाई। मैं आदित्य के साथ जीवन बनाने, दुनिया की खोज करने और नई यादें बनाने के लिए उत्साहित थी, जिन्हें मैं एक दिन अपनी डायरी में लिखूंगी। जैसे ही मैंने आदित्य के बगल में अपनी जगह ली, मुझे लगा कि मेरे अंदर शांति की भावना भर गई है। यह वह जगह थी जहाँ मुझे होना चाहिए था, और मुझे पता था कि आगे चाहे कितनी भी चुनौतियाँ क्यों न हों, हम उनका सामना एक साथ करेंगे।

जब हमने अपनी प्रतिज्ञाएँ साझा कीं, तो मैं यह सोचने से खुद को रोक नहीं पाई कि मैं कितनी भाग्यशाली हूँ कि मुझे कोई ऐसा व्यक्ति मिला जिसने मुझे प्यार किया और मुझे वैसे ही स्वीकार किया जैसे मैं थी। मुझे पता था कि हमारी साथ की यात्रा खुशी और दुख दोनों से भरी होगी, लेकिन मैं उसके साथ इन सबका सामना करने के लिए तैयार थी। जैसे ही हमने रस्में पूरी कीं और अंगूठियाँ बदलीं, मुझे अपनी नसों में उत्साह और खुशी का एहसास हुआ। मैं अपने सपनों के आदमी से शादी कर चुकी थी, और मुझे पता था कि साथ मिलकर हम कुछ भी जीत सकते हैं। जैसे-जैसे दिन समाप्त होने लगा और हम अपने प्रियजनों को विदा कर रहे थे, मैं खुद को उन सभी चीज़ों के लिए आभारी महसूस करने से नहीं रोक पायी जो मुझे मिली थीं। जैसे-जैसे हम रात की ओर चल रहे थे, मुझे पता था कि मैं एक नए जीवन की शुरुआत करने जा रही हूँ, जो उतार-चढ़ाव से भरा होगा, लेकिन जिसका मैं खुले हाथों से सामना करने के लिए तैयार थी। और जैसे ही मैंने अपनी आँखें बंद की, मुझे पता था कि मेरी डायरी हमेशा हर पल, हर याद और हर भावना को कैद करने के लिए मौजूद रहेगी।

लेख

सखीमोल पी एम
उच्च प्रशिक्षार्थी

यात्रावृत्त

यात्रा करना हमारे जीवन की सबसे दिलचस्प चीज़ों में से एक है और यह हमारी ज़िंदगी बदल सकती है। यात्रा का मतलब केवल लंबी यात्रा ही नहीं है। यह इस प्रकार की एक यात्रा है, जो कोई भी स्थान हमारे मानसिक स्वास्थ्य को स्थिर कर सकें। यात्रा करना सीखने का एक और तरीका है। सीखना केवल स्कूल और कॉलेजों से नहीं है। एक उचित यात्रा हमें दुनिया की हर चीज़ सिखाती है। पूरी दुनिया यात्रा करने के बारे में है और यह उन रोमांचों के बारे में है जिन्हें हम करते हैं और उन्हें एक स्मृति के रूप में बनाते हैं। हम यात्रा से बहुत सी चीज़ें सीख सकते हैं जैसे नई संस्कृति, अलग-अलग जीवन शैलियाँ, अलग-अलग भाषाएँ, विभिन्न प्रकार के भोजन और साथ ही हम नए लोगों से भी घुल-मिल सकते हैं। यात्रा हमें हर परिस्थिति में तालमेल बिठाने में भी मदद करती है। तो यह हमारे पूरे जीवन में मदद करता है। एक अच्छी यात्रा हमारे मन को शांत करने के साथ-साथ हमारे मूड स्विंग को नियंत्रित करती है। कुछ ऐसे है जिसे नकारा नहीं जा सकता, वह एक अच्छी यात्रा है। एक शांतिपूर्ण यात्रा तनाव, चिंता और अवसाद को दूर कर सकती है।

आजकल हमारे देश में पर्यटक स्थल बहुत आम हैं। इसलिए जाने के लिए उचित स्थान ढूंढना मुश्किल नहीं। हम हमेशा नई चीज़ों को देखने और जानने में रुचि रखते हैं। इसलिए हम एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करते हैं और बहुत सी चीज़ें देखते हैं। हम यात्रा करने के लिए अलग-अलग तरीके चुन सकते हैं। लोग बस, ट्रेन, कार, हवाई जहाज़ आदि से यात्रा करते हैं। ये सभी अलग-अलग अनुभव प्रदान कर रहे हैं। हर यात्रा यादें है। इसे हमेशा याद रखा जा सकता है। कभी-कभी छोटी-छोटी चीज़ें हमें खुश कर सकती हैं। हम अपनी इच्छानुसार कहीं भी यात्रा कर सकते हैं। हमें अपने व्यस्त जीवन से यात्रा के लिए कुछ समय अवश्य निकालना चाहिए। लोग अपनी नौकरियों में बहुत व्यस्त हैं, इसलिए वे अपने जीवन का सही तरीके से आनंद नहीं ले सकते, क्योंकि वे अपने जीवन के साथ प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं। यात्रा का मतलब केवल स्थानों की यात्रा नहीं है। यह खुशी व स्वास्थ्य के लिए है और हमारे जीवन में सकारात्मकता फैला सकती है। लोग

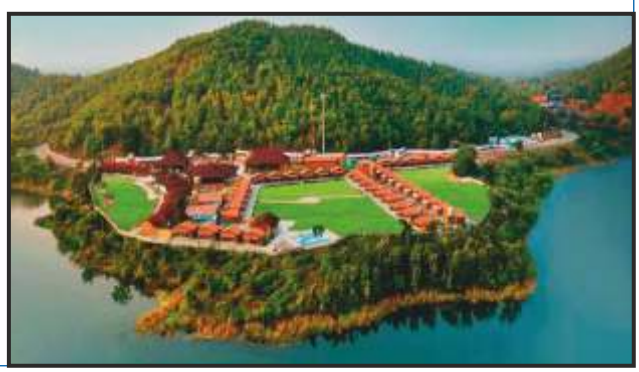

विभिन्न कारणों से यात्रा करते हैं जैसे पढ़ाई के लिए यात्रा, व्यापार के लिए यात्रा, मनोरंजन, आनंद आदि के लिए यात्रा तथा नई जगहों को देखने के लिए यात्रा । यात्रा करना एक महंगा शौक हो सकता है, लेकिन यह खुशियों को अपने अंदर समाहित कर लेता है। कुछ खर्चें आर्थिक नुकसान के बजाय खुशी में झलक सकते हैं। यात्रा दुनिया को जानने और दुनिया में क्या चल रहा है यह जानने का एक मौका है। लोग परिवार, दोस्तों के साथ यात्रा करते हैं और लोग अकेले भी यात्रा करना पसंद करते हैं। ये सभी अलग-अलग भावनाएं प्रदान करते हैं। इसलिए हम सभी को अपने जीवन में इसका अनुभव अवश्य करना चाहिए। यह खुद को स्वतंत्र बनाता है और जीने के लिए आत्मविश्वास पैदा करता है और यह हमारे बारे में जानने में भी मदद करता है, जैसे कि हमारा व्यक्तित्व, हमारी ताकत और यह जानने में कि हम क्या कर सकते हैं।

प्रारंभिक समय में यात्रा करना कठिन होता था। क्योंकि उस समय यात्रा करने की उचित सुविधाएं नहीं थीं और यह खतरनाक भी हो सकता था। लेकिन आजकल हमारी सरकार भी जनता के लिए ऐसी सुविधाएं प्रदान करती है कि अब यात्रा करना बहुत आसान हो गया है। हम जहां जाना चाहते है वहां जा सकते हैं। यात्रा के बिना हमारा जीवन अधूरा रहता है। एक महत्वपूर्ण बात यह है कि यात्रा हमारा मूड बदल सकती है और आनंद ला सकती है। दुनिया की खोज करने और हर चीज़ का अनुभव करने से ज़्यादा आपको कुछ भी नहीं सिखाता है। मैं ईमानदारी से कह सकती हूं कि यात्रा हमारी आत्मा के लिए सबसे अच्छा इलाज है। ''हमारा मानना था कि, एक यात्रा का अंत अगले गंतव्य की शुरुआत होनी चाहिए।''

कविता

अंतर्दृष्टि

अनिलकुमार के. बी.
तकनीकी सहायक

हे सर्वज्ञ ईश्वर, जो किसी को न
छोड़ें, जो सब की रक्षा करे।

इस मोतियों जैसे सफेद कागज पर,
मैं अपने मन के अक्षरों को लिखूं।

मुझे नहीं है पता इन पंक्तियों को
लिखते समय, मेरी ख़ुशियां कहां गई ।

मेरे मन में जो खुशी भरी हुई थी,
मानो कहीं गायब हो गई।

मैं अपने अंदर के आनंद को जान रहा हूं,
जो अंधकार और उजाले की तरह है ।

मेरे मन के कोने में सो रही है, कविते...
तुम मुझे कुछ ख़ुशी दोगी क्या??

इन पंक्तियों के अंदर के खूबसूरत शब्द...
आप में अच्छाई और सच्चाई नज़र आती है।

मेरे विचारों की मालाओं में पिरोई
झलकियाँ..... बदल रहे हैं अंतरदर्शन।

प्रकृति की गोद में समाई प्रत्येक जीव को,
होता है इक आनंदमय पल।

यही तो है जीव का जीवन,
प्रेरणा दायक मृतसंजीवनी ।

आख़िरकार.....
मुझे अपने आंतरिक आनंद का पता चला,
इक सरल और सीधी अंतर्दृष्टि है ये ।।

लेख

कर्मयोगो विशिष्यते

रमेश पी एस
वरिष्ठ प्रबंधक

कर्मयोगो विशिष्यते – हमारा आदर्श वाक्य

संन्यासः कर्मयोगश्च निःश्रेयसकरावुभौ।
तयोस्तु कर्मसंन्यासात्कर्मयोगो विशिष्यते।।

भगवद् गीता 5.2

एक महान कंपनी के आदर्श वाक्य में कंपनी के विचारों और उसकी आकांक्षाओं का सार शामिल होना चाहिए। यह अपने कर्मचारियों और ग्राहकों दोनों के लिए रचनात्मकता को बढ़ावा देने और प्रगति को आगे बढ़ाने की कंपनी की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। एक आदर्श वाक्य किसी संगठन के लिए एक मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में कार्य करता है, जो उसके मूल्यों और लक्ष्यों को समाहित करता है।

आदर्श वाक्य का महत्व

एक आदर्श वाक्य संगठन के मूल उद्देश्य या मिशन को संक्षेप में बताता है, जिससे इसके सदस्यों के प्रयासों को एक सामान्य लक्ष्य की ओर सरेखित करने में मदद मिलती है। एक अच्छी तरह से तैयार किया गया आदर्श वाक्य संगठन के मिशन के लिए उद्देश्य और जुनून की भावना पैदा करके कर्मचारियों, हितधारकों और ग्राहकों को प्रेरित और प्रोत्साहित कर सकता है। एक अद्वितीय आदर्श वाक्य संगठन को उसके प्रतिस्पर्धियों से अलग कर सकता है, इसकी विशिष्ट पहचान, मूल्यों और दृष्टिकोण को उजागर कर सकता है।

एक साझा आदर्श वाक्य संगठन के सदस्यों के बीच एकता और सामंजस्य की भावना को बढ़ावा देता है। आदर्श वाक्य निर्णय लेने के लिए एक मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में कार्य कर सकता है, जो संगठन के मूल्यों और उद्देश्यों के विरुद्ध कार्यों और पहलों के मूल्यांकन के लिए एक रूपरेखा प्रदान करती है। एक आदर्श वाक्य एक संक्षिप्त संदेश प्रदान करता है जिसे आंतरिक और बाह्य रूप से आसानी से संप्रेषित किया जा सकता है, जो विभिन्न संदर्भों में संगठन के संदेश को मजबूत करता है। एक अच्छी तरह से चुना गया आदर्श वाक्य संगठनात्मक संस्कृति को आकार देने, निष्पादन को आगे बढ़ाने और पहचान और उद्देश्य की एक मजबूत भावना को बढ़ावा देने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण हो सकता है।

संस्कृत आदर्श वाक्य

संस्कृत भारतीय परंपराओं में गहरे सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्व वाली एक प्राचीन भाषा है। आदर्श वाक्य के लिए संस्कृत का उपयोग किसी संगठन को उस समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से जोड़ सकता है, जिससे उसकी पहचान में गहराई और प्रामाणिकता जुड़ सकती है। संस्कृत को ज्ञान की भाषा माना जाता है। संस्कृत में एक आदर्श वाक्य गहरा अर्थ व्यक्त कर सकता है और आंतरिक सदस्यों और बाहरी हितधारकों दोनों को प्रेरित करते हुए श्रद्धा की भावना पैदा कर सकता है। संस्कृत वाक्यांशों में अक्सर सार्वभौमिक अर्थ होते हैं जो सांस्कृतिक और भाषाई सीमाओं से परे होते हैं। एक संस्कृत आदर्श वाक्य विविध पृष्ठभूमि के लोगों के साथ जुड़ सकता है, समावेशिता और एकता को बढ़ावा दे सकता है।

संस्कृत सदियों से कायम है, और इसके आदर्श वाक्य कालातीत ज्ञान रखते हैं। संस्कृत आदर्श वाक्य का चयन किसी संगठन में कालातीतता और स्थायी मूल्यों की भावना भर सकता है, जिससे यह पीढ़ियों के लिए प्रासंगिक हो सकता है। संस्कृत शब्द और वाक्यांश अक्सर प्राचीन धर्मग्रंथों और ग्रंथों में निहित प्रतीकात्मक अर्थ रखते हैं। इस तरह के प्रतीकवाद को आदर्श वाक्य में शामिल करने से गहराई और महत्व की परतें जुड़ सकती हैं, जिससे संगठन का संदेश समृद्ध हो सकता है। आज की वैश्वीकृत दुनिया में, संस्कृत आदर्श वाक्य किसी संगठन को उसके मूल्यों और आकांक्षाओं की विशिष्ट और यादगार अभिव्यक्ति

प्रदान करके अलग कर सकते हैं। वे संगठन को भीड़ भरे बाज़ार में अलग दिखने में मदद कर सकते हैं। संस्कृत आदर्श वाक्य किसी संगठन में परंपरा, ज्ञान, सार्वभौमिकता और आध्यात्मिकता की भावना लाते हैं।

कर्मयोगो विशिष्यते – हमारा आदर्श वाक्य

कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड के मूल्यों और सिद्धांतों का प्रतिनिधित्व करने वाला आदर्श वाक्य ''कर्मयोगो विशिष्यते'' है। यह भगवद गीता अध्याय 5 श्लोक 2 से लिया गया है।

संन्यासः कर्मयोगश्च निःश्रेयसकरावुभौ।
तयोस्तु कर्मसंन्यासात्कर्मयोगो विशिष्यते।।

कर्म संन्यास और कर्मयोग दोनों मार्ग परम लक्ष्य की ओर ले जाते हैं । लेकिन कर्मयोग कर्म संन्या से श्रेष्ठ है।

कर्म योग एक आध्यात्मिक अभ्यास है जो निस्वार्थ सेवा और परिणामों के प्रति लगाव के बिना अपने कर्तव्यों को निभाने पर केंद्रित है। पारंपरिक रूप से आध्यात्मिक गतिविधियों से जुड़े रहने के बावजूद, इसके सिद्धांतों को कार्यकारी भूमिकाओं और कॉर्पोरेट वातावरण में प्रभावी ढंग से लागू किया जा सकता है। अधिकारी अपनी टीम, कंपनी और हितधारकों के प्रति सेवा की मानसिकता अपना सकते हैं। केवल व्यक्तिगत सफलता या लाभ का लक्ष्य रखने के बजाय, दूसरों की भलाई और विकास को प्राथमिकता दें।

कर्म योग ईमानदारी, सत्यनिष्ठा और नैतिक आचरण पर ज़ोर देता है। अधिकारियों को अपना निर्णय लेने की प्रक्रियाओं और दूसरों के साथ बातचीत में उच्च नैतिक मानकों को कायम रखते हुए उदाहरण पेश करना चाहिए। ईमानदारी के साथ कार्य करने से विश्वास और सम्मान बढ़ता है, जो प्रभावी नेतृत्व के लिए आवश्यक है। अधिकारी दूसरों के योगदान को स्वीकार करके और सफलताओं का श्रेय साझा करके विनम्रता विकसित कर सकते हैं। अहंकार से प्रेरित इच्छाओं को त्यागकर, नेता अधिक सहयोगात्मक और सहायक कार्य वातावरण बनाते हैं।

कर्म योग का अभ्यास करने वाले अधिकारी अपने कार्यों की गुणवत्ता और प्रक्रिया पर ही ध्यान केंद्रित करते हैं। परिणाम के बारे में अत्यधिक चिंता किए बिना प्रत्येक कार्य में अपना सर्वश्रेष्ठ निष्पादन करने पर ध्यान केंद्रित करके, नेक काम के लिए अधिक टिकाऊ दृष्टिकोण को बढ़ावा देते हुए तनाव और चिंता को कम कर सकते हैं। कर्म योग किसी व्यक्ति के कर्मों के फल से वैराग्य का महत्व सिखाता है। अधिकारियों को सामरिक निर्णय लेना चाहिए और लगन से प्रयास करना चाहिए लेकिन सफलता या असफलता से अलग रहना चाहिए। कर्म योग निरंतर आत्म-सुधार और सीखने को प्रोत्साहित करता है।

कर्म योग के सिद्धांतों को अपनाकर, पेशेवर करुणा, अखंडता और निस्वार्थता में निहित नेतृत्व शैली विकसित कर सकते हैं, जो अंततः व्यवसाय और प्रबंधन के लिए अधिक पूर्ण और टिकाऊ दृष्टिकोण को बढ़ावा दे सकती है।

जय हिन्द।

कविता

एक लड़की थी

सिम्मी कुमारी
कार्यपालक प्रशिक्षार्थी

एक लड़की थी
चंचल सी चुलबुली सी
हंसती बोलती खिलखिलाती सी
पर उसका कोई न साथ देता
क्योंकि वह मस्त मगन और मौली थी।

उसको समझ न आता था
लोग क्या और कैसे हैं
उसको तो बस चलना था
अपने तौर तरीकों से।

जब लड़की हुई 11 वर्ष की
उसको रोका टोका गया
स्कूल जाने और पढ़ने से
पर लड़की को तो पढ़ना था।

जब लड़की हुई 17 वर्ष की
उसको बोला गया शादी करने को
क्योंकि लड़का कमाता था
लेकिन लड़की ने किया इंकार शादी से
क्योंकि लड़की को खुद कमाना था।

जब लड़की हो गई 21 वर्ष की
माँ ने बोला लड़की हो तो ऐसी हो
क्योंकि लड़की ने किया कमाना शुरू
और किया शुरुआत अपने घर को शिक्षित करना।

लाजवाब ज़ायका

अपिला
सहायक

मिलेट इडली

मिलेट इडली एक स्वस्थ और पौष्टिक नाश्ता है।

सामग्री:–

1. मिलेट (बाजरा)–1 कप
2. उड़द दाल–$^1/_2$ कप
3. चावल–$^1/_2$ कप
4. पोहा–$^1/_2$ कप
5. दही–$^1/_2$ कप
6. मेथी–$^1/_2$ छोटा चम्मच
7. हींग–$^1/_2$ छोटा चम्मच
8. नमक–आवश्यकतानुसार
9. तेल–थोड़ा सा

प्रक्रिया :– पहले मिलेट, उड़द दाल, चावल और पोहा को धोकर 3-4 घंटे के लिए पानी में भिगो दें। भीगने के बाद, पानी निकाल दें और सामग्री को पीसकर मुलायम पेस्ट बना लें। एक बड़े बाउल में पिसी हुई सामग्री, दही, मेथी, हींग और नमक मिलाकर अच्छे से मिला लें। बैटर को एक बाउल में 6-8 घंटे के लिए फर्म होने के लिए रखें। फर्म हुई बैटर को अच्छे से मिलाएं। इडली के प्लेट में थोड़ा तेल लगाएं और फिर बैटर डालें। इडली स्टीमर में रखें और 10-12 मिनट तक पकाएं। इडली को स्टीमर से निकालें और ठंडा होने दें। ठंडा होने के बाद इडली को निकालें और परोसिए।

इस तरह से आपकी मिलेट इडली तैयार है, जो आप नारियल चटनी या सांभार के साथ परोस सकते है।

लेख

श्रीजित बालन
अपिला के पति

पितृत्व:

प्रेम, ज़िम्मेदारी और विकास की यात्रा

01 जुलाई 2020, मेरे नए जीवन की शुरुआत थी....यह वह दिन था जब मेरे बेटे का जन्म हुआ और उस दिन मेरा भी एक पिता के रूप में जन्म हुआ..... पिता बनना प्रेम, ज़िम्मेदारी, समर्पण और धैर्य से भरी आजीवन प्रतिबद्धता की शुरुआत है। उठाया गया हर कदम हमारे बच्चों के जीवन में बढ़ने, सीखने और प्रभाव डालने का अवसर है।

जिस क्षण मैंने अपने बच्चे को अपनी बाहों में लिया, मैं खुशी से फूला न समा पाया और मैंने भगवान को मुझे यह प्यारा सा फरिश्ता देने के लिए धन्यवाद दिया। उसके साथ बिताए हर पल, उसके छोटे से चेहरे को देखते हुए, मैं यह सोचकर अपने दिल की धड़कन को रोक लेता था कि मैं इस नन्हें से बच्चे के साथ कैसे पेश आ पाऊंगा। मुझे पता था कि मुझे खुद को समय देना होगा और उसकी देखभाल करने के लिए मुझे बहुत धैर्य रखना होगा।

चूंकि मेरी नौकरी व्यवहार्य थी, इसलिए मैं अपने बच्चे की ज़िंदगी में होने वाले सभी बदलावों को देख सकता था, जैसे कि वह दिन जब उसने चलना, खुद खाना, साइकिल चलाना, स्कूल जाना आदि शुरू किया। मैंने तय किया कि मैं अपना सारा खाली समय उसके साथ बिताऊंगा। मैं उसके साथ खेलता हूं, उसे खाना खिलाता हूं, उसे नहलाता हूं, उसे कपड़े पहनाता हूं और यहां तक कि उसके साथ कहानियां सुनाने और चित्र बनाने में भी समय बिताता हूं।

यह सब इतनी जल्दी हुआ कि हमारे बीच एक बहुत गहरा रिश्ता बन गया। अब मैं उसे, मेरे जैसे ही काम करते हुए देखना चाहता हूं, मेरे बालों में कंघी करने से लेकर कपड़े पहनने तक। चार साल बीत चुके और मुझे विश्वास है कि मैं अपने बेटे को मेरे कदमों पर ही चलने को प्रेरित करूंगा और बड़ा होकर दूसरों को प्यार, दया और सम्मान देने वाला एक ज़िम्मेदार व्यक्ति बना पाऊंगा।

सभी पिताओं से निवेदन है कि पिता बनने की अपनी यात्रा को अंतर्निहित करें। प्यार, शक्ति और प्रेरणा के साथ आगे बढ़ें। जानिए कि पिता के रूप में आपकी भूमिका अमूल्य है।

लेख

हमारी वाटिका

बिनीष वर्गीस
कनिष्ठ तकनीकी सहायक (यांत्रिक)

फूल किसको पसंद नहीं, सबको पसंद है । फूल सौंदर्य का प्रतीक है। मेरे घर में मेरी पत्नी और बच्चों को भी पेड, पौधे और फूलों से बहुत लगाव है। फूल धरती को सौंदर्य प्रदान करने वाले है।

मेरा घर त्रिशूर जिला के चालकुडी के एलिंजीप्रा नामक एक गाँव में है। मुझे बचपन से ही पेड़, पौधे और फूल बहुत पसंद था। उसका मुख्य कारण मेरे पिता का पौधों से दिलचस्पी थी। वे कहीं भी जाए वृक्षों का तना या बीज के बिना नहीं लौटते थे। बहुत कम जगह होने के बावजूद भी पूरी जगह को पौधों से भरकर रखा था।

मेरे अपने घर में रहकर अभी दो साल हो गए । घर बनाते समय ही मैं ने फूलों के पौधे, फलों के पेड़ लगाना शुरू कर दिया था थोड़ी जगह होने के कारण रत्ती भर भी जगह बर्बाद किए बिना फर्श और बालकनी को पौधों से भर दिया गया।

मुझे लता वाले पौधे बहुत पसंद है । इसलिए मेरे पौधो में सबसे ज़्यादा लता वाले पौधे थे। इसमें पसंदीदा रेड जेड वाइन, गोल्डन कैसकेड, पेट्रिया, मणि मुल्ला, लेमन वाईन, कैट्स क्लॉ आदि है ।

इसमे प्रथम स्थान पर खडी ''फिलिपियन सुंदरी'' नाम से जानने वाली ''रेड जेड वाइन'' है। इसका फूल हार्नबिल पक्षी के चोंच की तरह है। यह ओणम के मौसम में खिलता है। इसे देखने से आसमान से आग की

चिंगारी के टपकने जैसी लगती है। पिछले साल ओणम में यह खिलने पर एक प्रसिद्ध अखबार में (मलयालम मनोरमा) इसकी खबर छपी थी । क्योंकि यह हमारे गाँव का पहला पुष्प था। बहुत सारे लोग इन फूलों को देखने के लिए आए थे।

''मणि मुल्ला'' नामक पौधा ''क्रिसमस लता'' के नाम से जाना जाता है । क्योंकि यह ठंड के मौसम में खिलता है। जिस कारण पूरा वातावरण महक उठता है। भौंरा, तितलियां, छोटे पक्षियों से यह जगह पूरी तरह से भर जाता था। यह दृश्य देखने में अति सुंदर है ।

''गोल्डन कैसकेड'' नामक पौधे के फूलों को देखने से कनि कोन्ना के फूलों जैसा लगता है । यह पौधा साल भर फूल देने वाला पौधा है। इसमें से शहद पीने के लिए सुबह से पक्षियों की कतार लगी रहती हैं । सुबह यह दृश्य देखने से हमे एक सकारात्मक ऊर्जा मिलती है ।

काम से वापस आने के बाद मेरा पहला काम पौधों को पेय जल देना है। क्योंकि अगर वे जगे रहेंगे तभी हमारी ज़िदगी भी जगी रहेगी। रेड जेड वाइन के अगले फूलों का मौसम, ओणम के मौसम के लिए हम इंतज़ार कर रहे हैं। सबको एक ऐश्वर्यपूर्ण ओणम की शुभकामनाएं देते हुए ..... ।

कविता

राधामणि ए.पी
राहुलदास एस की माँ

स्नेह गीत

एक मृदु स्पंदन होकर उठे
स्वप्न में नील प्रकाश के बरसते कण
मधुर संगीत के ध्वनि-ताल होकर
नाचोन्माद में पग के लिए भूखे रहे
दूर में नहीं पास ही मैं ने
अपने उन्माद हृदय की नील धाराऐं
इसमें तडपनेवाली वेदना को देखी
फूले-कुसुमों के स्वप्न तो
विषयमय भूमि के शह बनकर भर होते
नहीं इस यात्रा में कोई दूसरा सहारा हाथ-मिलाने,
कंधे जोडने, कोई नहीं आएगा
तृण का मूल्य भी कोई हमें नहीं देता
इस मूल्य हीन दुनिया में
फिर कैसे मिट्ठी की छाती में
हर्षोन्माद के बेसत फैलाऐं?
गा सकता कोई स्नेहगीत?
इस भरी दुनिया में नन्हे बच्चे से-बडे होकर,
यौवन पाकर, बुढ़ापे तक की
ज़िदगी की यात्रा चलते रहते है?
इसी सफर में स्नेह मंत्र की ध्वनियाँ
गा गाकर स्नेह निर्भर होकर
ज़िदगी का रसोन्माद की रुचि ले लें।

कविता

मैं एक नारी हूँ...

नीतू के
आउटफिट सहायक

वो आवाज़ जो हमेशा मेरे कानों में गूंजती....
वो नाम था ''ये है एक लड़की''।

जब मैंने अपनी माँ की कोख से जनम ली....
उस समय जो आवाज़ मुझे सुनाई दी...
वो था ''ये एक लड़की''है।

जब मैं अपनी माँ की कोख में थी,
मेरी माँ के हाव-भाव को देख,
सब ने कहा ''ये एक लड़की'' होगी।

जब मैं अपनी माँ की कोख में थी,
जब पैदा हुई,
जब मैं ने जाना प्रसव पीड़ा है क्या,
जब ''ये एक लड़की है'' ये खबर मिले,
एक प्यार जिसे मैंने पाया...
वो था माँ का प्यार.....
आज भी मैं उस प्यार की मिठास को सीने से लगाए जी रही हूँ।

माँ जो ''मै इक नारी'' को सीने से लगाया,
माँ जिन्होंने मुझे दिया बेपनाह प्यार।
वो लोग जिन्होंने मुझे एक ''नारी'' के रूप में ठुकराया,
आज अगर वो मुझे साथ लेकर चल रहे हो,
तो ये मेरी माँ के प्यार का नतीजा है।

माँ जो ''मै इक नारी'' को सीने से लगाया,
माँ जिन्होंने मुझे बेपनाह प्यार दिया।
आज मैं गर्व से कहती हूँ...
हाँ मैं एक नारी हूँ....

लेख

श्रीजित सोमन
आउटफिट सहायक

हँसी

हँसी भगवान द्वारा हमें दी गई एक देन है। हम इंसान अलग-अलग तरीकों से हंसते हैं। कुछ मुस्कुराहट के पीछे दर्द भरे चेहरे होते हैं। उस मुस्कान में वे कई दर्द छिपाते हैं। भले ही वो अपनी आँखों में आंसू क्यों न लाते हों, मुस्कुराहट मिटती नहीं।

और भी कई मुस्कराहटें होती हैं। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो कई मुसीबतें झेलने पर भी अपना मुस्कुराता हुआ चेहरा नहीं बदलते। कुछ लोगों के धोखा देने के पीछे भी वही मुस्कुराता हुआ चेहरा होता है। हंसी को हथियार बनाकर चलते हैं। समाज के सामने तो खूब हंसते हैं, लेकिन जब चार लोग एक साथ खड़े हो जांए तो मुस्कुराहट नकली बन जाती है। हँसी कई अनसुलझे सवालों का जवाब बन जाती है।

आज इस दुनिया में ईमानदारी से मुस्कुराते चेहरे दुर्लभ हैं। जो लोग सब कुछ भूलकर हंस सकते हैं वे इस दुनिया में सबसे बड़े भाग्यशाली हैं।

लाजवाब ज़ायका

होममेड बटर कुकीज़

मोली वी. जी.
ग्रीष्मा ए आर की माँ

सामग्री:-

1. मैदा - 1 कप
2. बटर (सॉल्टेड) - $^1/_2$ कप
3. चीनी (पाउडर) - $^1/_4$ कप

बनाने की विधि:-

एक बाउल मे बटर और चीनी को लें। इसे व्हिस्कर की मदद से कलर मे लाइट और क्रीमी होने (लगभग 10 मिनट) तक फेंट लें। फिर थोड़ा-थोड़ा करके मैदा डालते जाए और स्पून या स्पैचुला की मदद से हल्के हाथ से मिक्स करते जाए। (इसे स्पैचुला चलाते हुए मिक्स करना तेज़ हाथ से गूंथना नही है)

मिश्रण से छोटे छोटे कुकीज बना ले। (पेड़े की तरह) कुकीज पर फोर्क की मदद से डिजाइन बना ले।

अगर आप कड़ाई मे बना रहे है तो कड़ाई मे एक स्टैण्ड रख दे फिर कड़ाई को ढक्कर 10 मिनट के लिए प्रीहीट कर ले। 10 मिनट बाद कुकीज़ की प्लेट स्टैण्ड पर रख दे और ढक्कर 15-20 मिनट के लिए मीडियम आंच पर पकने दे । अगर आप ऑवन में बनाए तो ऑवन को 160 डिग्री सेलिष्यस पर 10 मिनट प्रीहीट कर ले कुकीज़ रखकर 15 मिनट पकाएं।

जब पूरी तरह से ठण्डा हो जाए तब एयरटाइट कंटेनर मे स्टोर करे और जब चाहे खाएं।

लेख

मेरे पिता...

ग्रीष्मा ए आर
आउटफिट सहायक

मेरे बचपन ने मुझे बहुत अच्छी यादें दी हैं।

आज भी इसकी खूबसूरती मन को रोमांचित कर देती है। इसमें सबसे ज्यादा उत्साह गर्मियों की छुट्टियों के मौसम को लेकर होता था। जब छुट्टी का समय होता था, तो बच्चे आँगन में खेलते और हँसते थे। मेरे पिता मुझे हमेशा आश्चर्यचकित करते थे। पापा को बच्चों के साथ खेलने के लिए अब कोई समस्या नहीं थी। हमें कभी भी लड़की कह कर अलग नहीं किया गया। गर्मियों की छुट्टियों में जब हम पापा के साथ खेलते थे तो माँ के जलन से भरा चेहरा देखना बहुत पसंद था। हम गर्मी की छुट्टियों में हमेशा कोडाइकनाल जाते थे। वहां की शीतलता और पहाड़ की चोटी पर बादल का मजा ही क्या है? मैं कोडाइकनाल की सड़को पर ऐसे घूमती थी जैसे मैं एक बच्ची हूं जो अपने पापा का हाथ पकड़कर किसी अद्भत दुनिया में प्रवेश कर चुकी हूं, और मेरे पापा की सुनाई कहानियां भी शामिल थी। छुट्टियों के बाद जब मैं स्कूल पहुंचती थी तो वहां भी दिलचस्प अनुभव होता था। मेरे पापा मुझे नया बैग, छाता और वर्दी के साथ निकलते हुए देखते रहते। मेरा हर विकास मेरे पापा के पसीने का ही परिणाम है।

ऐसे ही एक छुट्टी पर मेरे पापा हमें छोड़कर चले गए। उनकी मौत ने मुझे तोड़ दिया था। पापा के साथ बिताए उन लम्हों को सीने से लगाए आज भी जी रही हूं। फिर जिंदगी के इस सफर में एक हमसफर मिला। उनको मेरा हाथ सौंपने के लिए मेरे पापा साथ नहीं थे। आज जब मै अपने बच्चों को देखती हूं तो मुझे मेरे पापा याद आते हैं। मेरे सीने में ये दर्द हमेशा रहता है कि मेरे बच्चों को घुमाने के लिए, कहानी सुनाने के लिए उनके नाना साथ नहीं है। मैं आशा करती हूं कि अगले जन्म में भी मैं अपने पापा की परी बनकर जन्म लूं।

पिता की मौजूदगी सूरज की तरह होती है
सूरज गर्म ज़रूर होता है लेकिन अगर न हो तो अंधेरा छा जाता है

लेख

चेंडा एक केरलीय वाद्ययंत्र

हरिकृष्णन आर
वरिष्ठ मेकानिक इंस्ट्रुमेंट

केरल के मंदिरों में हर दिन चेंडा की ध्वनि सुनाई देती है, चेंडा की कहानी कितनी पुरानी है इसका कोई स्पष्ट सबूत नहीं हैं। लेकिन केरल में ही चेंडा का जन्म हुआ है, ऐसा हम निश्चित रूप से कह सकते हैं। त्योंहारों, समारोंहों और उद्घाटनों जैसे कार्यक्रमों में चेंडा की उपस्थिति निश्चित हैं। केरल के अलावा तमिलनाडु और कर्नाटक के बहुत कम प्रदेशों में भी हमारा चेंडा दिखाई देता हैं ।

चेंडा को बनाने व तैयार करने के लिए वरिक्का कटहल के मूल को काटकर बनाई गई एक पाईप जैसी ख़ूंटी पर बनाया जाता है, और ताड़ या बांस के बने छल्लों पर गाय के थन से बने घेरे को रस्सी से एक साथ बांधा जाता है और कसकर खींचा जाता है। इसमे चार मीटर लम्बाई का कठोर सूती कपडा, कंधे पर बांधने लायक सिलाया जाता हैं । लेकिन यह सब उतना आसान काम नहीं हैं। चेंडा के शीर्ष पर स्थित वृत को बायां सिर कहा जाता हैं और नीचे के वृत को दायां सिर कहा जाता है । बांए सिर के लिए एक चमडे का और दाहिने सिर के लिए चमडे की सात परतों का उपयोग किया जाता है। मंदिर की आवश्यकताओं के लिए दाहिना सिर बजाया जाता है। चेंडा के बायें सिर के मध्य भाग में ''ढिम'' ध्वनि और किनारों ''ण'' स्वर है । दाहिने सिर में ''धिम'' ध्वनि है। चेंडा को बजाने के लिए पदीमुखम, इमली, मंतारम, बांस आदि से बनी बंद सिरों वाली छडियों का उपयोग किया जाता है।

बहुत धीमी और बिजली जैसी कडक आवाज़ चेंडा से निकाली जा सकती है । चेंडा को एक असुर वाद्य माना जाता है। एक कहावत है कि सभी वाद्ययंत्र चेंडा से नीचे है ।

चेंडा का उपयोग कई धार्मिक कलाओं जैसे

कथकली, गरुडा मुदियाते, थेय्यम आदि के लिए किया जाता है । चेंडामेलों में पंचारी मेला और पांडी मेला प्रसिद्ध हैं लेकिन इनके अलावा अन्य मेले भी है । चेम्पडा, ध्रुवम, अंतता, अंचतांता, चम्पा आदि उनमें से कुछ है । हालांकि उतना पुराना न होने के बावजूद श्रिंगारी मेलों में चेंडा मुख्य भाग निभाता है ।

पद्मश्री मट्टनूर शंकरन कुट्टी मारार, पद्मश्री पेरुवनम कुट्टन मारार, श्री किष्कूट्ट अनियन मारार, श्री चेरानल्लूर शंकरन कुट्टन मारार आदि अब तक के मुख्य व्यक्तिगण हैं । श्री पल्लावुर अप्पुमारार, श्री पल्लावुर कुन्जी कुट्टन मारार, श्री केलाथ अरविंदाक्ष मारार और अन्य गुज़रे हुए व्यक्ति भी प्रमुख थे ।

त्रिशूरपूरम का इलंजीत्तरा मेलम विश्व प्रसिद्ध है। वहाँ पांडी मेलम बजाया जाता है। हर किसी को आश्चर्यचकित कर देने वाला पांडी मेलम, जिसमें चेंडा, वलम तला, इलत्तालम, कोम्ब और कुरुम्कुषल जैसे वाद्ययंत्र शामिल हैं।

केरल के कई जगहों में अनेक कलरियों में चेंडामेला का अभ्यास किया जाता है। केरल कलामंडलम, आरएलवी कॉलेज त्रिपुनित्तुरा और क्षेत्र कलापीठम वैकम में चेंडा में डिग्री और डिप्लोमा पाठ्यक्रम संचालित हो रहा हैं। जो लोग चेंडा का अभ्यास करते हैं उन्हें कोटि साधकम और तायंबका के बाद सबसे पहले पत्थर या लकडी की छडियों पर तरिकिडा जैसे पाठ पढाया जाता है।

1999 से मैं चेंडा का अभ्यास कर रहा हूँ, मेलम कला के कई महान लोगों के साथ मंच में प्रदर्शन करने का मौका भी मिला है। चेंडा और कोल निर्माण का भी हिस्सा बनने का अवसर मिला । मैंने अपना ज्ञान यहाँ साझा किया है।

बोलचाल की हिंदी

स्वाद/Taste

नमकीन	Salty
कड़वा	Bitter
खट्टा	Sour
मीठा	Sweet
तीखा	Spicy
चटपटा	Peppery

फलों का नाम/Name Of Fruits

अनानास	Pineapple
अमरूद	Guava
जामुन	Black Berry, Jamun
नाशपाती	Pear, Sabarjili
चीकू	Sapota
कृष्णा फल	Passion Fruit
सीताफल	Custard Apple
कमरख	Star Fruit
शहतूत	Mulberry
अंजीर	Fig

सब्जियों का नाम/Name Of Vegetables

पत्ता गोभी	Cabbage
फूल गोभी	Cauliflower
हरी गोभी	Broccoli
मेथी	Fenugreek
कुकुरमुत्ता	Mushroom
सहजन	Drumstick
जिमिकंद, रतालु	Yam
कसावा	Tapioca
कद्दू	Pumpkin
चुकंदर	Beetroot

सामान्य बातें/General Matters

हमेशा सकारात्मक सोचो	Always think positive
वक्त बर्बाद मत करो	Don't Waste time
कृपया मेरी सहायता कीजिए	Please help me
सहायता केलिए धन्यवाद	Thanks for the help
काम के समय सावधान रहो	Be careful while working
जल्दी से तैयार हो जाओ	Get ready fast.
तेज़ी से गाडी मत चलाओ	Don't drive fast
अपना परिचय दीजिए	Introduce yourself
मैं तुम्हें कल फोन करूंगा	I will call you tomorrow
ठीक से काम नहीं कर रहा है	It is not working properly

चित्र रचनाएँ

कृष्णा सी वी
प्रविता गोपाल की सुपुत्री

मिखा आर तेरसा
रिनॉय जॉन की सुपुत्री

वैष्णवी रमेश
रमेश पी एस
की सुपुत्री

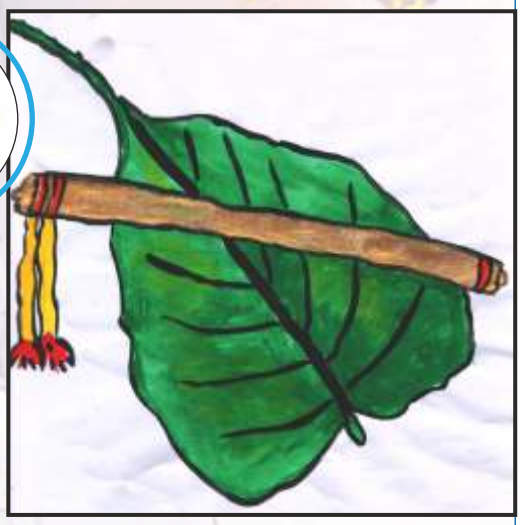

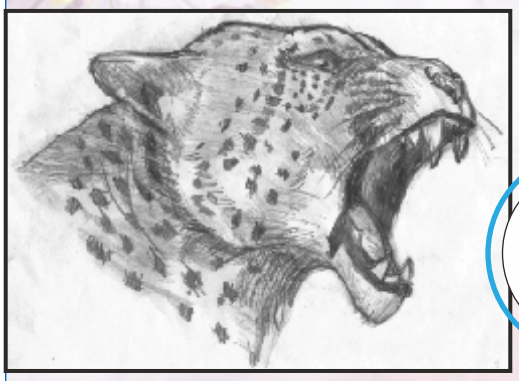

गौतम कृष्णा एम
विनिता के जी का सुपुत्र

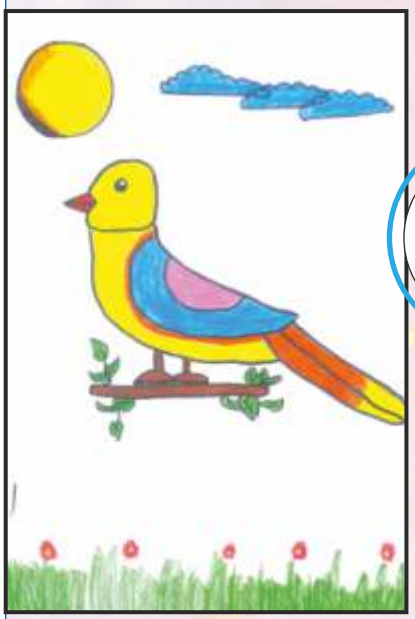

निव्या के बी
सरिता जी की सुपुत्री

इष्या विनोद
कीर्ति आर की सुपुत्री

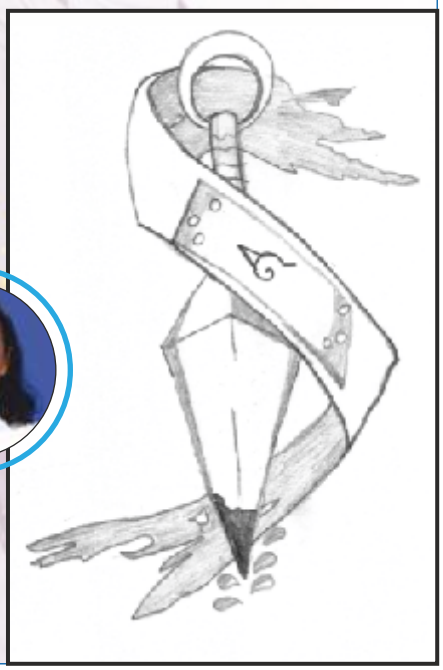

चित्र रचनाएँ

अर्दव के श्रीधरन
उण्णिकृष्णन के एस
का सुपुत्र

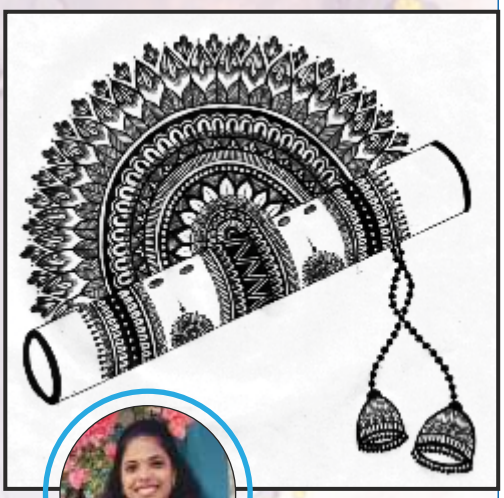

कार्तिक ए पी
बिंदु पी वी का सुपुत्र

एश्वर्या कृष्णन
उच्च प्रशिक्षार्थी

अलकनदा ए एस
नीतू पी के की सुपुत्री

एलिस सिमेती
एमिल्डा डी सिल्वा
की सुपुत्री

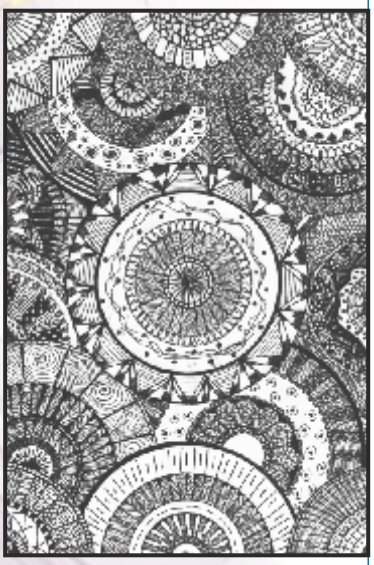

अदिती के श्रीधरन
उण्णिकृष्णन के एस
की सुपुत्री

अमिता विजित
हष्ना पी एम
की सुपुत्री

चित्र रचनाएँ

अनफिया सेरीना
अलफोनसा संगीता की सुपुत्री

अर्जव के श्रीधरन
उण्णिकृष्णन के एस का सुपुत्र

अलन माधव यू एन
नीतू के का सुपुत्र

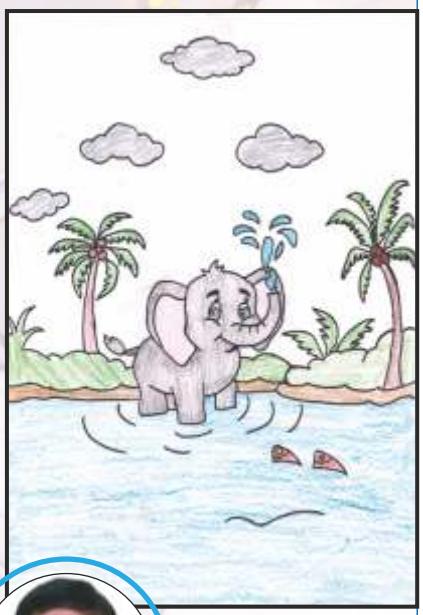

कृष्णप्रिया ए
प्रिया ए आर की सुपुत्री

इथान इम्मानुवल
जोसेफ सोल का सुपुत्र

अषिका सुजीत
सुजीत एन पी की सुपुत्री

स्वतंत्रता दिवस समारोह

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

फोटो साभार:
कन्नान पी ए पद्मनाभन, सीएसएल

sequenceindia.com